मिना

मिना

अथवा

प्रेम और प्रतिष्ठा

[प्रसिद्ध जर्मन नाटककार लेसिङ्ग के 'मिना फन बार्नहाल्म' अथवा 'सोल्डाटेनग्ल्युक' का हिंदी अनुवाद]

अनुवादक

डाक्टर मङ्गलदेव शास्त्री,

एम० ए०, डी० फ़िल० (ऑक्सन), रजिस्ट्रार, गवर्नमेंट संस्कृत कालेज इग्ज़ामिनेशन्स, यू० पी०, बनारस तथा आफ़िशियेटिङ्ग प्रिंसिपल, गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, बनारस

इलाहाबाद

हिंदुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०

१९३७

प्रकाशक :
हिंदुस्तानी एकेडेमी संयुक्तप्रांत
इलाहाबाद

पहला संस्करण
मूल्य १) २

मुद्रक :
बाबू गुरुप्रसाद मैनेजर,
कायस्थ पाठशाला प्रेस, इलाहाबाद

प्राक्कथन

चिरकाल से ही मेरा विचार रहा है कि यथासंभव सुप्रसिद्ध विदेशीय साहित्य के अनुवाद के द्वारा, तथा मौलिक ग्रंथों के द्वारा भी, अपने हिंदी-साहित्य की श्रीसमृद्धि को बढ़ाया जावे। प्रसिद्ध जर्मन नाटककार जी० ए० लेसिंग के "मिना फ़न बार्नह्यल्म" अथवा "सोल्डाटेन ग्ल्युक" नामक नाटक का यह अनुवाद भी इसी अंत:प्रेरणा का एक परिणाम है।

१९२३ ई० में पहली बार मैंने इस नाटक को पढ़ा। इस में प्रेम और प्रतिष्ठा के भावों के आघात और प्रतिघात के अत्यंत सुंदर चित्रण को देख कर उसी समय मैंने इस को हिंदी में अनुवाद करने का निश्चय कर लिया था। परंतु अनेक कारणों से यह विचार कई वर्षों तक विचारकोटि में ही रहा। १९२७ में किसी प्रकार यह विचार कार्यरूप में परिणत हो सका। १९३० ई० में हिंदुस्तानी एकेडेमी ने इस को प्रकाशित करना स्वीकार किया। तद-नुसार आज यह एकेडेमी के योग्य मंत्री मित्रवर डा० ताराचंद जी की देख-रेख में प्रकाशित हो कर जनता के सन्मुख जा रहा है।

नाटक के संबंध में जो कुछ वक्तव्य था वह भूमिका में

विस्तार से कर दिया गया है। अनुवाद की भाषा यथासंभव सरल हिंदी या हिंदुस्तानी रक्खी गई है।

पात्रों के नाम यथासंभव मूल के अनुरूप ही हैं, जिस से पढ़ने वालों को यह भ्रम न हो कि वे सभ्यता तथा देश के दृश्यों को देख या पढ़ रहे हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि अनुवाद सब स्थलों में शब्दतः न हो कर कहीं-कहीं भावानुवाद ही है।

मंगलदेव शास्त्री

बनारस
२९—९—३७

नाटक के पात्र

मेजर टेल्हाइम— मिना का प्रेमी

कुमारी मिना

काउन्ट ब्रुखसाल—मिना के चाचा

फ्रांसिस्का—मिना की दासी

युष्ट—टेल्हाइम का नौकर

पाउलवेर्नर—टेल्हाइम का पुराना सार्जंट

होटल का मैनेजर

एक शोकातुर महिला

एक अर्दली

मिना का नौकर

कप्तान मार्लिनेअर

भूमिका

लेसिंग की जीवनी और उस का काम

पूर्ववर्ती समय का दिग्दर्शन

लेसिंग अपने समय का सबसे बड़ा साहित्यिक ही नहीं, किन्तु आधुनिक जर्मन साहित्य का प्रवर्तक भी समझा जाता है। उसकी जीवनी और काम के महत्व को ठीक-ठीक समझने के लिये उसके पूर्ववर्ती जर्मन साहित्य की दशा का कुछ वर्णन करना आवश्यक है।

१६४८ ई० से, जब कि प्रसिद्ध तीस-साला युद्ध के कारण जर्मनी नष्ट-भ्रष्ट हो चुका था, सतरहवीं सदी के अन्त तक कोई महत्त्व का साहित्यिक ग्रन्थ जर्मन भाषा में नहीं लिखा गया। लोगाउ (Logau), गेर्हार्ड्ट (Gerhardt) आदि दो तीन कवियों की कुछ कविताओं को छोड़कर इस समय की शायद कोई विशिष्ट साहित्यिक रचना अवशिष्ट नहीं है। अठारहवीं सदी के पूर्वार्ध में भी जर्मन साहित्य ने कोई उन्नति नहीं दिखलाई। परन्तु अठारहवीं सदी के मध्य भाग के कुछ पहले दो परस्पर विरुद्ध साहित्यिक मतों में एक विवाद छिड़ा जिससे जर्मन साहित्य के इतिहास में नये जीवन का संचार हुआ।

पहले मत का नेता और प्रतिपादक गाटश्यड (Gottsehed) था जो लाइब्ज़िक विश्वविद्यालय में दर्शन का अध्यापक था और साहित्यिक जगत् में बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। उसके मत के अनुसार कविता एक ऐसी कला है जो व्याकरण या तर्क की तरह नियमों द्वारा सीखी जा सकती है। इस के विरुद्ध ज़ूरिच विश्वविद्यालय के अध्यापक बोडमेर (Bodmer) और ब्राइटिंगेर (Breitinger) कविता के विषय में बहुत ऊँचा विचार रखते थे। इन के अनुसार कविता कोई ऐसी कला नहीं है जो व्याकरणादि की तरह नियमों से बाँधी जा सके।

इस विवाद में द्वितीय मत की ही विजय हुई। सैक्सनी के अनेकानेक लेखक और कवि इसी मत के अनुयायी बन गये। यहाँ तक कि कुछ उत्साही युवकों ने अपने विचारों के प्रचारार्थ एक समिति की स्थापना कर ली और "ब्रेमेर बाइट्रेग" (Bremer Beitrage) नाम की एक पत्रिका भी निकालनी शुरू कर दी। इस पत्रिका के प्रभाव से अनेकानेक अच्छे-अच्छे साहित्यिक लेख और ग्रन्थ—कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक आदि—निकले। ये ग्रन्थ भाव, भाषा और प्रतिभा की दृष्टि से, मनोरञ्जक और प्रभावोत्पादक होते हुए भी, ऊँचे दर्जे के नहीं कहे जा सकते।

इस समय के साहित्य में वास्तव में महत्त्व रखने वाला क्लोपस्टाक (Klopstock) का प्रथम काव्य-ग्रंथ "मेसिआज़" Messias) था, जिस के प्रारम्भिक तीन सर्ग, उक्त पत्रिका में ही, १७४८

में प्रकाशित हुए। इस का जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसी समय का दूसरा प्रसिद्ध लेखक वीलाँड (Wieland) था।

जर्मन साहित्य की ऐसी हीन दशा के समय लेसिंग ने प्रथम बार जर्मन साहित्यिक जगत् में प्रवेश किया। वह अवस्था में क्लोपस्टाक से छोटा था, परंतु वीलाँड से बड़ा था। इन तीनों लेखकों की पहली रचनाएँ १७४८ में एक ही समय प्रकाशित हुईं। रचनात्मक शक्ति में शायद लेसिंग इन दोनों से कम था। परंतु बुद्धि की प्रबलता, दृष्टि की प्रखरता, और उद्देश्य की विस्पष्टता में वह उन से कहीं अधिक बड़ा था। उस के काम को जर्मन साहित्य की स्थायी संपत्ति समझना चाहिए।

अपने साहित्यिक जीवन के प्रारंभ से ही लेसिंग ने अपने को उपर्युक्त दोनों मतों से पृथक् रक्खा। अपने स्वतंत्र मार्ग को निश्चित कर वह उस पर चलता रहा, और समय-समय पर दोनों मतों के दोषों को प्रकट करने की चेष्टा करता रहा।

जन्म और प्रारंभिक शिक्षा

गाटहोल्ड एफ्राइम लेसिंग (Gotthold Ephraim Lessing) का जन्म जर्मनी में सैक्सनी प्रदेश के कामेंट्स (Kamenz) नामक स्थान में १७२९ ई० को २२ जनवरी को हुआ था। उस का पिता सेंट मैरी के चर्च में मुख्य पादरी था। इस लिए स्वाभाविक तौर पर लेसिंग के बाल्य-काल का प्रारंभ विद्या और सदाचार के वायुमंडल में व्यतीत हुआ। इस के बाद वह माइस्ट्ज़न

(Meiszen) नामक स्थान में सेंट ऐफ्रा के स्कूल में भेजा गया। यहाँ भी उस की शिक्षा विद्या और धर्म के प्रभाव में ही हुई।

विश्वविद्यालय में शिक्षा

स्कूल की शिक्षा समाप्त कर के उसने लाइब्ज़िक नगर के विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र का विषय लेकर प्रवेश किया। उस का मन स्वभाव से चंचल और अशांत था। इस कारण वह नियतरूप से पढ़ने के एक विषय का न ले कर भिन्न-भिन्न विषयों को बदलता रहा। उसने धर्मशास्त्र के विषय को छोड़कर वैद्यकशास्त्र, और वैद्यक को छोड़ कर दर्शनशास्त्र का विषय ले लिया।

परंतु उस की स्वाभाविक प्रवृत्ति बिल्कुल साहित्य की ओर थी। बहुत जल्द उस की प्रतिभा ने, उस के विश्वविद्यालय में रहते ही, साहित्य विषय में अपना चमत्कार दिखाना शुरू कर दिया। वह पद्यरचना करने लगा। उस ने 'सच्ची मित्रता' (Die wahre Freundschaft) नाम का एक छोटा सा नाटक भी रच डाला। साथ ही उस ने यह भी अनुभव किया कि मनुष्य के लिए केवल किताबी ज्ञान पर्याप्त नहीं है। किताबी कीड़ों से उसे डर सा लगता था। इस कारण उसने सांसारिक अनुभव की भी आवश्यकता समझी। वह साहित्यिक विद्वानों और नाट्य-कला-विदों की संगति में रहने लगा। १७४८ ई० में उस का बनाया हुआ "नवयुवक विद्वान" (Der junge Gelehrte) नाम

का नाटक खेला गया। इसमें आत्मश्लाघी पढ़े-लिखों के दंभ की मज़ेदार शब्दों में हँसी उड़ाई गई थी।

इस प्रकार अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार लेसिंग ने नाट्य से अपना संबंध स्थापित कर लिया। उस के पिता को जो लूथर का अनुयायी था यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि उस का पुत्र नाट्य से संबंध रक्खे। उसने गम्भीरता के साथ एक पत्र लेसिंग को फटकारते हुए इस मार्ग से हटने के लिए लिखा। पिता के दूसरे पत्र में उस को लिखा गया कि वह अपने घर वापिस आ जावे। वह घर लौट आया। पर माता-पिता के समझाने-बुझाने का उस पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। वे उस को अपने जीवन के निश्चित पथ से न हटा सके। इस के अनन्तर वह फिर लाइब्ज़िक लौट आया, और कुछ दिनों वहाँ तथा विटनबर्ग में रहा।

बर्लिन में निवास और साहित्यिक जीवन का प्रारंभ

१७४९ ई० में उस ने बर्लिन में नियतरूप से एक ग्रन्थकार या लेखक का जीवन प्रा ंभ कर दिया। बीच में एक साल को छोड़ कर, जिस को उसने विटनबर्ग में गुज़ारा, वह अगले सात साल तक बर्लिन में रहता रहा, और बड़ी मुस्तैदी और उत्साह के साथ साहित्यिक काम करता रहा। अपने विश्वविद्यालय के साथी विद्वान् मित्र मिलिउस (Mylius) के साथ उस ने "नाट्य के इतिहास और सुधार के विषय में निबन्धावली" नाम की

त्रैमासिक पत्रिका निकाली। इस में नाटकीय साहित्य का इतिहास, सामयिक साहित्य की समालोचना, और विदेशीय उत्कृष्ट ग्रन्थों के अनुवाद निकाले जाते थे। दोनों संपादकों में मतभेद हो जाने से यह पत्रिका जल्द ही बंद हो गई। परंतु लेसिंग ने १७५४ में ऊपर के ही उद्देश्यों से "नाटकीय ग्रंथावली" नाम की दूसरी पत्रिका निकाली। इसी बीच में "वोसिश जाइटुंग" (Vossische Zeitung) नामक पत्रिका के साहित्यिक परिशिष्ट के संपादन का भार भी उस ने अपने ऊपर ले लिया था।

इस प्रकार लेसिंग की जीविका का निर्वाह केवल उसकी लेखनी से होता था। भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं में समालोचनाओं, गल्पों और गीतों को लिखकर, या इंग्लिश, फ्रेंच और स्पैनिश पुस्तकों के अनुवादों के द्वारा ही थोड़ा बहुत कमाकर वह अपनी जीविका करता था। यह स्पष्ट है कि इस प्रकार घोर परिश्रम से जीवन-यात्रा का निर्वाह करना बहुत मुश्किल है। उन दिनों तो ख़ासकर यह मुश्किल था। पर यह घोर परिश्रम और अर्थसंकट उसके उत्साह को कम न कर सके। सब दिक़्क़तों का सामना करते हुए वह अपने निश्चित जीवन पथ पर अग्रसर होता गया। इस साहित्यिक जीवन को प्रारम्भ करते समय उसकी अवस्था केवल बीस बरस की थी। तो भी उसकी समालोचनाओं में योग्यता और निर्भयता कूट-कूट कर भरी थी। उसकी लेख-शैली की ओजस्विता और विस्पष्टता ने पुराने-पुराने लेखकों को सतर्क कर दिया।

इन्हीं दिनों लेसिंग कुछ नाटकों की रूपरेखा तैयार करने में और उन्हें पूर्णरूप देने में भी परिश्रम करता रहा था। इस समय के पूरे लिखे हुए उसके नाटकों में से कुछ के नाम हम नीचे देते हैं।

(१) 'यहूदी' (Die juden)। इस नाटक में यहूदियों के विरुद्ध जो लोकमत था उसे दूर करने का प्रयत्न किया है।

(२) 'स्वतन्त्र-विचारक' (Der Freigeist)। इसमें एक स्वतन्त्र विचार का मनुष्य, जिसे धर्म और धर्म-पुरोहितों से बड़ी घृणा थी, एक ईसाई पादरी की दया और त्याग के भावों को देखकर अपनी भूल स्वीकार करता है।

इसके अतिरिक्त, कुछ ऐसे भी नाटक थे जो रूपरेखा की अवस्था में ही रहे और कभी पूर्णता को प्राप्त नहीं हुए।

लाइब्ज़िक की तरह बर्लिन में भी लेसिंग प्रसिद्ध साहित्यिकों की संगति में रहता था। इस प्रकार वह प्रसिद्ध फ्राँसीसी साहित्यिक वाल्टेयर (Voltaire) से, जिसका उन दिनों राज-दरबार में बड़ा सम्मान था, परिचित हो गया। उसके आश्रय में लेसिंग ने अनुवाद आदि का काम भी किया। पर दोनों में कुछ ही दिनों में बिगाड़ हो गया। जैसा कि आगे चलकर स्पष्ट हो जायगा, इस विरोध का लेसिंग के जीवन पर बड़ा भयानक प्रभाव पड़ा।

विटनबर्ग में शान्ति और स्वाध्याय का जीवन

बर्लिन में कुछ ही समय रहने के बाद उसका मन वहाँ से उकता गया। उसने चाहा कि संपादकत्व आदि के काम से अवकाश लेकर कुछ दिनों शान्ति और स्वाध्याय का जीवन व्यतीत करे। इस विचार से वह विटनबर्ग में अपने भाई के पास आ गया, और सन् १७५१ को वहीं शान्ति के साथ स्वाध्याय में व्यतीत किया। यहाँ वह प्राचीन उत्कृष्ट रोमन आदि साहित्य को पढ़ता रहा। साथ ही उसने कुछ समालोचनात्मक लेख भी निकाले। इन लेखों के प्रभाव से वह उस समय का सब से अधिक प्रसिद्ध और तीव्र समालोचक समझा जाने लगा।

बर्लिन में लौटना

१७५२ में वह बर्लिन लौट आया और "वोसिश ज़ाइटुंग' नामक पत्रिका के संबंध में उसने अपना काम पुनः शुरू कर दिया। १७५३-१७५५ ई० में उसकी रचनाओं का संग्रह छः भागों में प्रकाशित हुआ। इससे स्पष्ट है कि इस समय तक उसको काफ़ी ख्याति मिल चुकी थी और वह विभिन्न विषयों पर अनेक ग्रंथ और लेख लिख चुका था। इस संग्रह में जो नाटक प्रकाशित हुए वे उसके अपने समसामयिक गलेट (Gellert), एलिआस श्लेगल (Elias Schlegel) आदि साहित्यिक मित्रों की रचनाओं से कथा की तथा नाटकीय दृष्टि से विशिष्ट थे। तो भी उस के सुखांत नाटकों में तात्कालिक नाट्य-

साहित्य की साधारण अवस्थिति से कोई अनोखी विशेषता हम नहीं देखते। उन की शैली फ्रेंच नाटकों के ढंग की है; और उनकी गिनती साधारण साहित्य में ही की जा सकती है।

लेसिंग का प्रथम दुःखान्त नाटक

परंतु इसी संग्रह में उसका प्रथम दुःखांत नाटक "कुमारी सैरा सैम्पसन" (Miss Sara Sampson) भी प्रकाशित हुआ था। इसकी कथा इंग्लिश साहित्य से ली गई थी। इसमें ग्रंथकार ने, दूसरे नाटकों से कहीं अधिक, अपनी प्रतिभा की असाधारणता का परिचय दिया है। अपनी नवीनता और ओजस्विता के कारण इस दुःखांत नाटक ने उस समय लोगों पर बड़ा प्रभाव डाला। एक विद्वान् ने इसके प्रथम अभिनय के बारे में लिखा है "लोग चार घंटे तक मूर्तिवत् निश्चल बैठे रहे और अश्रुधाराओं में द्रवीभूत हो गये"। महाकवि गेठे (Goethe) ने लिखा है "उस समय के मध्यम श्रेणी के लोगों में स्वाभिमान की मात्रा के बढ़ाने में इस नाटक ने बहुत काम किया था"।

इस नाटक का एक दूसरा महत्त्व भी है। अभी तक जर्मन साहित्य की प्रगति का आदर्श फ्रेंच साहित्य रहता आया था। लेसिंग अपने साहित्यिक जीवन के प्रारम्भ से ही इस बात पर ज़ोर देता रहा था कि जर्मन साहित्य की उन्नति का आदर्श फ्रेंच साहित्य नहीं किंतु इंग्लिश साहित्य होना चाहिये। यह नाटक वस्तुतः इंग्लिश साहित्य के ही आधार पर लिखा गया था। इस

के पीछे इस प्रवृत्ति का अनुसरण जर्मन साहित्य में बढ़ता ही गया।

क्लाइस्ट के साथ मित्रता

लेसिंग यद्यपि सैक्सनी का रहने वाला था, तो भी उसको प्रुशिया से प्रेम था। प्रसिद्ध सात-साला युद्ध ने, जिसको सफलता के साथ प्रुशियन लोगों ने लड़ा था, उसके हृदय पर बड़ा प्रभाव डाला था। प्रुशियन नेताओं ने इस युद्ध में जो अद्वितीय वीरता और योग्यता दिखलाई थी, उस से वह उन लोगों को बहुत प्यार करने लगा था। उसके मन में प्रुशिया के महाराज फ्रेडरिक के लिये बड़ा आदर का भाव था। महाराज की प्रशंसा में उसने कविता भी लिखी थी। १७५५ के अंत में जब वह लाइप्ज़िक लौटा इस समय उसके मित्र और साथी अनेक प्रुशियन अफ़सर थे। इन में सब से प्रधान एवाल्ड फ़न क्लाइस्ट (Ewald von Kleist) था। फ़ौज में एक ऊँचा अफ़सर होते हुए भी यह अपनी शिष्टता और उच्च चरित्र के लिए प्रसिद्ध था, साथ ही ऊँचे दर्जे का कवि भी था। इसकी मित्रता का लेसिंग पर बड़ा प्रभाव पड़ा। वह उस को हृदय से चाहता था। जैसा हम आगे दिखलावेंगे, "मिना फ़न बार्नह्यल्म" के प्रधान पात्र टॅ्यलहाइम का चरित्र बहुत अंश तक क्लाइस्ट के चरित्र के आधार पर गढ़ा गया है।

१७५६ में फ्रेडरिक ने सैक्सनी पर चढ़ाई कर दी। धीरे-धीरे, युद्ध के कारण, लेसिंग के सब साथी तितर-बितर हो गये।

१७५८ में क्लाइस्ट भी अपनी फ़ौज के साथ अन्यत्र भेज दि॰ गया और १७५९ में युद्ध-क्षेत्र में एक योद्धा की मृत्यु को प्रा हुआ। इस का लेसिंग को अत्यंत दुःख हुआ।

लाइब्ज़िक में आते ही उसने अपना साहित्यिक काम जा॰ कर दिया था। इन्हीं दिनों और साहित्यिक कामों के साथ उस अपनी "नाटकीय ग्रंथावली" का चौथा भाग भी समाप्त क दिया। परतु युद्ध के कारण मित्रों के बिछुड़ जाने से वह फि बर्लिन चला आया।

फिर बर्लिन में

बर्लिन में उसका काम पूर्ववत् अनेक तरह का था। इन दि॰ के उसके मुख्य साहित्यिक काम में "नवीनतम साहित्य के संब में पत्र" थे, जिनको उसने १७५९ में लिखना शुरू किया था इन पत्रों को उसकी "नाटकीय ग्रंथावली" तथा "वोसि॰ ज़ाइटुंग" इन पत्रिकाओं का ही परिशिष्ट समझना चाहिये। पत्र सरल और मनोरञ्जक संलापात्मक शैली में लिखे गये और इनमें सारे तात्कालिक साहित्य को गुण-दोष-विवेचना साथ निष्पक्ष भाव से समीक्षा की गई थी। इस काम के अतिरि॰ कथा कहानी तथा पहेलियों के रूप में भी वह कुछ लिखता रहा उसके प्रभाव से साहित्य के इस अंग को भी बड़ी उत्कृष्ट॰ प्राप्त हुई।

ब्रेस्लाउ में

कुछ ही काल में लेसिंग का मन बर्लिन से फिर उकता गया। १७६० में उस को ब्रेस्लाउ के गवनर, जनरल टाउएन्टज़ीन (Tauentzien), के मन्त्रित्व का पद मिल गया और उसने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। १७६५ ई० तक वह इस पद पर रहा। पिछले जीवन से उसका इन दिनों का जीवन बिल्कुल भिन्न था। दो-चार साहित्यिक पत्रों को छोड़कर, इन वर्षों में उसकी कोई रचना या लेख प्रकाशित नहीं हुआ। ज्यादातर समय वह अपने मंत्रित्व के काम में तथा चैन में बिताने लगा। जो साहित्यिक लेख आदि लिखने का काम वह अनेक वर्षों से अनवरत परिश्रम के साथ करता रहा था वह क़रीब-क़रीब एक साथ रुक गया। उसका उद्देश्य शायद यह था कि अब तीस वर्ष की आयु हो जाने पर कुछ रुपया भी पैदा करना चाहिये। अपने माता-पिता और भाई की सहायता के लिए उसे रुपये की आवश्यकता भी थी।

यद्यपि इन दिनों लेसिंग ज्यादातर सरकारी काम और मौज में ही अपना समय बिताता था, तो भी यह न समझना चाहिये कि उसके साहित्यिक जीवन में इस समय का कोई उपयोग नहीं था। वास्तव में अपनी स्वाभाविक साहित्यिक प्रवृत्ति के कारण उसका ऊपरी मन ही उक्त बातों में लगा था। सांसारिक अनुभव और साथ ही अनवरत साहित्यिक काम से विश्राम मिलने के

कारण उसका मन एकाग्र और सावधान होने के साथ-साथ गंभीरता और सशक्तता में भी उन्नति कर रहा था। यद्यपि इन दिनों उसने कुछ लिखना बन्द रक्खा था तो भी वह स्वाध्याय में काफ़ी समय देता रहा। भिन्न-भिन्न विषय के अनेकानेक उत्कृष्ट ग्रन्थों का मनन उसने इन दिनों किया।

साथ ही उसका मस्तिष्क बड़े महत्त्व की दो प्रस्तावित पुस्तकों के विषय में काम कर रहा था। पहला ग्रन्थ एक नाटक था जिसमें वह एक शीशे की तरह, अपने काल के सैनिक जीवन को, उसके भाव, विचार और रुचियों के साथ, प्रतिबिम्बित करना चाहता था। यह वहीं "मिना फ़न बार्नहेल्म" नाम का नाटक है, जिसका अनुवाद हम यहाँ पाठकों के सामने रख रहे हैं। वास्तव में यह नाटक लेसिंग की कीर्ति का एक अचल स्मारक है, जो तब तक दुनिया में रहेगा जब तक जर्मन जाति रहेगी। इसकी तैयारी में उसने काफ़ी समय लगाया था। उसकी हस्तलिखित पोथी का मुख्य भाग १७६३ का लिखा हुआ है। पर १७६४ में वह उसे समाप्त कर सका। १७६५ में जब उसने ब्रेस्लाउ छोड़ा हस्तलिखित पोथी को वह अपने साथ बर्लिन ले गया और अपने मित्र प्रसिद्ध विद्वान् और लेखक रामलेर (Ramler) को उसे दिखाया। उसने बड़े ध्यान से आद्योपान्त इसे पढ़ा और अनेक परिवर्तन इसमें किये। इन परिवर्तनों को ज़्यादातर लेसिंग ने स्वीकार कर लिया। इस प्रकार बड़े विचार के साथ दुहराये जाने के बाद यह नाटक अन्त में १७६७ में प्रथम बार प्रकाशित हुआ। यही नहीं,

पुस्तक के कई सस्करण शीघ्र ही निकले; और इन सब संस्करणों में लेसिग ने अनेक परिवर्तन और सुधार किये ।

ब्रेस्लाउ में रहते हुए जो दूसरी महत्त्व की पुस्तक उसने लिखी वह 'लोकून' (Laokoon) थी । इसमें बड़ी योग्यता के साथ, साधारण सरल बात-चीत के ढंग पर, उसने कविता और चित्रण या मूर्ति-निर्माण की कला के मौलिक भेद को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है । ग्रीक और लैटिन के ग्रन्थों के अध्ययन से उन दिनों लोगों की प्रवृत्ति उक्त कलाओं की ओर बढ़ रही थी । साथ ही कुछ विद्वानों का यह मत था कि कविता और चित्रणकला में कोई वास्तविक भेद नहीं है । उनका कहना था कि कविता को शब्द-चित्रण ही समझना चाहिये । परन्तु लेसिंग ने दिखलाया कि दोनों में मौलिक भेद है । इस पुस्तक का लोगों पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा । कहा जाता है कि इस पुस्तक के द्वारा उसने सौन्दर्य-विज्ञान की नींव डाल दी । १७६६ में यह पुस्तक प्रकाशित हुई ।

लेसिंग और फ्रेडरिक

१७६५ में, जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, लेसिंग ने ब्रेस्लाउ की जगह छोड़ दी । कुछ दिनों अपने घर रहकर वह पुनः बर्लिन आ गया । इन्हीं दिनों केनिग्ज़बर्ग में साहित्य के अध्यापक की जगह उसे मिल रही थी । परन्तु यहाँ के प्रोफ़ेसर को साल में एक बार महाराजा की प्रशंसा में व्याख्यान देना पड़ता था । उसको यह

ख़ुशामद फ़्रेडरिक की भी पसन्द नहीं थी। इसलिए उसने इस जगह को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। इन्हीं दिनों बर्लिन के राजकीय पुस्तकालय में एक जगह ख़ाली हुई। लेसिंग चाहता था कि यह जगह उसको मिल जावे। वह उसके योग्य भी था। परन्तु फ़्रेडरिक को अपने कृपापात्र वाल्टेयर के साथ लेसिंग का पुराना झगड़ा याद था। इस लिए महाराज ने वह जगह उसको न देकर दूसरे व्यक्ति को दे दी।

खेद का विषय है कि महाराज फ़्रेडरिक का भाव लेसिंग की तरफ़ बराबर उपेक्षा का ही रहा। उस समय की जर्मनी में यह दोनों, अपने अपने क्षेत्र में, सर्वप्रधान व्यक्ति थे। दोनों ने जर्मनी के भावी महत्त्व की नींव डाली; एक ने राजनीतिक दृष्टि से, तो दूसरे ने साहित्यिक दृष्टि से। परन्तु अपनी मातृभाषा की उपेक्षा के कारण फ़्रेडरिक ने कभी लेसिंग को नहीं अपनाया। यही नहीं, कई बार जब वह उसकी सहायता कर सकता था उसने लेसिंग की उपेक्षा की।

हैम्बर्ग में

महाराज की उपेक्षा के कारण उक्त जगह न मिलने से स्वभावतः लेसिंग को निराशा हुई। परन्तु सौभाग्यवश शीघ्र ही उसे अपने अनुकूल स्थान मिल गया। अप्रैल १७६७ में हैम्बर्ग नगर की एक प्रतिष्ठित नाटक-मण्डली ने नाटक-समालोचक की जगह पर उसे नियत कर लिया। मण्डली के नाटकों की समालोचना के

साथ-साथ उसका काम एक पत्रिका को संपादन करने का भी था। इस पत्रिका में नाटकों और अभिनेताओं के विषय में विवेचनात्मक लेख होते थे। १७६७ की मई से "हैम्बर्गिश ड्रैमैटर्जी" नाम से यह पत्रिका निकाली गई। परन्तु अनेक कारणों से यह ज्यादा दिन निकल न सकी। १७६८ के नवम्बर में उक्त मण्डली का थियेटर बन्द हो गया। इस कारण आगे चलकर पत्रिका भी बन्द करनी पड़ी। इसकी सब संख्याओं को इकट्ठा करके अप्रैल १७६९ में दो जिल्दों में प्रकाशित किया गया। लेसिंग के पहले लेखों और निबन्धों की तरह इस पत्रिका के लेख भी उसकी विद्वत्ता, योग्यता और समालोचना-शक्ति के ज्वलन्त प्रमाण हैं। अनेकानेक नाटकों आदि की समालोचना के साथ-साथ उसने इन लेखों में अपने पुराने विरोधी वाल्टेयर की भी ख़ूब ख़बर ली। इन लेखों में सदा की तरह उसने बराबर यह प्रयत्न किया कि अपने जातीय साहित्य में अस्वाभाविक विदेशीय, विशेष कर फ़्राँसीसी, दासता का प्रभाव दूर किया जावे और इस प्रकार अपनी स्वाभाविक जातीय शैली की स्थापना की जावे।

वोल्फ़ेनब्युटेल में

हैम्बर्ग की नाट्य-मंडली के टूट जाने से लेसिंग पुनः बेकारी का शिकार हो गया। यह दुःख की बात है कि जर्मनी का सर्वश्रेष्ठ लेखक होते हुए भी उसको कहीं एक स्थान पर स्थिर रीति

से काम करने को नहीं मिला। वह इस समय ४० वीं साल में था। उसकी आर्थिक दशा इस समय भी काफ़ी बुरी थी। उसके ऊपर काफ़ी ऋण भी हो गया था। ऐसे अर्थ-संकट के दिनों में उसे, १७७० में, वोल्फ़ेनब्युटेल (Wolfenbüttel) के राजकीय पुस्तकालय में पुस्तकाध्यक्ष का स्थान मिल गया। ब्रन्सविक के ड्यूक का यह प्रधान पुस्तकालय था। इस स्थान पर मनोरंजन का कोई और साधन न था। इस लिए लेसिंग पूरे उत्साह के साथ अपने नये काम में संलग्न हो गया। पुस्तकालय में प्राचीन हस्त-लिखित पोथियों का एक अच्छा सग्रह था। उसने इसका पूरा लाभ उठाना चाहा, और तुरत इस पुस्तकालय में छिपे पड़े पुराने रत्नों से संसार को परिचित करने का इरादा कर लिया। इस सम्बन्ध में उसने अनेकानेक लेख लिखे और विविध विषयों की अनेक प्राचीन पुस्तकों को प्रकाशित किया।

उसका सर्व-श्रेष्ठ दुःखान्त नाटक

इसी जगह रहते हुए उसने अपना सर्वश्रेष्ठ दुःखान्त नाटक "एमिलिया गालोटी" (Emilia Galotti) लिखा। इसकी कथा प्राचीन रोम से ली गई थी; पर इसको उसने अपने समय का रूप दे दिया था। अनेक वर्षों से उसके मन में इस विषय पर लिखने का विचार था। वोल्फ़ेनब्युटेल में उसने अन्तिम बार इस काम को हाथ में लिया और १७७२ की १३ वीं मार्च को डच्यस के जन्म-दिवस के अवसर पर यह नाटक प्रथम बार खेला गया।

इस कथा को लाइवी (Livy) ने लिखा है। इसमें एक पिता अपनी पुत्री को इस लिए जान से मार डालता है कि कहीं वह दुराचारी दुष्ट एपिउस क्लाडिउस (Appius Claudius) के हाथों में न पड़ जावे।

"एमिलिया गालोटी" की तुलना यदि हम उसके सर्वप्रथम दुःखान्त नाटक "कुमारी सैरा सैम्पसन" से करें तो दोनों में बड़ा अन्तर दिखाई देगा! "एमिलिया गालोटी" में ग्रन्थकार ने पहले से कहीं अधिक उन्नति अपनी कला में कर ली है। इसके पात्रों के चरित्र में प्रथम दुःखान्त नाटक की अपेक्षा कहीं अधिक गम्भीरता और पूर्णरूपता है। उनसे ग्रन्थकार के पूर्णरूप से विकसित अनुभव, विचार-शक्ति और बुद्धिमत्ता का परिचय मिलता है। सारांश यह कि सब आवश्यक बातों की दृष्टि से यह नाटक "कुमारी सैरा सैम्पसन" से कहीं अधिक बढ़ा चढ़ा है।

साहित्यिक काम से उपराम

लेसिंग ने जर्मन जाति को एक श्रेष्ठ सुखान्त नाटक "मिना फन बार्नहयल्म" और एक श्रेष्ठ दुःखान्त नाटक 'एमिलिया गालोटी" लिख कर दिया। इस प्रकार अपने साहित्यिक जीवन में उसने अत्यन्त सफलता प्राप्त कर ली। १५ वर्ष से वह साहित्यिक जगत् में निर्विवाद रूप से सर्वप्रथम नेता समझा जाता रहा था। परन्तु अब उसने साहित्यिक क्षेत्र से मुँह मोड़ना चाहा। यह वह समय था जब कि नई उमङ्गों से भरे हुए नवयुवक लेखकों की नई

पीढ़ी मैदान में आ रही थी। इन लोगों में नूतन-रचनात्मक शक्ति लेसिंग से कहीं बढ़ी चढ़ी थी। इनमें हेर्डर (Herder), गेठे (Goethe), क्लिंगेर (Klinger), म्यूलर (Miiller) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। ये लोग अपनी रचनाओं में पुरानी लकीर के फ़कीर न थे; और इनमें से अनेक प्राचीन परम्परागत नियमों के पालने में भी उच्छृङ्खलता दिखलाते थे। लेसिंग को यह उच्छृङ्खलता बिल्कुल पसन्द नहीं थी। प्रथम तो उसने इन लोगों से लोहा लेना चाहा; परन्तु अन्त में उसने साहित्यिक क्षेत्र के छोड़ देने का ही निश्चय किया।

धर्म-पुरोहितों से झगड़ा

परन्तु वह चुप-चाप बैठने वाला आदमी नहीं था। अब उसने धर्म-और दर्शन-सम्बन्धी गम्भीरतम प्रश्नों की तरफ़ अपनी बुद्धि लगाना शुरू किया। वास्तव में उसके जीवन के अन्तिम दस वर्ष प्रायः इन्हीं प्रश्नों के विचार और वाद-विवाद में व्यतीत हुए। वोल्फ़ेनब्युटेल के पुस्तकालय से उसके द्वारा अनेक पुस्तकों के प्रकाशित किये जाने की बात हम ऊपर कह चुके हैं। यहीं से उसने एक हस्त-लिखित पोथी को "एक अज्ञात ग्रन्थकार की हस्त-लिखित पोथी के अंश" इस नाम से खण्डशः निकालना शुरू किया। १७७४ से आरंभ होकर १७७८ तक ये खण्ड निकलते रहे। यद्यपि आपाततः यह समझा जाता था कि यह पोथी भी दरबार के पुस्तकालय से प्राप्त हुई है; पर वास्तव में ऐसा नहीं था। वास्तव में यह उसके हैम्बर्ग-निवासी

एक पुराने मित्र की कृति थी। वह स्वतन्त्र विचार का आदमी था। उसने अपने जीवनकाल में इसको प्रकाशित नहीं कराया, और अपनी मृत्यु के पश्चात् प्रकाशनार्थ इसे अपने मित्र लेसिंग के सुपुर्द कर गया। इसमें ऐतिहासिक और दार्शनिक आधार पर ईसाई धर्म का जोरदार खण्डन किया था। प्रचलित धर्म के विरोध में ऐसी जोरदार पुस्तक के प्रकाशन से उसका अभिप्राय यही था कि विद्वानों में उसके विषय में विचार और वाद-विवाद उठे और उसके फल-स्वरूप जनता में धर्म-विषयक अन्ध-भक्ति की मात्रा कम हो और विवेचना तथा तर्क-बुद्धि को भी धर्म में स्थान मिले। रूसो (Rousseau) आदि स्वतन्त्र-विचारकों के प्रभाव से यह प्रवृत्ति उन दिनों वैसे भी बढ़ रही थी। जैसा लेसिंग समझता था वैसा ही हुआ। उक्त खण्डों के प्रकाशित होने से विद्वानों में और धर्म-पुरोहितों में बड़ा झगड़ा और आन्दोलन शुरू हुआ। इस वाद-विवाद में उसने अनेक लेख और पुस्तिकाएँ निकालीं; जिनमें उसने अपनी असाधारण तर्क-बुद्धि और विवाद-चातुरी का परिचय दिया और अपने विरोधियों का मुँहतोड़ उत्तर दिया। अन्त में विरोध इतना बढ़ा कि रियासत ने उक्त खण्डों को १७७८ में जब्त कर लिया। इस पर भी लेसिंग चुप न हुआ। उसने अपने उत्तर के लेख रियासत के बाहर दूसरे स्थानों से प्रकाशित किए। इन उत्तरों से उसे सन्तोष नहीं हुआ। उसने अपने विरोधियों का अंतिम उत्तर ऐसी शक्ल

में देना चाहा जो सब तरह से पूर्ण होने के साथ-साथ चिरस्थायी भी हो।

यह उत्तर उसने अपने सर्वोच्च नाटक "बुद्धिमान् नाथन" (Nathan der Weise) की शक्ल में दिया। बहुत दिनों से इसकी रूप-रेखा उसने लिख रक्खी थी। इस नाटक का लिखना उसने नवम्बर १७७८ में प्रारंभ किया और मार्च १७७९ में इसे समाप्त कर दिया। इसका सर्वप्रधान पात्र नाथन एक यहूदी है। दूसरे मुख्य पात्र मुसलमान और ईसाई हैं। तीनों के चरित्र के मुक़ाबले से इसमें दिखलाया है कि जहाँ यहूदी का चरित्र सच्चे धर्म की दृष्टि से बहुत ऊँचा है, वहाँ ईसाई का चरित्र उसके तथा मुसलमान के भी चरित्र के मुक़ाबले में हेच है। पिछले विवाद का उसके मन पर कटु असर होते हुये भी इसमें ग्रन्थकार ने शान्ति, दयालुता और विनय-शीलता का ही प्रवाह बहाया है। साथ ही इससे यह सिद्ध किया है कि धार्मिक संकीर्णता हमें धर्म के सच्चे तत्व से बहुत दूर रखती है। किसी धर्म का महत्व जीवन के आदर्श की उच्चता और पवित्रता के ऊपर निर्भर है, न कि थोथे रीति-रिवाजों पर। इन्हीं ऊँचे आदर्शों से १७८० के लगभग लिखे हुए उसके कुछ और लेख भी विद्यमान हैं। इनमें भी उसने मनुष्यता के उच्चतर आदर्श की आवश्यकता दिखलाई है। वह समझता था कि इसी आदर्श से भिन्न-भिन्न मतवादियों की संकीर्णता का नाश होकर मनुष्यमात्र में भ्रातृभाव का प्रचार हो सकता है।

विवाह और स्त्री की मृत्यु

अभी तक हमने विशेषतया लेसिंग के साहित्यिक जीवन का ही वर्णन किया है, और उसके घरेलू जीवन पर कुछ भी प्रकाश नहीं डाला है। वास्तव में अभी तक उसके घरेलू जीवन की कोई वर्णनीय विशेषता भी नहीं थी। वह ज्यादातर अपने घर से बाहर साहित्यिक वायुमण्डल में ही रहता रहा। उसका विवाह भी १७७६ से पूर्व नहीं हुआ। इस विवाह की कथा इस प्रकार है।

वोल्फ़ेनब्युटेल में पहुंचने के कुछ ही समय बाद १७७१ में ही उसकी सगाई श्रीमती एवा केनिग (Frau Eva König) से, जो हैम्बर्ग के एक प्रतिष्ठित और धनी व्यापारी की विधवा थी, हो गई थी। परंतु अनेक कारणों से शादी टलती ही रही। इधर कुछ सालों के बाद लेसिंग का मन वोल्फ़ेनब्युटेल से ऊब गया। वहाँ के ड्यूक का शुष्क व्यवहार उसे नहीं रुचा। उसके वहाँ रहने की अनिच्छा का एक कारण यह भी था कि उसकी आर्थिक दशा अब भी अच्छी नहीं थी। उस पर दूसरों का ऋण था, और साथ ही घर वालों को सहायता देनी पड़ती थी। इस बीच में वह विधवा किसी कार्यवश वियना गई और कारण-वश उसे चिर-काल तक वहीं रुक जाना पड़ा।

१७७५ में लेसिंग भी उससे मिलने के लिए वहाँ गया। इस अवसर पर वियना में जनता और सम्राज्ञी की ओर से उसका बड़ा

स्वागत हुआ। उसके स्वागत में उसका अपना नाटक "एमिलिया गालोटी" भी खेला गया। परंतु उसकी स्थिति वियना में अधिक काल तक न हो सकी। ब्रन्सविक के राजघराने के छोटे कुमार इटली जाते हुए रास्ते में वहाँ ठहर गए, और उन्होंने लेसिंग जैसे प्रसिद्ध साहित्यिक को इटली की यात्रा में अपने साथ ले जाने की इच्छा प्रकट की। यह इच्छा लेसिंग के लिए आदेश के सदृश थी। वह उनके साथ हो लिया।

यह यात्रा ९ मास तक रही, और इसमें उसने वेनिस, फ्लारेंस, रोम जैसे प्रसिद्ध स्थानों को, जिनको देखने के लिए वह चिरकाल से उत्कण्ठित था, देखा। अनेक प्रसिद्ध विद्वानों से उसका परिचय हुआ। १७७६ की जनवरी में वह वहाँ से लौटा। इधर ब्रन्सविक के ड्यूक पर भी उसके कहने का कुछ प्रभाव पड़ा और वह लेसिंग के साथ अधिक उदारता का व्यवहार करने तथा उस का पुरस्कार बढ़ाने को तैयार हो गया। इस समय तक श्रीमती एवाकेनिग को भी निजी झगड़ों से फ़ुर्सत मिल चुकी थी। इस लिए चिरकाल से टलती जाती हुई दोनों की शादी १७७६ के अक्तूबर में हो गई।

इस स्त्री के पूर्व पति से चार सन्तान थीं। इन सौतेली संतानों के साथ लेसिंग और उसकी पत्नी वोल्फ़ेनब्युटेल में रहने लगे। यह स्त्री सब प्रकार से लेसिंग के योग्य थी। सुशिक्षित, सभ्य और बुद्धिमान होने के साथ वह स्वभाव में शान्त, दयालु और गंभीर थी। इस प्रकार जीवन में प्रथम बार लेसिंग को

गृहस्थ का और सद्भार्या का सुख मिला; और इसका उसके स्वभावत: अशान्त और अस्थिर चित्त पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। ऐसा प्रतीत होता था कि कम से कम उसके जीवन के अंतिम दिन शांति और सुख के साथ बीतेंगे। परंतु विधाता को यह स्वीकार न था।

१७७७ के बड़े दिन से एक दिन पहले उसकी स्त्री ने पुत्र को जन्म दिया। जन्म के कुछ ही घंटों के बाद इस बच्चे की मृत्यु हो गई। इसका लेसिंग को स्वभावतः बड़ा दुःख हुआ। परंतु उसके दुःखों का अत इससे नहीं हुआ। बच्चे की मृत्यु के कुछ ही दिन बाद उसकी स्त्री भी उसको छोड़ संसार से चल बसी। इस प्रकार उसके गार्हस्थ्य-जीवन के सुख-स्वप्न का अंत बहुत ही शीघ्र हो गया, और वह इस दुःखमय संसार में पूर्ववत् अपना एकाकी जीवन व्यतीत करने को शेष रह गया। उसके इन दिनों के पत्रों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उसको इन शोचनीय घटनाओं से महान् दुःख हुआ था।

परंतु महान् व्यक्तियों की तरह उसकी बुद्धि ने दुःख के गाढ़ अन्धकार में भी अपने प्रखर प्रकाश को नहीं खोया। बल्कि यह कहना चाहिए कि आपत्ति-रूपी शान से उसके बुद्धिरूपी शस्त्र को और भी अधिक तीक्ष्णता प्राप्त हुई। इसका प्रमाण उस घोर वाद-विवाद से मिलता है जो उसे १७७८--१७७९ के लगभग एक 'अज्ञात ग्रन्थकार' की उक्त पोथी के बारे में करना पड़ा और जिस का वर्णन हम ऊपर कर चुके हैं।

मृत्यु

इन घरेलू आपत्तियों और घोर मानसिक परिश्रम का उसके स्वास्थ्य पर बुरा ही प्रभाव पड़ा। स्वास्थ्य धीरे-धीरे ख़राब होने लगा। अन्त में वह बीमार पड़ गया और थोड़े ही दिनों में १५ फर्वरी १७८१ को परलोक सिधार गया।

उपसंहार

आधुनिक जर्मन साहित्य के संस्थापक के जीवन और कृति के विषय में यह संक्षिप्त वृत्तांत हमने दिया है। उसके काम के विस्तार और महत्व को देखकर हमारे मन में आश्चर्य और उस के प्रति श्रद्धा का भाव पैदा होता है। परन्तु उसकी जीवनी को पढ़ कर, उसकी अद्वितीय मानसिक शक्तियों को देखते हुए भी, मन को वह संतोष और प्रसन्नता नहीं होती जो गेठे आदि दूसरे कवियों और लेखकों की जीवनी से होती है। उसका जीवन आधुनिक संसार के मनुष्यों की तरह अशांत और अस्थिर दिखलाई देता है। उसमें वह शांति और गंभीरता नहीं दीखती जो जीवन में सौंदर्य लाती है।

वह स्वभाव से ही अस्थिर और चञ्चल था। विशेष सरकारी काम के दिनों को छोड़ कर, उसे हम कभी एक ही स्थान पर कुछ ही वर्षों से अधिक रहते हुए नहीं पाते। उसके हाथ में सदा इतने प्रकार के काम रहते थे जिन्हें वह अच्छी तरह सुचित्त होकर नहीं कर सकता था। उसके लेखों की यदि हम सूची देखें

तो पता लगेगा कि वे भिन्न-भिन्न परस्पर असम्बद्ध विषयों पर हैं। उसके अनेक लेख ऐसे हैं जो कभी पूरे ही नहीं हुए। यही नहीं, उसकी गद्य की सर्वोत्तम रचनाओं पर भी अपूर्णता की छाप प्रतीत होती है। उदाहरणार्थ, उसके नाटक के इतिहास-संबंधी लेख तथा साहित्य-विषयक पत्र अपूर्ण ही रहे। 'लाकून' की भी, जो तीन जिल्दों में समाप्त किया जाने वाला था, केवल एक ही जिल्द निकल सकी।

लेसिंग सत्य का एक सच्चा उपासक था। उसके लेख विभिन्न विषयों पर हैं; परन्तु उन सब में समान रूप से उसकी यही आंतरिक इच्छा दिखलाई देती है कि वह प्रत्येक विषय की तह तक पहुंच कर उसका सत्य स्वरूप प्रकट करे। कोई भी धार्मिक संप्रदाय, चाहे वह कितना ही मान्य हो, यदि विद्या की उन्नति में बाधा डालता है तो लेसिंग के मत में उसका सफ़ाया ही कर देना चाहिए। प्रत्येक विषय के सत्य-स्वरूप को प्रकट करने की इच्छा से ही प्रेरित होकर वह अनेकानेक विद्वानों और धर्मगुरुओं के साथ वाद-विवाद में बार-बार प्रवृत्त होता रहा। वह ग़लत सिद्धांतों को सह नहीं सकता था।

साहित्यिक जगत् का वह एक शक्तिशाली महारथी था। वह सदा असत्य के विरुद्ध लड़ता रहा। शास्त्रीय वाद-विवादों में उस ने ऐसी चतुरता, प्रभाव और तर्क-बुद्धि दिखलाई जैसी लूथर के बाद उसके समय तक नहीं देखी गई थी। जिन लोगों ने भी उस के साथ लोहा लेना चाहा नीचा देखा।

परन्तु उसकी तीव्र विवेचना का उद्देश्य केवल विनाश न था, किन्तु निर्माण भी था। इस शक्ति का सुप्रभाव विद्या के अनेकानेक विषयों पर पड़ा। साहित्य, भाषाशास्त्र, सौंदर्य-विज्ञान और धर्म-शास्त्र के विषयों में तो उसको एक नए युग का प्रवर्तक ही कहना चाहिए।

उसने जर्मन साहित्य की भावी उन्नति की पक्की नींव डाल दी। इसी नींव पर पीछे से हेर्डर, गेठे, शिलर (Schiller) आदि उत्कृष्ट लेखक-गण, जो उसको अपना आचार्य और मार्गदर्शक समझते थे, सुंदर साहित्यिक प्रासाद की विशाल इमारत खड़ी कर सके। उसने सुखांत और दुःखांत नाटकों के प्राथमिक नमूने तैयार कर दिए जिनकी नक़ल बड़े उत्साह से उसके पीछे के लोगों ने की।

जर्मन साहित्य के युग-प्रवर्तक इसी महाकवि लेसिंग के एक विशिष्ट नाटक का हिंदी अनुवाद हम हिंदी संसार के सामने उपस्थित कर रहे हैं।

नाटक की रचना और उसके पात्र

"मिना फ़न बार्नह्यल्म" के पात्र दो वर्गों में बाँटे जा सकते हैं: प्रुशियन और सैक्सन। ट्यलहाइम, वेर्नर और जुष्ट प्रुशियन हैं। मिना, फ्रांसिस्का, ब्रुख़साल के काउन्ट और उनके नौकर सैक्सन हैं। दोनो वर्गों का संबंध होटल के मैनेजर के द्वारा होता है। दोनों मिलकर एक पूर्ण चित्र बनाते हैं; और दोनों एक समान

कथा के द्वारा एक दूसरे से सुसंगठित हैं। विभिन्न पात्रों के चरित्र के आधार पर ही, स्वाभाविक रीति से, कथा आगे बढ़ती है। ट्यल-हाइम की हठ, मिना का उत्साह, फ्रांसिस्का की वाक्पटुता, वेर्नर की स्वामिभक्ति, जुष्ट की ईमानदारी, और मैनेजर की लालच ये सब मिलकर एक ही उद्देश्य को पुष्ट करते हैं। कवि के चातुर्य ने एक अंगूठी के गिर्वी रखने, छुड़ाने और लौटाने की साधारण घटना को ही एक पाँच अंक के नाटक का रूप दे दिया है।

यद्यपि लेसिंग एक नाटक में काल, देश और कथा की एकता को आवश्यक नहीं समझता था, तो भी उसने इस नाटक में उक्त एकता का पालन किया है। नाटक की सारी कथा २२ अगस्त १७६३ के प्रभात से लेकर सायंकाल तक "स्पैनिश किंग होटल" में पूरी हो जाती है। यह एकता उसके दूसरे नाटकों में भी देखी जाती है।

"एमिलिया गालोटी" आदि दुःखान्त नाटकों में उसने ऐसा कोई कथांश नहीं दिखलाया है जो कथा के अन्तिम परिणाम के साथ शृङ्खला-रूप में सम्बद्ध न हो। पर इस नाटक में पूर्णतया इस बात का पालन उसने नहीं किया है। इसमें कई कथांश—कई पात्र, कई घटनाएँ तथा फ्रांसिस्का और जुष्ट की, वेर्नर और मैनेजर की, टयलहाइम और वेर्नर की बातचीत—ऐसे हैं जिन का असली कथा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह सत्य है कि ये सब उस समय के जीवन और रीति-रिवाज पर अच्छा प्रकाश डालते हैं; ये हमारे हृदय में करुणा और हास्य के भावों को पैदा

करते हैं। पर साथ ही वे मुख्य कथा को आगे बढ़ने से रोकते हैं। उदाहरणार्थ, द्वितीय अंक के अन्त में टच्यलहाइम शीघ्रता से मिना को छोड़कर चला जाता है। इस समय हमारे मन में बड़ी उत्सुकता होती है कि देखें प्रेम और प्रतिष्ठा के विरोधी भावों में कैसे समन्वय होता है। ऐसी दशा में भी अगले दो अंको में बराबर घरेलू नौकरों आदि की घटनाओं को ही दिखलाया गया है, और चतुर्थ अंक के अन्तिम दृश्यों में ही कहीं फिर मुख्य कथा को उठाया है। ऐसी घटनाओं को छोड़कर, सामान्य रूप से कथा की गति में शीघ्रता ही पाई जाती है।

लेसिंग की पुरानी रचनाओं की अपेक्षा "मिना फ़न बार्न-ह्यल्म' कहीं अधिक ऊँचे दर्जे का है। इसमें न तो वह "नवयुवक विद्वान्" की तरह किसी विशेष ढोंग या दम्भ की हँसी उड़ाता है, न "यहूदी" आदि की तरह किसी सामाजिक या नैतिक शिक्षा-विशेष का उपदेश करता है। न यह उसकी कई और रचनाओं की तरह विदेशीय रचना का अनुवाद या उसके आधार पर लिखा हुआ है। इसका महत्त्व इसी में है कि यह स्वदेशीय जीवन की तस्वीर कही जा सकती है। इसके पात्र टच्यलहाइम, वेर्नर, मिना, फ्रांसिस्का आदि शुद्ध जर्मन हैं, और शुद्ध स्वदेशीय भाव और भाषा से युक्त होते हुए तात्कालिक देशीय जीवन का चित्र हमारे सामने उपस्थित करते हैं।

लेसिंग ने अपने पात्र किसी दूर देश या काल से न लेकर अपने परिचित वायु-मंडल से ही लिये हैं। ब्रेसलाउ में रहते हुए उसने

प्रुशियन फ़ौजी अफ़सरों और सैनिकों के जीवन को ख़ूब देखा था। वास्तव में इस नाटक में वह उन्हीं लोगों को रंगमंच पर ले आया है। यही नहीं, इस नाटक के अनेक पात्रों की कल्पना वास्तव में जिन व्यक्तियों के आधार पर की गई थी उनका पता भी लगाया जा सकता है। जिस कथा को इस नाटक में दिखलाया है वह भी ऐसी है जिस का आधार किसी वास्तविक घटना पर हो सकता है। इस प्रकार यह रचना सात-साला युद्ध के समय की एक अच्छी तस्वीर हमारे सामने रखती है।

मेजर टय्‌लहाइम

नाटक का मुख्य पात्र टय्‌लहाइम है। इसके स्वरूप के गढ़ने में लेसिंग ने सब से अधिक ध्यान दिया है, और बड़े विचार के साथ इसको बनाया है। सात-साला युद्ध के बाद फ़ौज का नया संगठन किया गया था। अनेकानेक रिसाले और पलटनें तोड़ दी गई थीं। फ़ौज में हज़ारों सिपाहियों की कमी कर दी गई थी। ऐसी अवस्था में सैकड़ों उच्चपदाधिकारी भी बेकार हो गये। इनमें से अनेक कुलीन होते हुए भी पैसे-पैसे को मुहताज हो गये इनकी इस दुर्दशा को देख कर दया आती थी। इस नाटक के द्वारा लेसिंग ने वस्तुतः ऐसे ही लोगों की दुरवस्था का चित्र खींचा है। उन दिनों नाटक की सर्व-प्रियता का ख़ास कारण यही था। सर्कारी चन्दे के लिये जनता के साथ सख़्ती करने के स्थान में टय्‌लहाइम की अपने पास से रुपये दे देने की बात भी ऐतिहासिक घटना के आधार पर लिखी गई है। मेजर बिबरस्टाइन

(Marschall von Biberstein) के विषय में ऐसी ही एक सच्ची घटना को लेसिंग ने सुना था।

ट्यलहाइम के उच्च चरित्र को लेसिंग ने बहुत कुछ अपने प्रियतम मित्र मेजर क्लाइस्ट के उदार चरित्र के आधार पर लिखा है। टच्यलहाइम की विनम्रता, और वीरता, उसका एक सैनिक के कर्तव्य के विषय में उच्च विचार अपने संबंधियों और आश्रितों के प्रति उसकी उदारता इत्यादि सब बातें क्लाइस्ट के चरित्र की नक़ल हैं।

पर टच्यलहाइम की प्रकृति में जो कठोरता और उग्रता है उस पर बहुत कुछ लेसिंग के अपने चरित्र और स्वभाव की छाप है। टच्यलहाइम के मुख से अनेक उद्गार निकले हैं उनसे लेसिंग के पत्रों की याद आ जाती है। "महाराज सब योग्य पुरुषों को नहीं जान सकते", "बड़े लोगों की नौकरी भय-जनक होती है और उसमें उस कष्ट, परतंत्रता, और अनादर के लिए जो उसके कारण मनुष्य को उठाने पड़ते हैं बदला नहीं मिलता" (अंक ५, दृश्य ९) इत्यादि शब्दों में वस्तुतः लेसिंग अपने ही भाव और विचारों को प्रकट कर रहा है। मितव्ययता का अभाव आदि और बातों में भी लेसिंग और टच्यलहाइम में बहुत कुछ समानता है।

मिना फ़न बार्नह्यल्म

सैक्सनी प्रदेश की मिना का चरित्र कवि ने बड़ा सुन्दर दिखलाया है। ट्यलहाइम की उदासीभरी कठोरता के मुक़ाबले

में उसकी प्रफुल्लता और प्रसन्नता को देखकर चित्त बड़ा प्रसन्न होता है। वह स्वभाव से ही दयालु और सुशील है। उसको यह जानकर बड़ा दुःख होता है कि उसके कारण एक अफ़सर को अपना कमरा छोड़ना पड़ा है। स्थान स्थान पर उसके स्वभाव के इन सुन्दर गुणों का परिचय मिलता है। जुआरी और आवारा मार्लिनेअर के साथ उसके करुणामय व्यवहार में तो इस की पराकाष्ठा हो जाती है।

वह सचाई और सीधेपन की मूर्ति है। बड़े सीधेपन से वह टथ्यलहाइम से उसके प्रति अपने प्रेम की सारी कहानी कह डालती है। तो भी इस वार्तालाप में एक कन्या के व्यवहार में जो औचित्य होना चाहिये उसकी सीमा का उल्लंघन वह नहीं करती है।

मिना के चरित्र में दृढ़ता और बुद्धि में परिपक्वता है। टथ्यल-हाइम के साथ, उसके आत्म-प्रतिष्ठा के अत्यधिक ख्याल के कारण, जो जबर्दस्त बहस वह करती है वह इसी बात को दृढ़ करती है। "धन्यवाद से युक्त केवल एक विचार भी ईश्वर के प्रति पूर्ण प्रार्थना है", "विधाता को एक प्रसन्न प्राणी को देखने की अपेक्षा और कौनसी बात अधिक प्रसन्न कर सकती है!" (अङ्क २, दृश्य ७) ये उद्गार उसके पवित्र और उच्च भावों के द्योतक हैं।

पाउल वेर्नर

स्वामी और स्वामिनी के उच्च चरित्र की छाया नौकर-चाकरों के चरित्र पर भी दीख पड़ती है। टथ्यलहाइम में जैसे अपना

विशिष्ट व्यक्तित्व है वैसेही वेर्नर और जुष्ट के चरित्र में भी एक सार्जन्ट और फ़ौजी नौकर का खास नमूना दिखलाई देता है। एक सच्चे सिपाही की तरह वेर्नर छः मास में ही शांति से उकता जाता है। वह कहीं से पूरब में महाराज हिरैक्लियुस के युद्ध की ख़बर सुन लेता है। वह तत्काल इसमें विश्वास कर लेता है और वहाँ जाने को और युद्ध में सम्मिलित होने को तैयार हो जाता है। वह सच्चा स्वामि-भक्त है। ट्यलहाइम के अर्थ-संकट को सुनते ही वह अपना खेत आदि बेंच डालता है और उससे प्राप्त हुए रुपये को अपने भूतपूर्व मेजर के सामने उपस्थित कर देता है। जुष्ट के कहने पर भी वह इकेले में मैनेजर को पीटना एक सैनिक के लिये अनुचित समझता है। फ्रांसिस्का के साथ प्रेमालाप में या मिना के सामने कार्यवश उपस्थित होने पर उसका ढंग एक योद्धा की तरह ही कड़ा है।

जुष्ट

नाटक के साधारण लोगों में जुष्ट एक विशिष्ट पात्र है। वह पहले फ़ौज में बारबर्दारी के काम पर था, पर अब ट्यलहाइम की नौकरी में है। उसके स्वभाव का दिग्दर्शन पहले ही दृश्य में हो जाता है। सोते हुए या जागते हुए वह मैनेजर से लड़ने को तैयार है। वह उसकी शराब गट-गट पी जाता है, तो भी मैनेजर के प्रति उसका क्रोध शांत नहीं होता। स्वामि-भक्ति उसकी मुख्य विशेषता है। वह बिना तनख़्वाह के भी अपने स्वामी की सेवा

के लिए तैयार है; यहाँ तक कि वह उसके लिए भीख माँग सकता है और चोरी करने तक को तैयार है। जो काम उसके सुपुर्द किया जाता है उसे वह अपने निराले ढंग से करता है। उसके स्वभाव में ज़िद, क्रोध, ईर्ष्या और बदला लेने की इच्छा है। परंतु इन सब दुर्गुणों के दोष को उसका अपने स्वामी के साथ सच्चाई का व्यवहार बहुत कुछ कम कर देता है। इस बात में वह ट्यलहाइम के पुराने चोर और झूँठे नौकरों से बिल्कुल भिन्न है।

फ़्रांसिस्का

ट्यलहाइम और वेर्नर में जो परस्पर संबंध है उसका मुक़ाबला मिना और फ़्रांसिस्का के संबंध से किया जा सकता है। फ़्रांसिस्का मिना की वास्तव में बाँदी होते हुए भी यहाँ सखी-सदृश है। दोनों की अवस्था एक है, दोनों बचपन से साथ खेली हैं, और दोनों का पालन-पोषण भी साथ साथ हुआ है। प्रत्येक विशिष्ट अवसर पर वह मिना की सहायता करती है, उसको सलाह देती है, और आवश्यक होने पर अपनी स्वामिनी के कामों में दोष भी दिखलाती है। उसके तथा मिना के चरित्रों में वैसा ही तारतम्य है जैसा ट्यलहाइम और वेर्नर के चरित्रों में। उसमें मिना की दृढ़ता और उच्च भावों का अभाव है। ट्यलहाइम के पत्र न लिखने का वह कोई अनुचित कारण समझती है, और मिना की बनावटी तरकीब में वह उसका पूरा पूरा साथ नहीं दे सकती। वह बीच में ही घबड़ा जाती है। उसे संसार का काफ़ी

ज्ञान है। उसे ज़रा भी संदेह नहीं है कि मार्लिनेश्रर रुपये के देने से बुरा नहीं मानेगा। वह बड़ी वाक्पटु है। जुस्ट और मैनेजर के साथ उसकी बात चीत में इसका अच्छा उदाहरण मिलता है। नाटक के कुछ सर्वोत्तम सुभाषित—जैसे "बहुत करके हृदय से हमारे मुख के शब्दों की ही गूँज निकलती है", "मनुष्य उन गुणों का जो उनमें होते हैं बहुत कम जिक्र करते हैं; परंतु उनके विषय में जो उनमें नहीं होते कहीं अधिक चर्चा किया करते हैं" (२।१), "सुंदर स्त्रियाँ शृंगार के बिना ही अधिक सुंदर मालूम होती हैं" (२।७)—उसके मुख से कहलाये गये हैं। वेर्नर के साथ उसके परिचय, प्रेम, विवाद और अन्त में संबंध की कथा को, मुख्य पात्रों की कथा के साथ साथ, एक सुंदर उपनाटक का रूप कवि न दिया है।

मैनेजर

नाटक के उक्त अन्तरग पात्रों के साथ ही कुछ बाहरी पात्र भी हैं जिनमें सब से मुख्य होटल का मैनेजर है। मैनेजर के चरित्र के चित्रण में लेसिंग ने होटलों के मैनेजरों के विषय में अपने कटु अनुभव से काम लिया है। इसी लिये जो चरित्र उसका दिखलाया गया है वह अच्छा नहीं है। साल भर तक अपने होटल में रहने वाले एक सज्जन का, निर्धन समझ कर वह बाहर कर देता है। पर ज्यां ही उसे पता लगता है कि वह असल में निर्धन नहीं है वह पुनः उसे बुलाने की चेष्टा करता

है। जुष्ट भी उसको अत्यंत ख़ुशामदी पाता है। वह दूसरों के रहस्यों को जानने के लिये बड़ा उत्सुक है। इसी लिये दरवाज़े की ओट में खड़ा होकर दूसरों की बातों को सुनता है। वह लड़ाई के दिनों अफ़सरों की बड़ी ख़ुशामद करता था; पर अब उसने कुछ रुखाई को धारण कर लिया है। इसमें संदेह नहीं कि उसके चरित्र की बुराई बहुत अंश तक युद्ध के दिनों में फ़ौजी अफ़सरों की जबर्दस्ती तथा अनुचित व्यवहार का परिणाम थी।

शोकातुर महिला और मिना का नौकर

हम ऊपर कह चुके हैं कि यह नाटक अपने समय की एक तस्वीर है। नाटक के कुछ पात्र ऐसे हैं जिनको, मुख्य कथा से विशेष संबंध न होने पर भी, केवल इसी लिये नाटक में स्थान दिया गया है कि वे उस समय की अवस्था के पूर्ण चित्रण में सहायता दें। शोकातुर महिला एक ऐसा ही पात्र है। वह उस महान् युद्ध के पश्चाद्भावी शोक और उदासी की मूर्त्ति है। उस समय की जर्मनी में ऐसी ही शोकार्त विधवायें अनेकानेक थीं।

मिना का नौकर भी, जो प्रत्येक छः सप्ताह में अपने स्वामी को बदलता है, उस समय की गड़बड़ी की स्थिति को ही दिखलाता है।

रिको द ला मार्लिनेअर

नाटक का अत्यधिक मनोरंजक पात्र रिको द ला मार्लिनेअर है। वह यूरोप भर में घूमता फिरता है, पर अब बेकारी की हालत

में होकर एक जुआरी का जीवन व्यतीत कर रहा है। उसकी भाषा (मूल नाटक में) फ़्रेंच और टूटी फूटी जर्मन का संमिश्रण है। उसके विनीत होने के साथ साथ गर्वीले व्यवहार की तथा शेख़ीभरी दुःख की कहानी की अच्छी नक़ल फ़्रांसिस्का उतारती है। फ़्रेंचमैन होने के कारण, बेकारी की हालत में भी, उस समय के अनुसार, उसकी बड़े बड़े लोगों तक पहुँच है। उस समय फ़्रेडरिक की राजधानी में अयोग्य फ़्रांसीसियों की पूछ होती थी और योग्यतर जर्मनों की क़द्र नहीं की जाती थी, इसका दिग्दर्शन लेसिंग ने स्यलहाइम के साथ इस पात्र को रख कर कराया है।

मिना

अंक पहला

दृश्य पहला

जुष्ट

जुष्ट—(जुष्ट कोने में बैठे-बैठे नींद में बड़बड़ाता है) बदमाश मैनेजर ! हमारे साथ ऐसा बर्ताव ! हाँ हाँ भाई ! ज़रा ज़ोर से लगाना ! (घूँसे को उठाता है और ऐसा करने से जाग पड़ता है) ओहो ! फिर वही। आँख झपकते ही मैं उस से भिड़ जाता हूँ। क्या ही अच्छा होता अगर उस के कुछ भी घूँसे लग जाते !—अरे ! देखो, यह तो दिन निकल आया ! मुझे फ़ौरन अपने बेचारे मालिक का पता लगाना चाहिए।—इस होटल का सत्यानाश हो ! मैं अपने चलते अब अपने मालिक को इस होटल में पैर न रखने दूँगा।·····न जाने उन्होंने रात कहाँ बिताई होगी ?

दृश्य दूसरा

होटल का मैनेजर और जुष्ट

मैनेजर—नमस्कार भाई जुष्ट, नमस्कार !·····अच्छा, इतने सवेरे उठ बैठे ! या कहना चाहिये कि इतनी देर में क्यों उठे ?

जुष्ट—तुम जो चाहो सो कहो।

मैनेजर—मैं तो सिवा नमस्कार के और कुछ नहीं कहता। और इस के लिए, मेरे ख़याल में, भाई जुष्ट को चाहिये कि मुझे धन्यवाद दें।

जुष्ट—हाँ! अनेक धन्यवाद!

मैनेजर—काफ़ी आराम न करने से आदमी चिड़चिड़ा हो ही जाता है। बेशक मेजर साहिब के यहाँ न लौटने के कारण तुम रात भर उन की बाट जोहते रहे हो।

जुष्ट—(स्वगत) भला, सारी बातों का पता यह कैसे लगा लेता है!

मैनेजर—ठीक है! मेरा अंदाज़ ठीक है!

जुष्ट—(मुँह फेर कर जाने को तैयार हो कर) आप का सेवक!

मैनेजर—(उसे रोक कर) नहीं भाई! ऐसा नहीं!

जुष्ट—अच्छा, तब न सही!

मैनेजर—अजी भाई जुष्ट! मुझे ऐसी आशा नहीं है कि कल की बात पर तुम अब तक गुस्से में हो! चौबीस घंटे में किसका क्रोध ठंडा नहीं पड़ जायगा।

जुष्ट—मेरा! चौबीस घंटे से ही क्या, मेरा क्रोध तो सदा बना रहेगा!

मैनेजर—क्या यह बात एक ईसाई को शोभा देती है?

जुष्ट—उसी तरह शोभा देती है जिस तरह एक इज्ज़तदार आदमी को, सिर्फ़ इस लिए कि वह कमरे का किराया तुरंत नहीं दे सकता, होटल से बाहर निकालकर सड़क पर ढकेल देना।

मैनेजर—छिः! ऐसी नीचता कौन करेगा?

जुष्ट—एक ईसाई मैनेजर !—मेरे मालिक को ! ऐसे भलेमानस को ! ऐसे अफसर को होटल से निकाल दिया !

मैनेजर—वाह ! उन को मैंने होटल से निकाल कर सड़क पर ढकेल दिया ? एक अफ़सर के प्रति सम्मान का भाव और ख़ासकर नौकरी से अलग किये गये अफ़सर के लिए मेरी हमदर्दी ऐसा करने के लिए मुझे कभी इजाज़त न देगी। मुझे तो खास ज़रूरत के कारण उन के लिए दूसरा कमरा तैयार कराना पड़ा था।—भई जुष्ट ! अब इस झगड़े को छोड़ो।—(बुलाता है) कोई है ! मैं दूसरी तरह से इसका बदला चुका दूँगा। (एक लड़का आता है) एक ग्लास लाओ; भाई जुष्ट को एक ग्लास पिलाओ; ज़रा बढ़िया सी !

जुष्ट—मैनेजर साहिब ! आप कष्ट न कीजिये। वह शराब ज़हर हो जावे जिसे·····ख़ैर, मैं क़सम नहीं खाऊँगा; अभी तो मेरा पेट ख़ाली ही है।

मैनेजर—(शराब की बोतल और ग़लास लाते हुए लड़के से) लाओ, हटो !—अच्छा, भाई जुष्ट ! देखो कितनी बढ़िया है; तेज़, मज़ेदार और फ़ायदेमंद। (ग्लास भर कर और उस की ओर बढ़ा कर) देर तक जागते रहने से, तुम्हारी परेशान तबियत को ज़रूर यह ठीक कर देगी !

जुष्ट—(स्वगत) मुझे लेनी तो न चाहिये !—तो भी इस के गँवारपन के कारण मैं अपने स्वास्थ्य को क्यों ख़राब करूँ ? (लेकर पी जाता है)

मैनेजर—(पीने के लिए ग्लास उठा कर) भई जुष्ट ! ईश्वर तुम को सुखी रक्खे !

जुष्ट—(ग्लास लौटाते हुए) ख़राब नहीं है ! लेकिन, मैनेजर साहब ! मैं तो यही कहूँगा कि तुम गँवार आदमी हो।

मैनेजर—ऐसा नहीं, ऐसा नहीं ! ·· अच्छा, एक ग्लास और लो; एक टाँग पर कोई भली भाँति खड़ा नहीं हो सकता।

जुष्ट—(पीने के बाद) मैं ज़रूर कहूँगा—अच्छी, बहुत अच्छी ! क्या घर की ही बनी है ?

मैनेजर—ज़रूर ! यह ख़ूब कहा ! —भई, यह तो बड़े मशहूर कारख़ाने की बनी हुई बढ़िया शराब है।

जुष्ट—देखो, भाई ! अगर मैं मक्कारी कर सकता तो कम से कम ऐसी चीज़ के लिए ज़रूर करता; लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे कहना ही पड़ता है कि तुम उजड्ड गँवार आदमी हो।

मैनेजर—मेरे जीवन भर में कभी किसी ने मुझे ऐसा नहीं कहा।······ अच्छा, भई जुष्ट ! एक बार और सही; तीन तो शुभ सख्या है।

जुष्ट—बहुत ठीक ! (पी जाता है)। बहुत बढ़िया, सचमुच बहुत बढ़िया ! —लेकिन सच बोलना भी एक अच्छी बात है।—इस लिए मैनैजर साहब ! सच तो यही है कि तुम असभ्य आदमी हो।

मैनेजर—अगर ऐसा ही होता तो क्या मैं तुम्हारी इस बात को चुपचाप सह लेता ?

जुष्ट—जी हाँ ! कहीं गंवार आदमो में भी हिम्मत होती है ?

मैनेजर—अच्छा तो एक बार और सही। तीन बलवाली डोर से चार बलवाली ज़्यादा मज़बूत होती है।

जुष्ट—अब बस करो, अति ठीक नहीं होती। भला तुमको इससे लाभ ही क्या होगा? बोतल में एक बूंद के रहने तक मैं अपनी बात पर डटा रहूँगा। छिः! मैनेजर साहब, ऐसी बढ़िया शराब तुम रखते हो, फिर भी ऐसा गँवारपन!—मेरे मालिक जैसे आदमी को, जो साल भर से ज़्यादा तुम्हारे यहाँ रह चुका हो, जिससे तुम को बहुत कुछ आमदनी हो चुकी हो, और जो अपने जीवन भर में एक पैसे का भी किसी का देनदार नहीं रहा हो,—ऐसे आदमी को उस के पीठपीछे उसके कमरे से केवल इस कारण से बाहर निकाल दिया कि उसने कोई दो महीने से तुम्हारा हिसाब नहीं चुकाया था और वह पहले की तरह अब ज़्यादा ख़र्च नहीं कर सकता।

मैनेजर—नहीं; बल्कि इस वजह से कि मुझे उस कमरे की अधिक ज़रूरत थी, और मुझे पहले से ही विश्वास था कि अगर हम उन के आने की थोड़ी सी प्रतीक्षा कर सकते तो मेजर साहब खुद खुशी से कमरा ख़ाली कर देते। क्या ऐसे परदेसी भले लोगों को अपने स्थान से वापिस भेज देना मेरे लिए उचित होता? क्या ऐसे अच्छे सौदे को दूसरे होटलवाले के पंजे में जान-बूझ कर दे देना बुद्धिमानी की बात होती? इसके सिवाय, उन को और कहीं जगह मिलनी भी कठिन होती। इन दिनों सारे होटल खचाखच भरे हुए हैं। क्या ऐसी युवती और

सुंदरी के लिए कहीं रास्ते में पड़ा रहना उचित और संभव था? तुम्हारे मालिक का उदार चरित इसे कभी नहीं सहन कर सकता। कमरा बदल देने से तुम्हारे मालिक की हानि ही क्या हुई? क्या मैंने उनको दूसरा कमरा नहीं दे दिया?

जुष्ट—जी हाँ! ज़रूर। उस कमरे का क्या कहना है! वह तो कबूतर-ख़ाने के पास और पड़ोसी की चिमनियों के बीच में है।

मैनेजर—क्या किया जाय। कमबख़्त पड़ोसी के मकान से घिर जाने के पहले इस कमरे के सामने का दृश्य बड़ा सुंदर था!—लेकिन, इस को छोड़कर, कमरा बिल्कुल साफ़ सुथरा और सजा हुआ है।

जुष्ट—शायद पहले ऐसा ही दृश्य रहा हो!

मैनेजर—नहीं, एक तरफ़ से दृश्य अब भी सुंदर है।······और, भाई जुष्ट! उसके पास जो तुम्हारी कोठरी है वह तो ठीक है न? उस में तो कोई कमी नहीं? हाँ, उसकी चिमनी शायद जाड़ों में कुछ धुआँ देती है—

जुष्ट—परंतु गर्मी में ख़ासी शोभा देती है!—जान पड़ता है कि इतने पर भी तुम हमारा मज़ाक़ कर रहे हो!

मैनेजर—नहीं, भाई जुष्ट! ऐसा हरगिज़ नहीं।

जुष्ट—भाई जुष्ट को गरम न करो, नहीं तो—

मैनेजर—क्या मैं तुमको गरम कर रहा हूं? हां, यह शराब का असर हो सकता है।

जुष्ट—एक अफ़सर को, मेरे मालिक जैसे आदमी को !...या एक बरख़ास्त किए हुए अफ़सर को तुम अफ़सर नहीं समझते, जो चाहे तो तुम्हारी गर्दन तोड़ सकता है ? कुछ ही समय पहले, युद्ध के दिनो में, तुम लोग कितने नम्र और दब्बू बने हुए थे ! उन दिनों तुम लोग प्रत्येक अफ़सर को माननीय और प्रत्येक सिपाही को वीर और भला आदमी समझते थे। परंतु इन थोड़े ही दिनों से, युद्ध के बाद शाति स्थापित हो जाने पर, तुम लोग इतराने लगे हो !

मैनेजर—भाई जुष्ट ! तुम इतने आपे से बाहर क्यो हुए जाते हो ?

जुष्ट—हाँ ! हाँ ! मैं ऐसा ही करूँगा।

दृश्य तीसरा

मेजर ट्यलहाइम, मैनेजर और जुष्ट

मेजर—(प्रवेश करते हुए) जुष्ट !

जुष्ट—(यह समझ कर कि यह आवाज़ मैनेजर की है) जुष्ट ! क्या हम आपस में इतने बेतकल्लुफ़ हैं ?

मेजर—जुष्ट !

जुष्ट—मैं तो समझता था कि तुम्हारे लिए मैं 'भाई जुष्ट' हूँ !

मैनेजर—(मेजर टयलहाइम को देख कर) शिह ! शिह ; भाई जुष्ट ! भाई जुष्ट ! ज़रा देखो तो सही; तुम्हारे मालिक—

मेजर—जुष्ट ! मालूम होता है तुम झगड़ा कर रहे हो ! मैंने तुमको क्या आज्ञा दी थी ?

मैनेजर—झगड़ा ? नहीं, हुज़ूर ! ऐसा नहीं हो सकता ! ईश्वर ऐसा न करे ! क्या आप का गुलाम ऐसी हिम्मत कर सकता है कि उस के साथ झगड़ा करे जिसको आप की नौकरी का सौभाग्य प्राप्त है ?

जुष्ट—(स्वगत) क्या ही अच्छा होता अगर इस खुशामदी की पीठ पर एक कोड़ा पड़ जाता !

मैनेजर—यह सच है कि भाई जुष्ट अपने मालिक के पक्ष में बोल रहे थे, और वह भी ज़रा तेजी के साथ। परंतु यह ठीक ही है। इसके लिए मैं उनकी और भी इज़्ज़त करता हूँ और उनको ज़्यादा पसंद करता हूं।

जुष्ट—(स्वगत) जी चाहता है कि इसके दाँतों को झाड़ दिया जाय !

मैनेजर—बस यही ज़रा बुरी बात है कि उनको अकारण जोश आ जाता है। मुझे तो पूरा यक़ीन है कि हुज़ूर मुझ पर इस बात से नाखुश नहीं हैं कि मैंने मजबूर होकर—ज़रूरत पड़ने से—

मेजर—बस जनाब ! काफ़ी है ! मैं तुम्हारा ऋणी हूं। तुमने मेरे पीठ-पीछे मेरा कमरा खाली करा लिया। तुम्हारा हिसाब चुकाना ज़रूरी है। मुझे कोई दूसरी ठहरने की जगह ढूँढनी चाहिए। यह बात ठीक ही है !—

मैनेजर—कोई दूसरी जगह ? हुज़ूर ! क्या आप इस स्थान को छोड़ कर और जगह जाना चाहते हैं ? ओह ! मैं बड़ा अभागा हूं। नहीं,

ऐसा कभी नहीं होगा ! आप के ऐसा करने के पहले ही उस रमणी को स्थान ख़ाली कर देना होगा। मेजर साहब की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ वह उस कमरे को नहीं ले सकतीं। वह कमरा आप का ही है; उस रमणी को चला जाना पड़ेगा; मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता।—हुज़ूर ! मैं जाता हूं—

मेजर—भाई ! एक बेवक़ूफ़ी की जगह दो बेवक़ूफ़ी मत करो। उस रमणी को उस कमरे में ही रहने दो—

मैनेजर—ऐसा कैसे हो सकता है जब कि हुज़ूर का ख़्याल है कि मैंने, अविश्वास के कारण या अपने हिसाब के चुक जाने की चिंता से, ऐसा किया ? क्या मैं यह नहीं जानता कि हुज़ूर मेरे हिसाब को चाहे जब चुका सकते हैं ? वह मोहरबन्द बटुआ अभी तक ज्यों का त्यों सुरक्षित है, जिसमें २००० की अशर्फ़ियाँ थीं और जिसको आपने लिखने की डेस्क में रक्खा था।

मेजर—आशा तो ऐसी ही है; आशा है और भी मेरा सामान इसी तरह सुरक्षित है। —तुम्हारा हिसाब चुक जाने पर जुष्ट सारे सामान को समझ लेगा।

मैनेजर—सच मुच उस बटुये को देखते ही मैं ठिठक गया। मैं सदा से श्रीमान् को तरीक़े से काम करने वाला और दूरदर्शी मनुष्य समझता रहा हूँ। यह नहीं हो सकता कि ऐसा मनुष्य अपना सर्वस्व नष्ट कर डाले और पास में पैसा भी न रक्खे। तो भी यदि मैं पहले से जानता होता कि डेस्क में नक़द रक़म रक्खी है—

मेजर—उस दशा में शायद तुम मेरे साथ कुछ अधिक भलमनसाहत का बर्ताव करते। मैं तुम्हें समझता हूँ ! जनाब ! मेरे पास से कृपा करके अब चले जाइये। मैं अपने नौकर से कुछ कहना चाहता हूँ।

मैनेजर—लेकिन, सरकार ! —

मेजर—चलो जुष्ट! यह भलेमानस अपने होटल में यह नहीं देखना चाहते कि मैं तुमको कोई आज्ञा दूँ—

मैनेजर—नहीं, हुज़ूर ! मैं अभी जाता हूँ। मेरा होटल आप के लिए हाज़िर है।

[मैनेजर जाता है।

———

दृश्य चौथा

मेजर टय्लहाइम और जुष्ट

जुष्ट—(ज़मीन पर पैर पटक कर और मैनेजर की ओर पीछे से थूक कर) छि: !

मेजर—क्या मामला है ?

जुष्ट—गुस्से के मारे मुझ से बोला नहीं जाता।

मेजर—मानों तुम्हें क्रोध का रोग है !

जुष्ट—और आप के बारे में तो मैं क्या कहूँ ? अपनी जान की क़सम ! आपने ही इस ज़ालिम बेईमान की हिम्मत बढ़ा रक्खी है। जी

चाहता है कि मैं इन हाथो से इसका गला घोट दूँ ! और दाँतों से इसे चबा डालूँ, चाहे फाँसी पर ही क्यों न चढ़ना पड़े !

मेजर—अरे जंगली जानवर !

जुष्ट—हाँ, ऐसे आदमी से तो जंगली जानवर होना अच्छा है !

मेजर—बता ता सही, तू चाहता क्या है ?

जुष्ट—यही चाहता हूँ कि आप यह समझते कि वह आप की कितनी ज़्यादा बेइज़्ज़ती करता है।

मेजर—और तब ?

जुष्ट—उससे बदला लेते। ......नहीं, ऐसा ठीक नहीं होगा। वह आप से बहुत छोटे दर्जे का आदमी है।

मेजर—लेकिन उससे बदला लेने का काम तुम को सौंपा जा सकता है ? पहले से ही मेरा यह विचार था। मैं चाहता हूँ कि वह अब फिर मुझसे न मिले और तुम्हारे द्वारा अपना हिसाब निबटले। मैं समझता हूँ कि तुम मुट्ठी भर धन को घृणा के साथ उसकी तरफ़ फेंक सकते हो।

जुष्ट—वाह ! वाह ! बदला लेने का क्या ही अच्छा तरीक़ा है !

मेजर—लेकिन यह कुछ दिनों के लिए टालना होगा। मेरे पास इस समय कुछ भी नक़द नहीं है; और मैं कहीं से माँग भी नहीं सकता।

जुष्ट—कुछ भी नक़द नहीं ? तो वह बटुआ कैसा है जिसमें २००० की अशर्फ़ियाँ रक्खी हैं और जिसको मैनेजर ने आप की डेस्क में पाया है !

मेजर—वह तो एक आदमी की धरोहर है।

जुष्ट—वही तो न जिसको आपका पुराना सार्जन्ट चार पाँच सप्ताह पहले रख गया था ?

मेजर—हाँ वही, जिसको पाउल वेर्नर रख गया है।

जुष्ट—क्या आपने अभी तक उस धन से कुछ काम नहीं लिया ? आप उसका मनमाना उपयोग कर सकते हैं। इसकी ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर होगी—

मेजर—ज़रूर !

जुष्ट—पाउल वेर्नर ने मुझ से सुना था कि युद्ध-विभाग के ख़िलाफ़ जो आप का दावा था उसको बड़े हाकिमों ने खटाई में डाल रक्खा है। उसने सुना था—

मेजर—कि मैं अभी नहीं, तो बहुत जल्द भिखारी हो जाऊँगा।—जुष्ट ! मैं तुह्मारा बड़ा कृतज्ञ हूँ—इससे पाउल वेर्नर अपनी थोड़ी सी पूँजी को मेरे सुपुर्द करने को तैयार हो गया।—यह अच्छा हुआ कि मैं इस बात को ताड़ गया।—जुष्ट ! सुनो, मुझे अपना हिसाब फ़ौरन दो। हम एक साथ नहीं रह सकते। ——

जुष्ट--क्यों ! कैसे !

मेजर—बस एक शब्द भी न बोलो। कोई आ रहा है।—

———

दृश्य पाँचवाँ

एक शोकातुर महिला, मेजर व्यलहाइम, जुष्ट

महिला—महाशय ! कृपया क्षमा कीजिये—

मेजर—देवि ! आप किसकी तलाश में हैं ?

महिला—उन्हीं महानुभाव की जिनसे बोलने का मुझे इस समय सौभाग्य प्राप्त है। अब आप मुझे नहीं पहचानते ? मै आपके पुराने कप्तान की विधवा हूँ।

मेजर—हे भगवन् ! देवि ! आप तो बिल्कुल बदल गई हैं !

महिला—मैं उस रोगशय्या से अभी उठी हूँ जिस पर कि अपने प्रिय पति के वियोग के शोक से पड़ी थी। मेजर महाशय ! मैं आप को बहुत सवेरे कष्ट देने आई हूँ। लेकिन मैं इस समय एक गाँव को जा रही हूँ जहाँ एक कृपालु परंतु अभागिनी देवी ने इस समय के लिए मुझे आश्रय देने को कहा है।

मेजर—(जुष्ट से) जाओ, बाहर चले जाओ।

दृश्य छठा

महिला, मेजर व्यलहाइम

मेजर—देवि ! आप खुलकर बातें कहिये। मेरे सामने आप को अपने दुर्भाग्य के कारण लज्जित न होना चाहिये। क्या मैं आपकी सहायता किसी तरह कर सकता हूँ ?

महिला—मेजर महाशय !

मेजर—देवि ! मुझे आप पर दया आती है। मैं किस प्रकार आपकी सहायता कर सकता हूँ ? आप जानती हैं कि आप के पति मेरे मित्र थे । मैं फिर कहता हूँ कि वे मेरे मित्र थे। और मैं मित्र शब्द का प्रयोग बहुत कम लोगों के लिए करता हूँ।

महिला—इस बात को मुझ से अधिक अच्छी तरह कौन जानता है कि आप दोनों एक दूसरे की मित्रता के लिए कितने योग्य थे। यह स्वाभाविक था कि मरते समय उन को अपने अभागे पुत्र और पत्नी का ध्यान अधिक रहे। बस इस को छोड़कर, अंतिम समय तक उन को आप का ध्यान रहा और उन की ज़ुबान पर आप का ही नाम था।

मेजर—देवि ! बस रहने दो ! मैं आप के साथ रोता; पर आज मेरी आँखों में आँसू ही नहीं रहे। क्या करूँ ! आप मेरे पास ऐसे समय आई हैं जब कि मैं झट विधाता के विरुद्ध बड़बड़ाने को तैयार हो सकता हूँ।—ओह ! धर्मात्मा मार्लोफ़ !—देवि ! जल्द कहिये। आप क्या चाहती हैं ? यदि मैं आपकी सहायता की योग्यता रखता हूँ, यदि मैं आप की सहायता कर सकता हूँ—

महिला—मैं अपने पति की अंतिम इच्छा को पूरा किये बिना नहीं जा सकती। मृत्यु के कुछ ही पहले मेरे पति को स्मरण आया कि वे आप के ऋणी होकर मर रहे हैं। उन्होंने मुझे शपथ दी कि ज्यों ही मेरे पास रुपया आवे, मैं आपका ऋण चुका दूँ।

मैंने उन की गाड़ी बेच दी है और उन के रुक्क़े को वापिस लेने आई हूँ।

मेजर—क्या ! क्या आप इस लिए आई हैं ?

महिला—जी हाँ, इसी लिए। कृपया मुझे रुपया गिन देने की आज्ञा दीजिये।

मेजर—नहीं देवि ! मार्लोफ़ मेरा ऋणी ! यह नहीं हो सकता। तो भी देख लेना चाहिये। (पाकेटबुक निकालकर उस के पन्ने उलटता पुलटता है) मुझे तो कुछ पता नहीं चलता।

महिला—निस्संदेह आप उस रुक्क़े को कहीं रखकर भूल गये हैं। परंतु रुक्क़े के मिलने न मिलने से क्या। कृपया मुझे रुपया गिनने दीजिये।

मेजर—नहीं, देवि ! नहीं। ऐसी चीज़ों को रखकर भूल जाने की मेरी आदत नहीं है। उसका मेरे पास न होना इस बात का सबूत है कि वह मेरे पास कभी नहीं था। या उस का हिसाब पहले ही चुका दिया गया है और मैंने उसे वापिस कर दिया है।

महिला—मेजर महाशय !

मेजर—देवि ! इसमें कोई संदेह नहीं कि मार्लोफ़ पर मेरा कुछ भी न चाहिये। मुझे यह भी याद नहीं कि वे कभी मेरे क़र्ज़दार थे। उल्टा उन्होंने मुझे अपना क़र्ज़दार छोड़ा है। उस मनुष्य से उऋण होने के लिए मैं अब तक कुछ भी नहीं कर सका हूँ जो बराबर छः साल तक, सुख और दुःख में, संपत्ति और विपत्ति में, मेरा साथी रहा था। मैं यह नहीं भूलूँगा कि

वे एक पुत्र छोड़कर मरे हैं। वह मेरे पुत्र के समान होगा। ज़रा मैं इन झंझटों से जिन्होंने आजकल मुझे घेर रक्खा है फ़ुर्सत पा जाऊं।

महिला—अहा परोपकारी नरश्रेष्ठ ! परंतु आप मुझे इतना छोटा न समझें ! आप इस धन को स्वीकार कीजिये। मुझे तभी शाति मिलेगी।

मेजर—आपकी शाति के लिए मेरे यह विश्वास दिला देने से अधिक और क्या चाहिये कि यह रुपया मेरा नहीं है ? क्या आप यह चाहती हैं कि मैं अपने मित्र के अनाथ बच्चे को लूट लूँ ? देवि ! सच पूछो तो यह लूटना ही है। यह धन उसी का है। इस धन को उसी के लिए कहीं लगा देना चाहिये।

महिला—मैं आपका अभिप्राय समझती हूँ। यदि मैं ठीक ठीक यह नहीं जानती कि दूसरे के अनुग्रह को किस तरह स्वीकार करना चाहिये तो आप क्षमा करें। भला आपने यह कहाँ सीखा कि जिस बात को माता अपने प्राणों की रक्षा के लिए नहीं कर सकती उसे अपने बच्चे के लिए कर सकती है ? अच्छा मैं जाती हूँ—

मेजर—जाओ, देवि ! जाओ ! आप की यात्रा कुशलता से बीते ! मैं यह नहीं कहता कि आप अपना समाचार मुझे देती रहना। सम्भव है, आपका समाचार मुझे ऐसे समय मिले कि मैं उस से कुछ भी लाभ न उठा सकूँ। हां, एक बात, जो बहुत ही ज़रूरी थी। उसे तो मैं भूल ही गया। मार्लोफ़ का भी कुछ

हिसाब युद्धविभाग के ऊपर बाक़ी है। उन का हिसाब उतना ही पक्का है जितना कि मेरा। अगर मेरा हिसाब चुकाया गया तो उन का भी चुकाया जायगा। उस की ज़िम्मेदारी मुझ पर है।

महिला—आः महाशय! ... लेकिन मैं क्या कह सकती हूँ? शुभ कामों के करने का सच्चा संकल्प, ईश्वर की दृष्टि में, उन के करने के बराबर होता है। मेरे प्रेम के आँसुओं के साथ-साथ आप को इस का पुण्य प्राप्त हो!

[जाती है।

दृश्य सातवाँ

मेजर ट्यलहाइम

मेजर—बेचारी सती! मुझे इस रुक्क़े को फाड़ डालना न भूलना चाहिए। (अपनी पाकेट-बुक से कुछ पन्ने लेकर फाड़ डालता है) कौन कह सकता है कि मेरी ही ज़रूरतें कभी मुझे इन पन्नों से लाभ उठाने के लिए तैयार न कर दे!

दृश्य आठवाँ

जुष्ट, मेजर ट्यलहाइम

मेजर—कौन है? जुष्ट! क्या तुम हो?

जुष्ट—(आँखें पोंछते हुए) जी हाँ।

मेजर—क्या तुम रो रहे थे ?

जुष्ट—मैं रसोईघर में अपना हिसाब तैयार कर रहा था, और वहाँ धुआँ भरा था। लीजिये, यह मेरा हिसाब है।

मेजर—लाओ, दो।

जुष्ट—सरकार मेरे ऊपर रहम करें। मैं जानता हूँ कि आप के साथ लोगों ने अच्छा बर्ताव नहीं किया है; तो भी—

मेजर—तुम क्या चाहते हो ?

जुष्ट—इस बरख़ास्तगी से तो मैं मौत को ज़्यादा पसंद करता।

मेजर—मुझे अब तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। मुझे नौकरों के बिना रहना सीखना चाहिये। (हिसाब के पर्चे को खोलकर पढ़ता है)

"मेजर साहब पर मेरा चाहिए" :—

	*थेलर—ग्रोशन—फ़०
६ थेलर महीने के हिसाब से साढ़े तीन महीने की तनख़्वाह	२१—०—०
इस महीने के शुरू से फुटकर ख़र्च	१—७—६
जोड़	२२—७—६"

ठीक, और यह उचित है कि तुम को इस महीने की पूरी तनख़्वाह दी जावे।

जुष्ट—कृपया दूसरी तरफ़ भी—

---

*१२ फ़ेनिग = १ ग्रोशन; २४ ग्रोशन = १ थेलर। एक थेलर मूल्य में लगभग तीन शिलिंग के बराबर होता था।

मेजर—अच्छा ! और भी है ? (पढ़ता है)

"मेजर साहब का मुझ पर चाहिए—

	थे०—मो०—फ़े०
फ़ौजी सर्जन को मेरे कारण दिये...	२५—०—०
मेरी बीमारी में सेवा शुश्रूषा के लिए दिये गये	३६—०—०
मेरे पिता को, उस का घर जल जाने पर और लुट जाने पर, मेरे कहने पर उधार दिये गये	५०—०—०
(इस में उस को इनाम में दिये गये दो घोड़े शामिल नहीं हैं)	
	————
जोड़	११४—०—०
इनमें से ऊपर के २२—७—६ घटा दिये	२२—७—९
	————
मेरे मालिक का मुझ पर बाक़ी रहा...	६१—१६—३ ,,

भले आदमी ! क्या तू पागल हो गया है ?

जुष्ट—मैं मानता हूँ कि आप का मुझ पर इस से भी ज़्यादा रुपया चाहिए। पर उस को लिखना फ़ज़ूल ही था। मैं वह सब अदा नहीं कर सकता। और अगर आप मुझसे मेरी वर्दी भी ले लेंगे— जिस पर अभी तक मेरा हक़ नहीं हुआ है—

तब तो यही अच्छा होगा कि आप मुझे किसी अनाथालय में मर जाने दें।

मेजर—तुम मुझे क्या समझते हो ? तुम पर मेरा कुछ भी नहीं चाहिए। मैं तुम्हारी सिफ़ारिश अपने एक मित्र से कर दूँगा। उन के पास तुम यहाँ की निस्बत ज़्यादा अच्छी तरह रहोगे।

जुष्ट—मुझ पर आप का कुछ न चाहिये ; तिस पर भी आप निकाल रहे हैं !

मेजर—इस लिए कि मैं आगे तुम्हारा क़र्ज़दार नहीं होना चाहता।

जुष्ट—सिर्फ इसी लिए ? ... जैसे यह पक्की बात है कि मैं आपका क़र्ज़दार हूँ वैसे ही यह भी ठीक है कि आप मुझे नहीं निकालेंगे।—सरकार ! आप जो जी चाहे सो करें, मैं आप के ही पास रहूँगा ; ज़रूर रहूँगा।—

मेजर—क्या इन ढिठाई, अक्खड़पन और ऐंठ से भरी काररवाइयों को और बदला लेने की इच्छा को बिना छोड़े ही ?

जुष्ट—आप मुझे चाहे जितना बुरा बनायें, तो भी मैं अपने को अपने कुत्ते से ज़्यादा बुरा न समझूँगा। पिछले जाड़ों में जब मैं एक दिन शाम के समय नदी के किनारे घूम रहा था, मैंने एकाएक एक दुःखभरी आवाज़ सुनी। जिधर से आवाज़ आई थी मैं उधर चला गया। मैंने सोचा कि वह आवाज़ किसी आदमी के बच्चे की होगी। पर ज्यों ही झुक कर मैंने पानी से उस प्राणी को निकाल कर देखा तो मालूम हुआ कि वह कुत्ता है। मैंने सोचा, यह भी अच्छा ही हुआ। कुत्ता मेरे पीछे-

पीछे आने लगा। पर मुझे कुत्ते अच्छे नहीं लगते। मैंने उसे भगाना चाहा—लेकिन सब व्यर्थ। मैंने उसे कोड़े भी मारे—परन्तु व्यर्थ ही। रात भर मैंने उसे अपने कमरे से बाहर ही रक्खा। वह दरवाज़े के पास ही बैठा रहा। जब कभी वह मेरे पास आता, मैं उसे लात से ठुकरा देता। वह किकियाता, मेरी ओर देखता और अपनी पूँछ हिलाने लगता। अब तक मैंने उसे अपने हाथ से रोटी का टुकड़ा नहीं दिया है, तो भी वह मेरा ही कहना मानता है। और मैं ही उसे हाथ लगा सकता हूँ। वह मेरे सामने उछलने-कूदने लगता है, और बिना कहे तरह-तरह के खेल दिखाता है। वह बद-सूरत है। परन्तु है बहुत अच्छा जानवर। अगर उस का यही ढंग बराबर रहा तो मैं उस से घिन करना छोड़ दूँगा।

मेजर—(स्वगत) ठीक जैसे मैं इस के साथ बर्ताव करता हूँ!...नहीं, ऐसा कोई नहीं जिसमें कुछ भी आदमियत न हो। — — अच्छा जुष्ट ! अब तुम नहीं निकाले जाओगे।

जुष्ट—नहीं; कभी नहीं! ...आप बिना नौकरों के गुज़र करना चाहते थे? आप अपने ज़ख्मों को और इस बात को कि आप एक ही हाथ से काम ले सकते हैं, भूलते हैं। आप अपने कपड़े भी तो अपने आप नहीं पहन सकते। मेरा आपके साथ रहना बहुत ज़रूरी है। और मैं—मेजर साहब! मैं शेखी नहीं बघारता—मैं ऐसा नौकर हूँ जो, अगर बहुत ही बुरा समय

आ पड़े तो अपने मालिक के वास्ते भीख भी माँग सकता है और चोरी तक कर सकता है।

मेजर—जुष्ट ! तुम हमारे पास नहीं रह सकते।

जुष्ट—बहुत अच्छा, सरकार !

——:o:——

दृश्य नवाँ

एक नौकर, मेजर ट्यलहाइम, जुष्ट

नौकर—भाई सुनो !

जुष्ट—क्या मामला है ?

नौकर—क्या तुम मुझे उन अफ़सर का पता बता सकते हो जो कल तक उस कमरे में (उस कमरे की तरफ़ इशारा करते हुए जिसमें से वह आया है) रहते थे ?

जुष्ट—हां बड़ी आसानी से। उन के लिए तुम क्या लाये हो ?

नौकर—किसी चीज़ के न होने पर जिसे हम लोग सदा लाते हैं—नमस्कार आदि। मेरी मालकिन को पता लगा है कि उन के कारण ही अफ़सर साहब को यह जगह छोड़नी पड़ी है। मेरी मालकिन जानती हैं कि शिष्टाचार किसे कहते हैं। और इसी लिए मुझे उन अफ़सर से क्षमा माँगनी है।

जुष्ट—अच्छा तो क्षमा माँग लो ; वे वहाँ खड़े हैं।

नौकर—यह क्या करते हैं ? और नाम क्या है ?

मेजर—भई ! मैंने तुम्हारा संदेश पहले ही सुन लिया। तुम्हारी मालकिन का यह विनीत व्यवहार बिल्कुल अनावश्यक है; तो भी मैं इसे यथोचित रीति से स्वीकार करता हूं। उन को भी मेरी ओर से नमस्कार कहना ····तुम्हारी मालकिन का नाम क्या है ?

नौकर—उन का नाम ? हम लोग उनको कुमारी जी कहते हैं।

मेजर—उनके वंश का नाम क्या है ?

नौकर—मैंने उसे अब तक नहीं सुना; और उन का वंश पूँछना मेरा काम भी नहीं। मैं ऐसा करता हूं कि मामूली तौर पर हर छः हफ्तों में मुझे नया मालिक मिल जावे। मुझे उन के नामों के जानने की परवा नहीं।

जुष्ट—वाह ! भाई वाह !

नौकर—कुछ दिन पहले ड्रेस्डन शहर में मैं इनकी नौकरी में आया था। मालूम पड़ता है कि वह यहां अपने प्रेमी को ढूँढ़ने आई हैं।

मेजर—बस, रहने दो। मैं तुम्हारी मालकिन का नाम जानना चाहता था, न कि उन की निजी बातें। जाओ !

नौकर—भाई ! मैं तो ऐसे आदमी को मालिक नहीं बना सकता।

———

दृश्य दसवाँ

मेजर ट्यलहाइम, जुष्ट

मेजर—जुष्ट ! ऐसा करो कि हम इस स्थान से फ़ौरन निकल चलें। इस नई आई हुई महिला का विनीत व्यवहार, मैनेजर की शठता की अपेक्षा, मुझ को ज़्यादा असह्य है। लो, यह अंगूठी लो। क़ीमती चीज़ों में से मेरे पास यही रह गई है। मैं नहीं समझता था कि इस को इस प्रकार काम में लाऊँगा। ८० अशर्फ़ियों में इस को कहीं गिर्वी रख आओ ! मैनेजर का हिसाब ३० से ज़्यादा का नहीं हो सकता। उस का हिसाब चुका दो; और यहां से मेरा असबाब ले चलो—आः, कहाँ?—जहाँ चाहो। होटल जितना ही ज़्यादा सस्ता हो उतना ही अच्छा है। मैं तुम को पास की काफ़ी की दूकान पर मिलूँगा। मैं जाता हूँ; सब काम ठीक-ठीक करना।

जुष्ट—मेजर साहब ! आप बेफ़िक्र रहें।

मेजर—(वापिस आकर) ख़ासकर मेरे पिस्तौलों को, जो कि बिस्तरे के पास लटक रहे हैं, न भूल जाना।

जुष्ट—मैं कुछ भी नहीं भूलूँगा।

मेजर—(फिर वापिस आकर) एक और बात; साथ में अपने कुत्ते को भी लाना। सुनते हो ? जुष्ट !

———

ग्यारहवाँ दृश्य

जुष्ट

जुष्ट—कुत्ता पीछे नहीं रहेगा। इस की ख़बरगीरी वह ख़ुद कर लेगा। ······हा! इस क़ीमती अगूठी का मालिक ने अब तक रख छोड़ा था! और उंगली में पहिनने के बजाय जेब में डाल रक्खा था!—मैनेजर साहब! हम लोग अभी इतने ग़रीब नहीं हैं जितने कि दिखलाई देते हैं। अय सुन्दर प्यारी अंगूठी! मैं तुझे उसी के पास गिर्वी रक्खूँगा। मैं जानता हूं, उस को इस बात से बड़ा रंज होगा कि तू उस के घर में पूरी की पूरी हज़म न हो सकेगी।—आह!—

दृश्य बारहवाँ

पाउलवेर्नर, जुष्ट

जुष्ट—ओहो, पाउलवेर्नर! भाई! नमस्कार। बहुत दिनों में शहर आये हो!

पाउलवेर्नर—गाँव का सत्यानाश हो! उससे तो मेरा जी उकता गया। ·····दोस्त मज़ा है; मैं कुछ और रुपया लाया हूँ! मेजर साहब कहाँ हैं?

जुष्ट—वे तो तुम्हें मिल गये होंगे। अभी तो नीचे उतर कर गये हैं।

पाउल०—मैं पिछले ज़ीने से आया हूँ ।······अच्छा, उन का क्या हाल है ? मैं तो यहाँ पिछले हफ़्ते ही आ जाता, लेकिन—

जुष्ट—फिर देर क्यों हो गई ?

पाउल०—जुष्ट ! क्या तुमने कभी महाराज हिरैक्लिउस का नाम सुना है ?

जुष्ट—नहीं, कभी नहीं ।

पाउल०—तो क्या तुम पूरब के परम प्रसिद्ध वीर को नहीं जानते ?

जुष्ट—मैंने पूरब के ज्ञानियों के बारे में तो काफ़ी सुन रक्खा है, न कि तुम्हारे वीर महाराज के विषय में ।

पाउल०—भले आदमी ! मालूम होता है कि जैसे तुम बाइबिल नहीं पढ़ते, वैसे ही अख़बारों को भी नहीं पढ़ते । तो क्या तुम महाराज हिरैक्लिउस को नहीं जानते ? उस वीर को, जो फ़ारिस को जीत चुका है और थोड़े ही दिनों में तुर्कों पर चढ़ाई करने वाला है ? ईश्वर को धन्यवाद है कि कहीं न कहीं दुनिया में युद्ध चला ही जाता है ! मै बहुत दिनों से चाहता था कि कहीं फिर यहीं लड़ाई छिड़ जावे । परन्तु यहां तो लोग बड़े कायर हो गये हैं । वे ऐसा क्यों करने लगे ? उन्हें सदा अपनी प्राण-रक्षा का ही ख़्याल है । पर मैं सदा से सिपाही रहा हूँ; और फिर सिपाही ही बनूँगा ! थोड़े में—(अपने चारों तरफ़ ग़ौर से देखता है कि कोई उसे सुनता तो नहीं) जुष्ट ! किसी से कहना नहीं—मैं फ़ारिस इस लिये जा रहा हूँ कि महाराज हिरैक्लिउस की फ़ौज में भर्ती होकर तुर्कों के साथ लोहा लूँ ।

जुष्ट—तुम !

पाउल०—हाँ, मैं ही ! हमारे पुरखों ने तुर्कों के विरुद्ध बड़ी वीरता से लड़ाइयाँ लड़ी थीं; हम को भी यही करना चाहिए, अगर हम धर्मात्मा और अच्छे क्रिश्चियन बनना चाहते हैं। मैं मानता हूँ कि तुर्कों के विरुद्ध लड़ाई में उसका आधा भी मज़ा न आयगा जितना फ़्राँसीसियों के विरुद्ध लड़ने में। फिर भी, तुर्कों के विरुद्ध लड़ना लोक और परलोक दोनों के लिए अच्छा है। जानते हो न कि तुर्कों की तलवारें जवाहिरात से जड़ी हुई होती हैं ?—

जुष्ट—उनकी तलवारों से सिर कटवाने को मैं तो एक पग भी न जाऊँगा। मैं नहीं समझता कि तुम इतने पागल हो गये हो कि अपने छोटे से सुखमय घर-बार को छोड़कर चल दोगे ?—

पाउल०—ओह ! उसे तो मैंने साथ ले लिया है। देखो ! मैंने अपना घर-बार बेच डाला।

जुष्ट—बेंच डाला ?

पाउल०—देखो न ! ये सौ डकट* उसी बिक्री के हिसाब में मिले हैं। मेजर साहब के लिये मैं इनको लाया हूँ।—

जुष्ट—वे इनका क्या करेंगे ?

पाउल०—वे इनका क्या करेंगे ? ख़र्च करेंगे; खायेंगे पीयेंगे, या जो चाहेंगे सो करेंगे। उन के पास रुपया होना चाहिये; और यह बहुत बुरी बात है कि उन को अपने रुपयों के मिलने में इतनी

* एक डकट मूल्य में लगभग नौ शिलिंग के बराबर होता था।

दिक़्क़त हो रही है। लेकिन मैं जानता हूँ कि अगर मैं ही मेजर टय्लहाइम होता तो क्या करता। मैं तो यही सोचता—"यहाँ सब भाड़ में जावें, मैं तो पाउलवेर्नर के साथ फ़ारिस जाता हूँ।"······महाराज हिरैक्लिउस ने पाउलवेर्नर के बारे में नहीं, तो मेजर टय्लहाइम के विषय में ज़रूर सुन रक्खा होगा। काटसनहाइसेर्न की लड़ाई के हमारे कारनामे—

जुष्ट—हां, उन का हाल तो मैंने तुम से कई बार सुना है। क्या उन का वर्णन मैं ख़ुद तुम को सुना दूँ ?

पाउल०—उन का वर्णन तुम क्या करोगे !—अच्छा जाने दो, क्या मैं नहीं जानता कि युद्धभूमि की बातें तुम्हारी समझ में नहीं आतीं ? मैं सुअर के सामने अपने मोतियों को क्यों फेकूँ ?—लो, ये सौ डकट लो ; इन को मेजर साहब को दे देना। उन से कहना कि इन को भी बतौर अमानत के रख लें। मुझे अभी मण्डी जाना है। मैंने वहां जई के दो बोझ भेजे हैं। उन की बिक्री से भी जो आयगा उस को भी वे रख सकते हैं।—

जुष्ट—पाउल वेर्नर ! तुम्हारे विचार बड़े अच्छे हैं; पर तुम्हारा धन हमें न चाहिये। अपने डकटों को रहने दो; और अपनी पिछली अशर्फ़ियां भी, जब चाहो, जैसी की तैसी ले सकते हो।—

पाउल०—ऐसा ? क्या मेजर साहब के पास अभी रुपया है ?

जुष्ट—नहीं।

पाउल०—तो क्या उन्होंने कहीं से क़र्ज़ लिया है ?

जुष्ट—नहीं।

पाउल०—तो उन का ख़र्च कैसे चलता है ?

जुष्ट—इस तरह—शुरू में हम अपना हिसाब अपने नाम लिखवाते रहते हैं। जब कोई आगे लिखना नहीं चाहता और हम को अपने स्थान से निकाल देता है, तब जो कुछ हमारे पास होता है उसे गिर्वी रख देते हैं और स्थान बदल देते हैं।...अच्छा पाउलवेर्नर ! इस मैनेजर के साथ कोई चाल चलनी चाहिये।

पाउल०—अगर उसने मेजर साहब को दिक़ किया है, तो मैं तैयार हूँ।

जुष्ट—यह कैसा हो कि संध्या के समय, जब वह क्लब से लौटता है, हम उस की ताक में रहें और उसे पकड़कर अच्छी तरह उसकी मरम्मत कर दे ?

पाउल०—अँधेरे में ? छिपकर ?—एक के लिये दो आदमी ?—नहीं, यह ठीक न होगा।

जुष्ट—अथवा, अगर हम उस के मकान मे आग लगा दें ?

पाउल०—आग लगा दे ?—तो क्या यह कहना ठीक है कि तुमने कभी सिपाहीगीरी नहीं की, और सिर्फ़ कुली ही का काम किया है ?—छिः ! अच्छा, यह तो बतलाओ आख़िर मामला क्या है ?

जुष्ट—अच्छा चलो तो सही; देखो क्या होता है ? तुम सुनकर आश्चर्य करोगे।

पाउल०—तो क्या यहाँ शैतान का दौरदौरा है ?

जुष्ट—हाँ, ऐसा ही है। अच्छा आओ !

पाउल०—बहुत ठीक ! मैं तो भई फ़ारिस ही जाऊँगा।

——:o:——

अंक दूसरा

दृश्य पहला

स्थानः—कुमारी मिना का कमरा

मिना, फ़्रांसिस्का

मिना—(प्रातःकाल के कपड़े पहने हुये और अपनी घड़ी को देखते हुए) फ्रांसिस्का ! हम बहुत जल्दी उठ बैठी हैं। हमें समय काटना कठिन होगा।

फ़्रांसिस्का—इन निगोड़े शहरों में सोना कठिन है। रात भर गाड़ियों की चर-चर, पहरे वालों की हू-हू, ढोलों की ढम-ढम, बिल्लियों की म्याऊँ म्याऊँ और सिपाहियों का शोर सुनाई देता है। मानों रात का सोने से कोई संबंध ही नहीं।—कुमारी जी ! लीजिये, चाय पी लीजिये।

मिना—नहीं, मैं चाय नहीं चाहती।

फ़्रांसिस्का—अच्छा कुछ मिठाई लाती हूं।

मिना—अपने लिए भले ही लाओ।

फ़्रांसिस्का—अपने लिए ? मेरे लिए इकेले खाना-पीना ऐसा ही असम्भव है जैसे इकेले बात-चीत करना।—ऐसी हालत में तो समय काटना कठिन है।—तो फिर समय टालने के लिए ही

आओ हम अपने बाल आदि ठीक कर लें और उन कपड़ों को देख ले जिनको पहन कर हम पहला धावा करना चाहती हैं।

मिना—तुम धावे की बात क्यों करती हो ? मैं तो यहां इसीलिए आई हूं कि आत्म-समर्पण की प्रतिज्ञा को पक्का करा लिया जावे।

फ्रांसिस्का—परंतु वे अफ़सर साहब, जिनको हमारे कारण यह स्थान छोड़ना पड़ा और जिनसे हमने माफ़ी मांगी है, सुशील और सुशिक्षित नहीं मालूम होते। नहीं तो कम से कम वे आपसे भेंट करने की इच्छा से यहा अवश्य आते।—

मिना—सब अफ़सर मेजर टयलहाइम की तरह नहीं होते। सच तो यह है कि मैंने उन अफ़सर साहब को वह संदेश इसीलिए भेजा था जिस से मुझे उनसे टयलहाइम के बारे में पूछ-ताछ करने का मौक़ा मिल सके।—फ्रासिस्का ! मेरा हृदय कहता है कि मेरी यात्रा अवश्य सफल होगी और मैं उन को अवश्य पा लूगी।

फ्रांसिस्का—कुमारी जी ! हृदय ? परंतु अपने हृदय का अधिक विश्वास न करना चाहिये। बहुत करके हृदय से हमारे मुख के शब्दों की ही गूँज निकलती है। परंतु यदि ज़ुबान का भी स्वभाव हमारे हृदय के भावों को इसी तरह दुहराने का होता तो कभी का यह रिवाज चल पड़ता कि मनुष्य अपनी ज़ुबान पर ताला डाले रखते।

मिना—हा ! हा ! ज़ुबान पर ताला डाल के रखना ! मैं तो इस बात को बहुत पसंद करती।

फ्रांसिस्का—ज़्यादा सुंदर दाँतों के दिखाने की अपेक्षा यह कहीं अच्छा है कि हमारे हृदय के भाव सदा ज्यों के त्यों मुख से प्रकट हों।

मिना—क्या ? क्या तुम ऐसी कम बोलने वाली हो ?

फ्रांसिस्का—नहीं कुमारी जी ; परंतु मैं ऐसा होना ज़रूर चाहती हूं। मनुष्य उन गुणों का जो उनमें होते हैं बहुत कम ज़िक्र करते हैं ; परंतु उनके विषय में जो उनमें नहीं होते कहीं अधिक चर्चा किया करते हैं।

मिना—फ्रासिस्का ! वाह ! यह बात तो तुमने बहुत ही ठीक कही।

फ्रांसिस्का—इसमें मेरी क्या तारीफ़ है जब कि यह बात बिना सोचे अपने आप मेरे मुँह में आ गई ?

मिना—और क्या जानती हो कि मैं इसे ख़ास कर क्यों अच्छी समझती हूँ ? क्योंकि, मेरे टयलहाइम में यह बिलकुल ठीक घटती है।

फ्रांसिस्का—आपके लिए तो कौन सी अच्छी बात है जो उनमें नहीं पाई जाती ?

मिना—दोस्त और दुश्मन सब यही कहते हैं कि टयलहाइम दुनियाँ में सब से बढ़ कर वीर हैं। परंतु किसी ने उनको वीरता का बखान करते हुए सुना है ? उनकी आत्मा अत्यंत धर्मनिष्ठ है। परतु

धर्मनिष्ठता और उदारता के विषय के शब्द उनकी ज़ुबान पर कभी नहीं आते।

फ्रांसिस्का—तब वे किस गुण का बखान करते हैं ?

मिना—वे किसी गुण का बखान नहीं करते, क्योंकि ऐसा कोई गुण नहीं जो उन में न हो।

फ्रांसिस्का—मैं यही सुनना चाहती थी।

मिना—ठहरो फ्रांसिस्का ! मुझे सोच लेने दो। वे कमख़र्ची का प्रायः बखान करते हैं। फ्रांसिस्का ! मैं समझती हूँ कि टयलहाइम एक फ़िज़ूलख़र्च आदमी हैं ; पर यह किसी से कहने की बात नहीं है।

फ्रांसिस्का—कुमारी जी ! एक बात और। मैंने अनेक बार उन को तुम्हारे प्रति अपनी सचाई और दृढ़ता के विषय में कहते हुए सुना है। तो क्या उन को झूँठा और चंचल समझना चाहिये ?

मिना—चल कमबख़्त !—लेकिन फ्रांसिस्का ! क्या तुम सचमुच ऐसा ही समझती हो ?

फ्रांसिस्का—तुम को उन्होंने कितने दिनों से समाचार नहीं भेजा ?

मिना—अफ़सोस है कि लड़ाई के बाद से जब से शांति स्थापित हुई है उन्होंने मुझे एक ही बार पत्र लिखा है।

फ्रांसिस्का—क्या ? शांति पर गहरी साँस ? आश्चर्य है। चाहिये तो

ऐसा कि शांति स्थापित होने से युद्ध के कारण होने वाली बुराइयां ठीक हो जावें—परंतु यहां तो युद्ध के दिनों की अच्छाई को शांति मेटती हुई दिखलाई देती है। शांति को ऐसी गड़बड़ न मचानी चाहिये।··शांति स्थापित हुए भी कितने दिन हो गये ? किसी नये समाचार के बिना समय भी तो बहुत लंबा प्रतीत होता है। क्या हुआ कि अब डाक नियम से आने जाने लगी है। कोई कुछ लिखता ही नहीं; क्योंकि किसी के पास लिखने को कोई बात ही नहीं है।

मिना—उन्होने लिखा था कि अब शाति स्थापित हो गई है और मैं अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के समीप पहुँच रहा हूं। परंतु यह उन्होने केवल एक ही बार लिखा था। केवल एक ही बार—

फ्रांसिस्का—परंतु अब तो उन की मनोकामनाओं की पूर्ति के पीछे पीछे हमें भागना पड़ रहा है।·····ज़रा वे हमको मिल जावें।—उन को इस का बदला चुकाना होगा !—परंतु अगर इस बीच में उन्होंने अपनी मनोकामनाओं को पहले ही पूरा कर लिया हो, और हमको पता लगे कि—

मिना—(चिंतित होकर) कि वे चल बसे ?

फ्रांसिस्का—तुम्हारे लिये, कुमारी जी !; परंतु वस्तुतः यह कि उन्होंने दूसरी रमणी से विवाह कर लिया है।

मिना—तुम मुझे छेड़ती हो। अच्छा फ्रांसिस्का! ठहरो। तुम्हें इस का मजा चखाऊँगी।—अच्छा कुछ न कुछ कहती रहो—नहीं तो मुझे नींद आ जावेगी—उनकी पल्टन शांति के पीछे तोड़ दी गई थी। क्या जाने इस कारण कागज़ात और हिसाब की किसी गड़बड़ में वे फँस गये हों? यह भी हो सकता है कि वे किसी दूसरी पल्टन में या किसी दूर प्रदेश में भेज दिये गये हों? क्या जाने किन कारणों से·· ···दरवाज़े पर कोई खटखटाता है।

फ्रांसिस्का—अंदर चले आओ।

दृश्य दूसरा

मैनेजर, मिना, फ्रांसिस्का

मैनेजर—(दरवाज़े में से अंदर झाँकते हुए) देवी जी! क्या मैं अंदर आ सकता हूं?

फ्रांसिस्का—मैनेजर साहब?—हां हां आइये!

मैनेजर—(कान में एक कलम लगाये हुए और कागज़ तथा दावात हाथ में लिये हुए) श्रीमती जी! मैं आपको सलाम करने आया हूं।—(फ्रांसिस्का से) और साथ ही भली लड़की! तुमको भी नमस्कार है।

फ्रांसिस्का—ये नम्र पुरुष हैं।

मिना—आपको धन्यवाद है।

फ्रांसिस्का—मैं भी आपको नमस्कार करती हूं।

मैनेजर—क्या मैं हूज़ूर से पूछ सकता हूं कि आपने मेरे इस ग़रीब होटल में पहली रात कैसे बिताई ?—

फ्रांसिस्का—महाशय ! यह स्थान इतना बुरा नहीं है; परंतु बिस्तरे इससे अच्छे हो सकते थे।

मैनेजर—क्या कहा ? यही न कि ठीक नींद नहीं आई ? शायद रास्ते की ज़्यादा थकावट—

मिना—हो सकता है।

मैनेजर—ठीक ! ठीक ! क्योंकि नहीं तो—तो भी, श्रीमती जी !, यदि कोई बात ऐसी हो जो आपके आराम में बाधक हो तो, आशा है, आप मुझे अवश्य बतला देंगी।

फ्रांसिस्का—बहुत अच्छा, मैनेजर साहब ! हम भी संकोच करने वाली नहीं हैं; और होटल में तो बहुत ही कम संकोच करना चाहिये। जिस चीज़ की आवश्यकता होगी हम अवश्य कह देवेंगी।

मैनेजर—मेरे आने का दूसरा कारण.........(कान से क़लम निकालते हुए)

फ्रांसिस्का—ठीक ?—

मैनेजर—देवी जी ! निस्सन्देह आपको मालूम होगा कि हमारी पुलिस ने कुछ बुद्धिमानी के नियम बना रक्खे हैं—

मिना—नहीं, महाशय ! बिल्कुल नहीं।

मैनेजर—हम लोगों को आज्ञा है कि किसी परदेशी को चाहे वह किसी दरजे का हो, पुरुष हो या स्त्री—उसका नाम, निवासस्थान, पेशा, यहा आने का उद्देश्य, टिकने की अवधि, इत्यादि के विषय में २४ घटे के भीतर अधिकारियो को लिखित सूचना दिये बिना न रहने दे।

मिना—बहुत ठीक।

मैनेजर—इसी लिए श्रीमती जी कृपा करके········(स्वयं एक टेबिल पर जाकर और लिखने के लिए तैयार हो कर)

मिना—हां प्रसन्नतापूर्वक।—मेरा नाम है—

मैनेजर—एक क्षण ठहरिये। (लिखता है) "तारीख़ २२ अगस्त आदि "स्पैनिश किङ्ग" नामक होटल में आये"। अब आपका नाम, श्रीमती जी ?

मिना—बार्नह्यल्म की कुमारी।

मैनेजर—(लिखता है) "बार्नह्यल्म की कुमारी"। श्रीमती जी का कहाँ से आना हुआ ?

मिना—सैक्सनी देश की अपनी रियासत से।

मैनेजर—(लिखता है) "सैक्सनी की रियासत से।" सैक्सनी से। सैक्सनी से न ? हां सैक्सनी से।

फ्रांसिस्का—हां ज़रूर, सैक्सनी से। मैं समझती हूँ कि यहां सैक्सनी से आना एक पाप नहीं गिना जाता है ?

मैनेजर—पाप ? ईश्वर न करे ! यह तो एक अजीब पाप होगा !—तो क्या सैक्सनो से ? हां ! हां ! सैक्सनी से। ओहो सैक्सनी तो

बड़ा रमणीय देश है ।—लेकिन श्रीमती जी ! यदि मैं भूल नहीं करता तो सैक्सनी तो एक बड़ा देश है और उसमें अनेक—क्या कहना चाहिये ?—ज़िले या प्रांत हैं। श्रीमती जी ! हमारी पुलिस बिल्कुल ठीक ठीक सूचना चाहती है ।

मिना—मैं समझती हूँ । तो मैं थुरिंगिया की अपनी रियासत से……

मैनेजर—थुरिंगिया से ! यह ज़्यादा ठीक है। श्रीमती जी ! यह ज़्यादा ठीक है । (लिखता है और पढ़ता है) "बार्नहल्म की कुमारी—थुरिंगिया की अपनी रियासत से एक सेविका स्त्री और दो सेवकों के साथ आईं ।"

फ्रांसिस्क—एक सेविका स्त्री ? शायद इससे मेरा आशय है ?

मैनेजर—हां भली लड़की !

फ्रांसिस्का—मैनेजर महाशय ! "सेविका स्त्री" के स्थान में "सेविका लड़की" लिखिये । आप कहते हैं कि पुलिस ठीक ठीक सूचना चाहती है । इससे भ्रम हो सकता है । जिससे मेरे विवाह के अवसर पर कुछ गड़बड़ हो सकती है । क्योंकि असल में मैं अब तक अविवाहित ही हूँ और मेरा अपना नाम फ्रांसिस्का और गोत्र का नाम विलिग है । फ्रांसिस्का विलिग । मैं भी थुरिंगिया से आती हूँ । देवी जी के एक गांव में मेरा पिता चक्की चलाने का काम करता था । उस गांव का नाम "रम्स डोर्फ़" है । वह चक्की अब मेरे भाई के पास है। छोटी उम्र से ही मैं घर से ले आई गई थी । और कुमारी जी के साथ पढ़ाई गई । हम दोनों की उम्र एक ही है । अगली दूसरी फ़रवरी को २१

वर्ष की हो जावेगी । जो कुछ कुमारी जी ने पढ़ा है मैंने भी पढ़ा है । मैं चाहती हूँ कि मेरे विषय में पुलिस को पूरी पूरी सूचना दी जावे ।

मैनेजर—बहुत ठीक । भली लड़की ! यदि विशेष जानकारी की ज़रूरत हुई तो मैं इसका ध्यान रक्खूंगा । लेकिन अब, देवीजी ! आपके यहां आने का उद्देश्य ?

मिना—मेरे आने का उद्देश्य ?

मैनेजर—क्या आपको महाराजा साहब से कुछ काम है ?

मिना—ओह ! नहीं ।

मैनेजर—या हमारे न्यायालय से ?

मिना—नहीं ; यह भी नहीं ।

मैनेजर—या

मिना—नहीं , नहीं । मैं केवल अपने निजी कामों से यहाँ आई हूँ ।

मैनेजर—बहुत ठीक, देवी जी ! परंतु वे निजी काम क्या हैं ?

मिना—वे ये हैं—फ़्रांसिस्का ! मालूम होता है कि हमारी परीक्षा हो रही है ।

फ़्रांसिस्का—मैनेजर महाशय ! निश्चय करके पुलिस किसी युवती के रहस्यों को जानना नहीं चाहती ।

मैनेजर—अवश्य, भली लड़की ! पुलिस प्रत्येक बात जाना चाहती है और विशेष कर रहस्यों को ।

फ्रांसिस्का—अच्छा देवी जी! क्या किया जावे?..................

ख़ैर, मैनेजर महाशय! सुनिये—परन्तु इसका ध्यान रहे कि पुलिस और हमको छोड़कर किसी और के कानों तक यह बात न पहुँचे।—

मिना—(पृथक्) यह पागल क्या बकने लगी है?

मैनेजर—नहीं, ऐसी मूर्खता कौन कर सकता है?

फ्रांसिस्का—हम महाराज से एक अफ़सर छीनकर ले जाने के लिए आई हैं।

मैनेजर—क्या? कैसे? भली लड़की!

फ्रांसिस्का—या इस लिए कि वे स्वयं हमको ले जावें। दोनों एक ही बातें हैं।

मिना—फ्रांसिस्का क्या तू पागल है?—मैनेजर साहब! यह शोख़ लड़की आपसे मज़ाक कर रही है।

मैनेजर—मुझे तो ऐसी आशा नहीं। मुझ सेवक से वह जितनी चाहे हंसी कर सकती है। लेकिन पुलिस के साथ तो—

मिना—सुनिये मैनेजर महाशय! मेरी समझ में नहीं आता कि इस विषय में क्या करना चाहिये। यह कैसा हो कि ये सब बातें मेरे चचा के आने तक स्थगित रक्खी जावें? मैं आपको कल बतला चुकी हूँ कि वह मेरे साथ क्यों न आये। यहा से दो मील पर उनकी गाड़ी टूट गई। उन्होंने यह पसंद नहीं किया कि मैं रात भर रास्ते में पड़ी रहूँ। इसी लिए मुझे पहले आना पड़ा।

हमारे आने के बाद उनको २४ घंटे से ज़्यादा नहीं लग सकते।

मैनेजर—बहुत अच्छा देवी जी ! हम लोग उनकी प्रतीक्षा करेंगे।

मिना—वे तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर अधिक अच्छी तरह दे सकेंगे। किसको कहां तक अपने विषय में बतलाना चाहिये तथा अपने काम के विषय में कितना कहना चाहिये और कितना न कहना चाहिये इसको भी वे जानते हैं।

मैनेजर—यह और भी अच्छा है। सचमुच एक कम उम्र की लड़की से (फ्रांसिस्का की तरफ़ देखते हुए) ऐसी आशा न करनी चाहिये कि वह गम्भीर आदमियों के साथ एक गम्भीर विषय पर गम्भीरता से विचार करेगी।

मिना—मैनेजर महाशय ! उनके लिए कमरे भी तैयार हैं न ?

मैनेजर—बिल्कुल, देवी जी ! बिल्कुल; केवल एक को छोड़कर—

फ्रांसिस्का—कदाचित् उससे भी किसी भले आदमी को बाहर निकालोगे ?

मैनेजर—देवी जी ! सैक्सनी देश की परिचारिकायें बड़ी दयालु मालूम होती हैं।

मिना—मैनेजर महाशय ! सचमच आपने यह बात ठीक नहीं की। उससे तो यह अच्छा होता कि आप हमको यहां स्थान न देते।

मैनेजर—ऐसा क्यों ? देवी जी ! ऐसा क्यों ?

मिना—मुझे मालूम हुआ है कि वह अफ़सर महाशय जिनको कि यहाँ से हमारे कारण निकल जाना पड़ा—

मैनेजर—केवल एक नौकरी से बरख़ास्त किये हुए अफ़सर हैं, देवी जी!

मिना—तो इससे क्या?

मैनेजर—जिनका प्रायः सर्वनाश हो चुका है।

मिना—यह और भी बुरा है! कहते हैं कि वह एक बड़े योग्य पुरुष हैं।

मैनेजर—मैंने तो आप से कहा कि वह नौकरी से बरख़्वास्त कर दिये गये हैं।

मिना—महाराज प्रत्येक योग्य पुरुष से परिचित नहीं हो सकते।

मैनेजर—ओह! वे उनसे अवश्य परिचित हैं; उन सब को जानते हैं।

मिना—तो भी वे सब को पारितोषिक नहीं दे सकते।

मैनेजर—उन को पारितोषिक मिलता यदि उन के काम उस के योग्य होते। परंतु युद्ध के दिनों में तो वे ऐसे उच्छृङ्खल हो गये थे, मानों युद्ध सदा ही बना रहेगा; मानो 'मेरा' और 'तेरा' ये शब्द संसार से बिल्कुल उठ गये थे। आजकल सब होटल और सरायें उन लोगों से भरी हुई हैं। और मैनेजर लोगों को उन के साथ बड़ा सावधान रहना पड़ता है। मैंने तो इन महाशय से अपना पीछा किसी तरह छुड़ाया। उन के पास कुछ नक़द रुपये के न होने पर भी कुछ क़ीमती सामान अवश्य था। यहां तक कि मैं उन को दो तीन महीने और यहाँ मज़े से

रहने दे सकता था। तो भी जो हुआ ठीक हुआ।—अच्छा देवी जी! मैं समझता हूँ आप जवाहिरात के विषय में कुछ जानती हैं?

मिना—नहीं, विशेषतया नहीं।

मैनेजर—देवी जी! क्यों नहीं? आप अवश्य जानती होंगी।—मुझे आपको एक अंगूठी—एक बहुत अमूल्य अगूठी—दिखलानी है। आप भी उंगली में एक बहुत सुंदर अंगूठी पहने हैं और जितना ही मैं इसे देखता हूँ उतना ही अधिक आश्चर्य मुझे इसके साथ मेरी अंगूठी की समानता पर होता है।—ओ हो! ज़रा देखिये तो सही। (अंगूठी को डिब्बी से निकाल कर मिना को देते हुए) कैसी चमक है? बीच का रत्न ही पाँच कैरट से अधिक होगा।

मिना—(उसकी ओर देखती हुई) ओह आश्चर्य! मैं क्या देखती हूँ? यह अंगूठी—

मैनेजर—यह असल में १५०० थेलर* की होगी।

मिना—फ्रांसिस्का! क्या तुम ने देखा?

मैनेजर—बिना किसी संकोच के इस पर मैंने ८० अशर्फियाँ उधार दे दी हैं।

मिना—फ्रांसिस्का! क्या तुम इसको नहीं पहचानतीं?

फ्रांसिस्का—ओह क्यों नहीं! मैनेजर महाशय! आप को यह अंगूठी कहाँ से मिली?

---

* एक थेलर मूल्य में लगभग तीन शिलिंग के बराबर होता है।

मैनेजर—क्यो मेरी बच्ची ! तुम्हारा तो इस पर कोई दावा नहीं है ?

फ्रांसिस्का—हमारा इस पर कोई दावा नहीं है ? इसके नग के भीतर मेरी स्वामिनी का मोनोग्राम अवश्य होगा।—कुमारी जी ! भला, देखिये तो।

मिना—हाँ यह है ! यह है।—मैनेजर महाशय ! आपको यह अँगूठी कैसे मिली ?

मैनेजर—मुझको ? दुनिया में जो सबसे अच्छा तरीक़ा है उसके द्वारा।—देवी जी ! आप यह तो नहीं चाहती हैं कि मैं लज्जा को उठाऊँ और कष्ट में पड़ूँ ? मैं क्या जानूँ कि यह अंगूठी वस्तुतः किस की है ? युद्ध के दिनों में अनेकानेक चीज़ें, अपने स्वामियों के पास से, उनके जाने या बेजाने, दूसरों के हाथ पहुँच गईं। और युद्ध, युद्ध ही है। हो सकता है कि और भी बहुत सी अंगूठियां सैक्सनी के बाहर गई हों। इसे मुझे लौटा दीजिये, देवी जी ! इसे मुझे लौटा दीजिये।

फ्रांसिस्का—यह तो बतलाइये कि यह आपको किससे मिली ?

मैनेजर—एक ऐसे आदमी से जिसके विषय में मैं कोई सन्देह नहीं कर सकता। जो सब तरह एक भलामानस है।

मिना—यदि आपने इस को इसके स्वामी से लिया है तो यह कहना चाहिये कि आपने सर्वश्रेष्ठ मनुष्य से इसे पाया है।—फ़ौरन उन को मेरे पास लाइये। या तो ये स्वयं वही हैं, या कम से कम ये उनको जानते अवश्य होंगे।

मैनेजर—देवी जी ! कौन ? किस को ?

फ्रांसिस्का—क्या तुम सुनते नहीं हो ? हमारे मेजर महाशय !

मैनेजर—मेजर महाशय ही आप से पहले इस कमरे में ठहरे हुए थे और मैंने उनसे ही इस को पाया है।

मिना—मेजर ट्यलहाइम ?

मैनेजर—जी हाँ ! मेजर ट्यलहाइम। क्या आप उन को जानती हैं ?

मिना—मैं उन को जानती हूँ ? क्या वह यहाँ है ? ट्यलहाइम यहाँ ? वही इस कमरे में ठहरे थे ? वहां ? उन्हीं ने यह अंगूठी तुम्हारे पास गिर्वी रक्खी है ? उनकी यह दुरवस्था कैसे हुई ? वह कहाँ हैं ? वह तुम्हारे ऋणी हैं ?...... फ्रांसिस्का ! मेरा कैश बक्स यहां लाओ। इसे खोलो ! (फ्रांसिस्का उसको टेबिल पर रखती है और खोलती है) उन पर तुम्हारा क्या चाहिये ? क्या वह किसी और के भी ऋणी हैं ? मेरे पास उन सब को जिन के वे ऋणी हैं, लाओ। यह रुपया, ये नोट सब कुछ उन्हीं का है।

मैनेजर—यह क्या मामला है ?

मिना—वह कहाँ हैं ? वह कहाँ है ?

मैनेजर—कोई एक घंटा पहले वह यहीं थे।

मिना—अय नीच आदमी ! तुम ने उन के साथ ऐसी असभ्यता, क्रूरता और सख़्ती का बर्ताव कैसे किया ?

मैनेजर—देवी जी ! क्षमा कीजिये—

मिना—जल्दी करो। उन को मेरे पास लाओ।

मैनेजर–शायद उन का नौकर अभी यहीं होगा। क्या आप चाहती हैं कि वह उन का पता लगा लावे ?

मिना—मैं चाहती हूँ ? जल्दी करो; दौड़ो। सिर्फ़ इस सेवा के बदले में मैं इसका ख़्याल नहीं करूंगी कि तुम ने उनके साथ कैसा बुरा बर्ताव किया है।

फ़्रांसिस्का—अच्छा ! मैनेजर महाशय ! जल्दी करो। दौड़ जाओ।

(उसको बाहर ढकेल देती है)

दृश्य तीसरा

मिना, फ़्रांसिस्का

मिना—फ़्रांसिस्का ! मैंने उनको फिर पा लिया ! क्या तुमने सुना ! मैंने अब उनको फिर पा लिया ! ख़ुशी के कारण मैं नहीं जानती कि मैं कहाँ हूं। मेरे साथ तुम भी प्रसन्न होओ, प्यारी फ़्रांसिस्का ! लेकिन, तुम भी क्यों ? तो भी तुम ख़ुश होगी। तुमको मेरे साथ अवश्य ख़ुशी होनी चाहिये। आओ, प्यारी, मैं तुमको इनाम दूंगी, जिससे तुम मेरे साथ ख़ुश हो सको। कहो, फ़्रांसिस्का ! मैं तुमको क्या दूँ ? मेरी चीज़ों में से कौन सी तुम्हारे लिये ठीक होगी ? किसको तुम लेना पसन्द करोगी ? जो चाहो ले लो, केवल मेरे साथ ख़ुशी मनाओ। मैं देखती हूं कि तुम कुछ लेना नहीं चाहतीं। ठहरो ! (अपना

हाथ कैश बक्स में डालती है) लो फ़्रांसिस्का ! (उसको रुपया देती है) जो चाहो अपने लिये स्वयं मोल ले लो। यदि यह काफ़ी न हो तो और माँग लो। लेकिन मेरे साथ प्रसन्न अवश्य होओ। इकेले ख़ुशी होना भी क्या ख़ुशी मनाना है ? उसके साथ तो उदासी रहती है। अच्छा तो यह ले लो।

फ़्रांसिस्का—मेरी स्वामिनी ! इसका लेना आपकी चोरी करने के बराबर है। आप इस समय आपे से बाहर हैं। आप तो ख़ुशी के नशे में हो रही हैं।

मिना—लड़की ! मेरा नशा झगड़ा पैदा करने वाला है। इसको लो, नहीं तो (उसके हाथ में ज़बरदस्ती रुपया देती हुई)....और अगर तुमने मुझे धन्यवाद दिया....ठहरो ; यह अच्छा है कि मुझे इस बात का ध्यान आ गया (कैश बक्स में से और रुपये निकालती है) प्यारी, फ़्रांसिस्का ! इसको किसी ग़रीब ज़ख़्मी सिपाही के लिए पृथक् रख दो, जो सब से पहले हम से कुछ माँगे।

दृश्य चौथा

मैनेजर, मिना, फ़्रांसिस्का

मिना—कहो, क्या वे आ रहे हैं ?

मैनेजर—गंवार झगड़ालू आदमी !

मिना—कौन ?

मैनेजर—उन का नौकर। वह उनको बुलाने के लिए जाने को मना करता है।

फ्रांसिस्का- अच्छा ! उस बदमाश को यहां लाओ। मेजर महाशय के सब नौकरों को मैं जानती हूँ। उनमें से वह कौन सा है ?

मिना—उस को फ़ौरन यहां लाओ। हम को देख कर वह फ़ौरन चला जावेगा।

[मैनेजर बाहर जाता है।

—————

दृश्य पाँचवाँ

मिना, फ्रांसिस्का

मिना—मुझ से यह प्रतीक्षा नहीं सहन की जाती। लेकिन फ्रांसिस्का ! तुम अब भी बड़ी उदासीन हो। क्या तुम मेरे साथ ख़ुश न होओगी ?

फ्रांसिस्का—मैं हृदय से ख़ुशी होती, यदि केवल—

मिना—यदि केवल, क्या ?

फ्रांसिस्का—हम ने उन को फिर पा लिया है। लेकिन किस दशा में उन को पाया है ? जो कुछ उनके विषय में सुना है उस से मालूम होता है कि वे अच्छी दशा में नहीं हैं। वे अवश्य दुरवस्था में हैं। मुझे यही बात दुःखी कर रही है।

मिना—तुम को दुखी कर रही है। मेरी प्यारी सखी ! इसके लिए आओ मैं तुमको आलिङ्गन कर प्यार करूँ। तुम्हारी इस बात को मैं कभी नहीं भूलूँगी। —मैं तो केवल प्रेम में हूँ—लेकिन तुम शुभ चाहनेवाली हो। —

दृश्य छठा

मैनेजर, जुष्ट, शेष पूर्ववत्

मैनेजर—बड़ी कठिनता से मैं इन को लिवा के लाया हूं।

फ्रांसिस्का—एक अजीब शकल ! मैं इन को नहीं जानती।

मिना—क्यों भई ! क्या तुम मेजर टय्यलहाइम के साथ रहते हो ?

जुष्ट—हाँ।

मिना—तुम्हारे स्वामी कहां हैं ?

जुष्ट—यहां नहीं हैं ?

मिना—लेकिन उन के पास जासकते हो ?

जुष्ट—हाँ।

मिना—ऐसा करने से तुम्हारी मुझ पर कृपा होगी-

जुष्ट—सचमुच !

मिना—और अपने स्वामी की सेवा।

जुष्ट—शायद ऐसा नहीं है।

मिना—तुम ऐसा क्यों समझते हो ?

जुष्ट—मैं समझता हूं—आपही नवागत रमणी हैं जिन्होंने आज प्रातः काल मेरे स्वामी के पास नमस्कार आदि कहला भेजा था ?

मिना—हाँ।

जुष्ट—तो मेरा सोचना ठीक है।

मिना—क्या तुम्हारे स्वामी मेरा नाम जानते हैं ?

जुष्ट—नहीं; परन्तु वे ज़रूरत से अधिक सभ्यता दिखाने वाली रमणियों को इतना ही कम पसन्द करते हैं जितना कि एक अत्यधिक गंवार होटल के मैनेजर को।

मैनेजर—शायद यह मेरे लिये गंवार कहा है ?

जुष्ट—हाँ !

मैनेजर—तो भी इस के लिये देवी जी को क्यों दिक़ करते हो। जाओ और उन को फ़ौरन यहां लिवा लाओ।

मिना—(फ़्रांसिस्का से) फ्रांसिस्का ! इस को कुछ दे दो।

फ़्रांसिस्का—(जुष्ट के हाथ में कुछ रुपया देने की चेष्टा करते हुए) हम तुम्हारी सेवा मुफ़्त में नहीं चाहतीं।

जुष्ट—मैं भी बिना सेवा के तुम्हारा धन नहीं चाहता।

फ़्रांसिस्का—अच्छा तो एक के बदले में दूसरी बात सही।

जुष्ट—नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मेरे स्वामी ने मुझे सब सामान बाँधने के लिये आज्ञा दी है। मैं अब यही कर रहा हूँ, और मेरी प्रार्थना है कि इस में और विघ्न न डालो। अपना काम करने के बाद मैं अवश्य उनसे कह दूँगा कि वह यहां आ

जावें। वे पास ही काफ़ी की दुकान में हैं। यदि उन को वहां कोई विशेष काम न हुआ तो आशा है वह अवश्य आ जावेंगे।

(जाना चाहता है)

फ़्रांसिस्का—अच्छा ज़रा ठहरो। मेरी स्वामिनी मेजर महाशय की × × बहिन लगती हैं।

मिना—हाँ, हाँ उनकी बहिन!

जुष्ट—मैं इस विषय में ज़्यादा जानता हूँ। मेजर महाशय के कोई बहिन नहीं हैं। छः मास के अन्दर वे दो बार मुझको कूरलैण्ड, अपने घर, भेज चुके हैं।—लेकिन यह ठीक है कि बहिनें अनेक प्रकार की होती हैं—

फ़्रांसिस्का—शोख़!

जुष्ट—दूसरों से पीछा छुड़ाने के लिये ऐसा बनना ही पड़ता है।

[बाहर जाता है]

फ़्रांसिस्का—यह एक बदमाश आदमी है।—

मैनेजर—मैंने भी तो यही कहा था। लेकिन उसे जाने दो। अब मुझे मालूम हो गया कि उसके स्वामी कहां हैं। मैं उन को अभी लिवा के लाता हूँ।—लेकिन, देवी जी! अत्यन्त विनय के साथ मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे मेजर महाशय से इसके लिये क्षमा दिला दें कि मैंने दुर्भाग्यवश अपनी इच्छा के विरुद्ध उनको क्रुद्ध कर दिया।—

मिना—मैनेजर महाशय ! जल्दी जाइये । यह सब कुछ मैं फिर ठीक कर दूँगी ।

(मैनेजर के बाहर चले जाने पर)

फ़्रांसिस्का ! दौड़ कर जाओ और मैनेजर से कह दो कि मेरा नाम न बतलावे ।

[फ़्रांसिस्का बाहर जाती है]

दृश्य सातवाँ

मिना, और कुछ देर में फ़्रांसिस्का

मिना—मैंने उनको फिर पा लिया !—क्या मैं अकेली हूं ?—मेरा अकेला होना व्यर्थ न जाना चाहिये । (दोनों हाथों को जोड़ कर) तो भी मैं अकेली नहीं हूं । (आकाश की तरफ़ देखते हुए) धन्यवाद से भरा हुआ केवल एक विचार भी ईश्वर के प्रति पूर्ण प्रार्थना है । मैंने उनको पा लिया ! मैंने उनको पा लिया ! (बाहुओं को आगे फैला कर) मैं भाग्यवती हूँ और प्रसन्न हूं । विधाता को एक प्रसन्न प्राणी को देखने की अपेक्षा और कौन सी बात अधिक प्रसन्न कर सकती है ? (फ़्रांसिस्का लौट कर आती है) फ़्रांसिस्का ! तुम वापिस आ गईं ? तुम्हें उन पर दया आती है ! मुझको तो नहीं आती । दुर्भाग्य भी लाभदायक होता है । शायद विधि ने उन से सब कुछ इसी

लिए ले लिया कि मेरे द्वारा उन को सब कुछ फिर मिल जावे।

फ्ऱांसिस्का—वह ज़रा सी ही देर में यहां आने वाले हैं। मेरी स्वामिनि! आपने अभी तक सबेरे के कपड़े नहीं बदले हैं। अब तो आपको मिलने के वस्त्र पहन लेने चाहियें?

मिना—क्या ज़रूरत है? अब तो वह मुझको ज़्यादहतर इसी पोशाक में देखा करेंगे।

फ्ऱांसिस्का—देवी जी! आप स्वयं समझ सकती हैं कि आप किस तरह अच्छी लगती हैं।

मिना—(ज़रा ठहर कर) फ्ऱांसिस्का! सचमुच यह तुम ठीक कहती हो।

फ्ऱांसिस्का—मेरी राय में सुंदर स्त्रियाँ शृंगार के बिना ही अधिक सुंदर मालूम होती हैं।

मिना—क्या हमारे लिये सुंदर होना ज़रूरी है? शायद हमारा अपने को सुंदर समझना आवश्यक था।—नहीं! मेरे लिए तो यह काफ़ी है अगर मैं केवल उनकी दृष्टि में सुंदर हूं। फ्ऱांसिस्का! अगर सब स्त्रियां मेरी तरह ही सोचती हैं तो हम विचित्र चीज़ हैं। कोमल-हृदय होते हुए भी गर्विणी, सती होते हुए भी मानिनी, प्रेमपरायण होते हुए भी निर्दोष।—तुम्हारी समझ में ये बातें न आती होंगी। मैं ख़ुद भी अपने को नहीं समझती हूं। ख़ुशी से मैं पागल हो रही हूं।—

फ्ऱांसिस्का—मेरी स्वामिनि! अपने को शांत करिये। कोई आता हुआ सुनाई देता है।

मिना---अपने को शांत करूँ ? और उनका शांति के साथ स्वागत करूँ ?

दृश्य आठवाँ

मेजर ट्यलहाइम, मैनेजर, शेष पूर्ववत्

मेजर ट्यलहाइम—(अंदर आता है और मिना को देखते ही उसकी ओर दौड़ता है) आः ! मेरी मिना !

मिना—(उसकी तरफ़ उछल कर) आः ! मेरे ट्यलहाइम !

मेजर ट्यलहाइम—(चौंक कर एक क़दम पीछे हट कर) बार्नह्यल्म की कुमारी जी ! मुझे क्षमा कीजिये ! आपसे यहां मिलना—

मिना—निश्चय यह बिल्कुल आकस्मिक नहीं हो सकता ? (ट्यलहाइम की ओर बढ़ते हुए—जिस पर ट्यलहाइम और पीछे हट जाता है) क्या मैं तुमको इसलिए क्षमा करूँ कि मैं अब भी तुम्हारे लिए तुम्हारी मिना ही हूं ? ईश्वर तुमको क्षमा करे कि तुम मुझको अब भी बार्नह्यल्म की कुमारी कहके पुकारते हो !—

मेजर ट्यलहाइम—(कुमारी जी······मैनेजर की ओर ग़ौर से देखता है और कंधे उठा कर निरुत्तरता प्रकट करता है)

मिना—(मैनेजर की ओर देखती है, और फ्रांसिस्का को इशारा करती है) महाशय !

मेजर ट्यलहाइम—अगर हम दोनों भूल नहीं करते—

फ्रांसिस्का--मैनेजर महाशय ! तुम किसको हमारे पास लिवा लाये हो ! आओ जल्दी करो ! चलो हम उस आदमी की तलाश करें।

मैनेजर—क्या यही वह नहीं हैं ! सचमुच !

फ्रांसिस्का—सचमुच नहीं ! जल्दी आओ ! मैंने अब तक तुम्हारी लड़की से सवेरे का नमस्कार नहीं किया है।

मैनेजर—ओह तुम बड़ी भली हो—(तो भी वहां से नहीं हटता है)

फ्रांसिस्का—(उसको पकड़ कर) आओ, चलो हम देखें कि क्या क्या खाने को बनेगा।

मैनेजर—खाने की चीज़ों में सब से प्रथम—

फ्रांसिस्का—चुपो, चुप जाओ। यदि मेरी स्वामिनी को अभी से यह मालूम हो जायगा कि दोपहर को क्या खावेगी तो उनकी सारी भूख मारी जावेगी।—आओ, यह सब मुझे अकेले में बतलाओ।—(उसको ज़बर्दस्ती खींच ले जाती है)

दृश्य नवाँ

मिना, मेजर ट्यलहाइम

मिना—अच्छा, क्या हम दोनों अब भी भूल में हैं !

मेजर ट्यलहाइम—ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि ऐसा ही होता ! परंतु संसार में केवल एक मिना है और वह तुम हो।

मिना—इस तकल्लुफ़ का क्या कहना ! अच्छा होता अगर दुनियाँ हमारी इस बात-चीत को सुन लेती।

मेजर टयलहाइम—तुम यहां ? तुम यहां किस लिए आई हो ?

मिना—अब कोई और काम नहीं है। (हाथों के फैला कर उसकी ओर जाते हुए) मैं जो कुछ चाहती थी मैंने पा लिया !

मेजर टयलहाइम—(पीछे हटते हुए) तुम एक समृद्धिशाली भाग्य-वान् मनुष्य को चाहती हो, जो तुम्हारे प्रेम के योग्य हों; पर इस समय तुमने एक हतभाग्य मनुष्य पाया है।

मिना—तो क्या अब तुम्हारा मुझ पर प्रेम नहीं है ? क्या किसी दूसरी स्त्री से प्रेम करने लगे हो ?

मेजर टयलहाइम—आः ! उसने कभी तुम से प्रेम नहीं किया जो तुम्हारे बाद किसी और से प्रेम कर सकता है।

मिना—इससे मेरे हृदय को कोई विशेष आश्वासन नहीं हो सकता—क्योंकि अगर तुमको अब मेरा प्रेम नहीं है, तो मुझे इससे क्या कि तुम्हारे प्रेम न करने का कारण तुम्हारी उदासीनता है या मेरी अपेक्षा किसी दूसरी स्त्री का रूप लावण्य ?—तुम्हारा अब मुझ पर प्रेम नहीं है। साथ ही किसी दूसरी पर भी नहीं है ?—यदि किसी को प्यार नहीं करते तब तो वस्तुतः तुम हतभाग्य हो !

मेजर टयलहाइम—ठीक है देवि ! हतभाग्य को किसी से प्रेम नहीं करना चाहिए। वह पुरुष जो ऐसा नहीं कर सकता वस्तुतः अभागा है—जो उस स्त्री को जिसको वह प्यार करता है अपने दुर्भाग्य

में शामिल होने देता है।–आः ! यह कितना कठिन है । आः ! बुद्धि और आवश्यकता के वश प्रेरित होकर, बार्नह्यल्म की कुमारी मिना को भुलाने के लिए, मैंने कितना कष्ट उठाया है'! मुझे अब आशा होने लगी थी कि मेरा यह कष्ट सदा के लिए व्यर्थ नहीं जायगा–कि मेरी मिना ! तुम्हारा यहां आना हो गया !—

मिना—क्या मैं तुम्हारा अभिप्राय ठीक-ठीक समझ रही हूं ? अच्छा ज़रा ठहरिये । किसी और ग़लती के करने से पहले एक दूसरे के अभिप्राय को ठीक-ठीक समझ लेना चाहिए ।—क्या तुम मेरे प्रश्न का उत्तर दोगे !

मेजर टयलहाइम----हां प्रत्येक प्रश्न का—

मिना—-और क्या तुम बिना किसी हेर-फेर के उत्तर दोगे ? केवल साफ़ 'हां' या 'नहीं' के सिवा और कुछ नहीं कहोगे ?

मेजर टयलहाइम—-हाँ जहाँ तक मुझसे हो सकेगा ।

मिना—अवश्य हो सकेगा ।—अच्छा, टयलहाइम ! उन सारे कष्टों के बाद, जिनको मेरे भुलाने के लिये तुमने उठाया है, क्या तुम अब भी मुझसे प्रेम करते हो ?

मेजर टयलहाइम—देवि ! यह प्रश्न—

मिना—-तुमने केवल 'हाँ' वा 'नहीं' में ही उत्तर देने का वचन दिया है ।

मेजर टयलहाइम—साथ में मैंने यह भी जोड़ दिया था 'जहां तक मुझसे हो सकेगा'।

मिना—हां तुम ऐसा कर सकते हो। तुमको मालूम है कि तुम्हारे मन में क्या है।—अच्छा टयलहाइम ! क्या तुम मुझसे अब भी प्रेम करते हो ?—हां या नहीं ?

मेजर टयलहाइम—यदि अपने मन—

मिना—हां या नहीं ?

मेजर टयलहाइम—तो, हां !

मिना—हां ?

मेजर टयलहाइम—हां, हां !—केवल—

मिना—बस !—तुम मुझसे अब भी प्रेम करते हो।—मेरे लिए यह काफ़ी है।—हमारे मन की वृत्ति कैसी हो गई थी। उदासी और विषाद से भरी हुई वृत्ति !—मैं तो अब इसको भगाकर अपनी पहली वृत्ति को फिर से धारण किये लेती हूं।—अच्छा मेरे प्यारे हतभाग्य पुरुष ! तुम मुझको अब भी प्यार करते हो और तुम्हारी मिना तुम्हारे पास उपस्थित है, तिसपर भी यह उदासी और विषाद क्यों है ? तुम्हारी मिना यह समझने में कि तुम्हारी सारी प्रसन्नता का वह एक मात्र आधार है—कैसी अभिमानिनी और मूर्ख थी—है। अपनी सारी आपत्ति को उसे बतला दो। वह प्रयत्न करेगी कि कहां तक वह उसे हटा सकती है।—अच्छा !

मेजर टयलहाइम—देवि ! मुझे शिकायत करने की आदत नहीं है।

मिना—बहुत ठीक। मैं भी एक सिपाही में, आत्मश्लाघा को छोड़कर, शिकायत करने के बराबर किसी और बात को बुरा नहीं समझती। परन्तु तो भी एक तरीक़ा ऐसा है जिसमें निरपेक्ष और उदासीन भाव से अपनी वीरता और आपत्ति को बतलाया जा सकता है।

मेजर टय्यलहाइम—यह भी वास्तव में आत्मश्लाघा और शिकायत करना ही है।

मिना—आप बात करने में चतुर हैं!—तब तो तुमको अपने को हतभाग्य कहना ही न चाहिये था।—या तो तुम्हें सब ही कह देना चाहिये या बिल्कुल चुप ही रहना चाहिये था। विवेक और आवश्यकता दोनों ने तुम्हें मुझे भूल जाने की प्रेरणा की है?—मैं विवेकबुद्धि को बड़ा समझती हूँ, और आवश्यकता के लिए भी मुझमें बड़ा सम्मान का भाव है।—परन्तु उस विवेकबुद्धि की बुद्धिमत्ता और आवश्यकता की आवश्यकता को तो मुझे समझाओ।

मेजर टय्यलहाइम—अच्छा तो सुनो।—तुम मुझको टय्यलहाइम कहकर पुकारती हो? यह नाम ठीक है। लेकिन तुम समझती हो कि मैं वही टय्यलहाइम हूँ जिसको तुम अपने घर पर जानती थीं; वही समृद्धिशाली, उचितस्वाभिमानी और सुयश के लिए लालायित व्यक्ति—जो सारी शारीरिक और मानसिक शक्तियों से सम्पन्न था; जिसके सामने प्रतिष्ठा और समृद्धि का मार्ग खुला हुआ था; और जो, यदि उस समय वह तुम्हारे हृदय और

पाणिग्रहण के योग्य न था तो आशा कर सकता था कि वह दिन प्रति दिन उनके योग्य होता जायगा।—मैं वह टय्लहाइम अब इतना ही कम हूँ जितना कि मैं अपनाही पिता।—अब मैं दूसरा ही टय्लहाइम हूं।—वह जो अपनी नौकरी से पृथक् कर दिया गया है, जो संशय का पात्र है। जो अंगहीन और भिखारी है। देवि ! तुमने उस पुराने टय्लहाइम को अपना पाणि देने का वचन दिया था; क्या तुम अब भी अपना वचन रखना चाहती हो ?

मिना—ये शब्द तो बड़े करुणा-जनक प्रतीत होते हैं !—तो भी, मेजर टय्लहाइम ! जब तक मैं उन पहले टय्लहाइम को दूबारा न पा लूँ—टय्लहाइमों के विषय में मैं तो बिल्कुल पागल हो रही हूं—तब तक दूसरे टय्लहाइम मुझको इस समस्या के सुलझाने में सहायता देंगे। प्यारे भिखारी जी ! अपना हाथ लाओ (उसका हाथ पकड़ते हुए)

मेजर टय्लहाइम—(अपने हैट को दूसरे हाथ से अपने चेहरे के सामने करते हुए और उसकी तरफ़ से मुंह फेरते हुए) यह असह्य है ! मैं कहाँ हूँ ?—देवि ! मुझे जाने दो।—तुम्हारी दया मुझे मारे डालती है।—मुझे जाने दो।

मिना—बात क्या है ? तुम कहाँ जाना चाहते हो ?

मेजर टय्लहाइम—तुम्हारे पास से।

मिना—मेरे पास से ? (उसके हाथ को अपने हृदय की ओर खींचते हुए) ऐ स्वप्न देखने वाले !

मेजर टथ्यलहाइम—निराशा के कारण मैं यहीं तुम्हारे पैरों के पास गिर कर मर जाऊंगा।

मिना—मेरे पास से ?

मेजर टथ्यलहाइम—हाँ तुम्हारे पास से।—फिर कभी तुम्हें न देखने के लिए।—या कम से कम इतना पूरा निश्चय है कि कभी नीचता का काम न करूँगा।—और तुम्हें लड़कपन न करने दूँगा—मिना ! मुझे जाने दो। (अपने को छुड़ा कर बाहर जाता है)।

मिना—(उसके पीछे पुकारते हुए) मिना तुमको जाने दे ? मिना—तुमको जाने दे ? त्यलहाइम ! त्यलहाइम !

अंक तीसरा

दृश्य पहला

स्थान—बैठने का कमरा

जुष्ट (हाथ में एक पत्र लिये हुए)

जुष्ट—इस मनहूस जगह पर मुझे फिर आना पड़ा ! यह चिट्ठी मेरे स्वामी ने उन देवी जी के लिये दी है जो उनकी बहिन बनना चाहती हैं।—कहीं इससे कोई विशेष बात पैदा न हो जावे ! नहीं तो चिट्ठी ले जाने के काम से ही छुट्टी नहीं मिलेगी।

—मैं इस चिट्ठी से पीछा छुड़ाना चाहता हूँ; तो भी इस कमरे में जाने को जी नहीं चाहता। स्त्रियाँ प्रश्न पर प्रश्न पूछा करती हैं; और मुझे उत्तर देने में बड़ा अलकस लगता है।—अहा! दरवाज़ा खुला। ठीक जो मैं चाहता था; वही चुड़ैल परिचारिका!

दृश्य दूसरा

फ्रांसिस्का और जुष्ट

फ्रांसिस्का—(जिस दरवाज़े में से निकलती है उसी तरफ़ मुँह फेर कर कहती हुई) चिन्ता मत करो; मैं दरवाज़े पर खड़ी देखती हूँ।—वाह! (जुष्ट को देखकर) यहाँ तो अभी कोई आ गया। परन्तु इस जानवर से क्या मतलब।

जुष्ट—तुम्हारा सेवक—

फ्रांसिस्सका—मैं ऐसे सेवक को नहीं चाहती।

जुष्ट—ख़ैर मेरे कथन को क्षमा करो!—इस चिट्ठी को मैं अपने स्वामी के पास से तुम्हारी स्वामिनी के लिये लाया हूँ।—जो उनकी बहिन हैं न? बहिन?

फ्रांसिस्का—इधर लाओ (चिट्ठी को उसके हाथ से झटक कर लेती है)।

जुष्ट—मेरे स्वामी की प्रार्थना है कि तुम कृपा करके इसे उनके पास

पहुँचा दो। दूसरे, मेरे स्वामी की यह भी प्रार्थना है कि तुम यह न समझना कि मैं इसके बदले में कुछ तुमसे चाहता हूँ।

फ्रांसिस्का—अच्छा ?

जुष्ट—मेरे स्वामी जानते हैं कि काम कैसे निकाला जाता है। मेरी समझ में वे जानते हैं कि तुम्हारे द्वारा ही तुम्हारी स्वामिनी तक पहुँच हो सकती है। मेरे स्वामी यह भी जानना चाहते हैं कि क्या वे तुम से कुछ मिनिट तक बात-चीत कर सकते हैं या नहीं।

फ्रांसिस्का—मेरे साथ ?

जुष्ट—क्षमा कीजिये यदि मैं उचित रीति से आपको सम्बोधन करना नहीं जानता। हां, आप के साथ।—केवल १५ मिनट के लिये; लेकिन एकान्त में। बिल्कुल एकान्त में, जहां कोई और न हो। कोई बहुत ही आवश्यक बात आप से उनको कहनी है।

फ्रांसिस्का—बहुत अच्छा! मुझे भी उनसे बहुत कुछ कहना है।— तुम्हारे स्वामी जब चाहें आ सकते हैं।—अच्छा, अब जाओ।

जुष्ट—बहुत ख़ुशी से! (जाना चाहता है)।

फ्रांसिस्का—अच्छा सुनो! एक बात और। मेजर महाशय के और नौकर कहाँ हैं ?

जुष्ट—और ? यहाँ वहाँ! और सब जगह।

फ्रांसिस्का—विलह्यल्म कहां है ?

जुष्ट—टहलुआ ? उसको मेजर ने सैर करने के लिये भेज दिया है।

फ्रांसिस्का—ऐसा ? और फ़िलिप कहाँ है ?

जुष्ट—वह शिकारी ? स्वामी ने उसको एक सुरक्षित जगह दिलवा दी है ।

फ्रांसिस्का—ठीक है; क्योंकि वह अब ख़ुद शिकार नहीं खेलते ।—अच्छा, मार्टिन ?

जुष्ट—कोचवान ? वह कहीं घोड़े पर सैर करता होगा ।

फ्रांसिस्का—और फ़िट्ज़ ?

जुष्ट—प्यादा ? उसकी तरक़्क़ी हो गई !

फ्रांसिस्का—जब जाड़ों में मेजर महाशय हमारे पास थुरिंगिया में ठहरे हुए थे तब तुम कहाँ थे ? तुम उनके साथ तो न थे ?

जुष्ट—हाँ; मैं उनका साईस था ।—लेकिन उन दिनों मैं अस्पताल में रहता था ।

फ्रांसिस्का—साईस ? और अब तुम क्या हो ?

जुष्ट—सब कुछ ; टहलुआ और शिकारी, प्यादा और साईस ।

फ्रांसिस्का—यह तो समझ में नहीं आता ! अच्छे बढ़िया इतने नौकरों को दूर करके तुम जैसे भद्दे को रख लेना ! मैं जानना चाहती हूँ कि तुम्हारे स्वामी ने तुममें कौन सा गुण देखा है ।

जुष्ट—शायद यह कि मैं ईमानदार हूँ ।

फ्रांसिस्का—आः ! मैं तो उसको केवल निकम्मा समझती हूँ जो ईमानदारी के सिवा और कोई गुण नहीं रखता ।—विलह्यल्म दूसरी तरह का आदमी था !—और उसको तुम्हारे स्वामी ने सैर करने के लिये चला जाने दिया ।

जुष्ट—हाँ उन्होंने......जाने दिया—क्योंकि वह उसे रोक नहीं सकते थे।

फ्रांसिस्का—सो कैसे ?

जुष्ट—ओह विलह्यल्म तो मज़े से सैर करता होगा ! स्वामी के सारे कपड़े अपने साथ लेकर वह चम्पत हो गया।

फ्रांसिस्का—क्या कपड़े लेकर भाग गया ?

जुष्ट—यह तो मैं ठीक २ नहीं कह सकता; लेकिन जब हम नुर्नबर्ग से रवाना हुए—तब वह कपड़ों के सहित हमारे साथ नहीं आया।

फ्रांसिस्का—ओह बदमाश !

जुष्ट—वह एक ठीक आदमी था। वह बना-ठना रहता था, बात करने में चतुर था, और हँसी-मज़ाक भी करना जानता था। क्या यह सच नहीं है ?

फ्रांसिस्का—तो भी यदि मैं मेजर महाशय की जगह होती तो उस शिकारी को तो अपने पास से न जाने देती। यदि शिकार के लिये उसकी आवश्यकता न थी तो भी वह एक काम का आदमी था—उसको उन्होंने कहाँ जगह दिलवा दी है ?

जुष्ट—स्पांडो नामक क़िले के अध्यक्ष के यहाँ।

फ्रांसिस्का—क़िले में ! वहां भी क़िले की दीवालों के भीतर शिकार का क्या काम होगा ?

जुष्ट—ओह ! फ़िलिप वहां शिकार का काम नहीं करता।

फ्रांसिस्का :—तो क्या करता है ?

जुष्ट—चक्की चलाता है।

फ्रांसिस्का— चक्की पीसता है ?

जुष्ट— परन्तु केवल तीन साल के लिये। उसने अपने स्वामी के रिसाले में एक षड्यन्त्र रच कर छः आदमियो को भगा देना चाहा था।

फ्रांसिस्का—आश्चर्य है। ऐसी दुष्टता !

जुष्ट—आः ! वह काम का आदमी था। ऐसा शिकारी था कि चारों तरफ़ ५० मील तक जंगलों में और दलदलों में वह हर एक रास्ता और पगडंडी को जानता था। साथ ही वह निशाना भी अच्छा लगाता था।

फ्रांसिस्का—ख़ैर ! यह अच्छा है कि कोचवान अब तक मेजर महाशय के यहा मौजूद है।

जुष्ट—वह भी कहाँ है ?

फ्रांसिस्का—क्या तुमने अभी नहीं कहा था कि वह घोड़े पर कहीं सैर कर रहा होगा ? तब तो वापिस आ ही जायगा ?

जुष्ट—क्या तुम्हारा ऐसा ख़्याल है ?

फ्रांसिस्का—तो घोड़े पर वह कहाँ चला गया है ?

जुष्ट—कोई दस सप्ताह हुए जब कि वह स्वामी के आख़िरी घोड़े को नहलाने और पानी पिलाने को ले गया था।

फ्रांसिस्का—और अब तक नहीं लौटा ? बड़ा दुष्ट निकला !

जुष्ट—बिचारा भलामानस पानी में बह गया होगा। वह होशियार कोचवान था। वियना जैसे शहर में वह दस बरस तक कोचवानी करता रहा था। मेरे स्वामी को ऐसा दूसरा आदमी नहीं

मिलेगा। घोड़े कैसे ही सरपट जा रहे हों उसके 'बस' कहते ही वे फ़ौरन दीवाल की तरह निश्चल हो जाते थे। इसके अतिरिक्त, वह अश्व-चिकित्सा में भी बड़ा निपुण था।

फ्रांसिस्का—अब तो मुझे प्यादे की तरक़्क़ी के विषय में भी शक मालूम होता है।

जुष्ट—नहीं, नहीं। यह बिलकुल सच है। उसको अब फ़ौज में नगाड़ा बजाने का काम करना पड़ता है।

फ्रांसिस्का—मैं भी ऐसा ही समझती थी।

जुष्ट—फ्रिट्ज़ ने हर जगह स्वामी के नाम पर उधार ले रक्खा था और भी हजरों चालाकियाँ उसमें थीं। संक्षेप में—स्वामी ने देखा कि वह अवश्य इस पर चढ़ेगा (फांसी पर चढ़ने की नक़ल करता करता हुआ)। इस लिये उन्होंने उसे ठीक रास्ते पर डाल दिया।

फ्रांसिस्का-अरे! बेवक़ूफ़!

जुष्ट—तो भी वह होशियार प्यादा है, इसमें सन्देह नहीं। दौड़ में उसे ५० क़दम आगे रखने पर मेरे स्वामी अपने सबसे अच्छे घोड़े पर भी उसे नहीं पकड़ सकते थे। परन्तु, अपनी जान की शपथ, फ्रिट्ज़ फाँसी को, चाहे वह उससे कितनी ही दूर हो, अवश्य पकड़ लेगा!—परंतु कुमारी! ये सब तुम्हारे बड़े मित्र थे? ......विलह्यल्म, फ़िलिप, मार्टिन, और फ्रिट्ज़।—अच्छा अब जुष्ट तुमसे बिदा चाहता है।

[चला जाता है।

दृश्य तीसरा

फ्रांसिस्का और पीछे से मैनेजर

फ्रांसिस्का—(जुष्ट की ओर ध्यान से देखते हुए) मैं इस कथन के योग्य हूं।—जुष्ट, तुम्हें धन्यवाद है।—मैं अब तक ईमानदारी का पूरा २ मूल्य नहीं जानती थी। मैं इस शिक्षा को कभी नहीं भूलूँगी। आः! अभागे मेजर! (फिर कर ज्योंही कुमारी मिना के कमरे में जाना चाहती है, त्योंही मैनेजर आता है)

मैनेजर—अरी भली लड़की! ज़रा ठहरो।

फ्रांसिस्का—मैनेजर महाशय! मेरे पास अभी समय नहीं है।—

मैनेजर—केवल एक क्षण भर। मेजर महाशय का क्या कोई और समाचार नहीं मिला? इस का कारण यहाँ से चला जाना तो हो नहीं सकता!

फ्रांसिस्का—तो और क्या कारण है?

मैनेजर—क्या तुम से कुमारी जी ने नहीं कहा? मैं तुमको रसोई घर में छोड़ कर ज्यों ही अकस्मात् उस कमरे में आया—

फ्रांसिस्का—अकस्मात्—कुछ सुनने के उद्देश्य से?

मैनेजर—अरी लड़की! मेरे ऊपर ऐसा संदेह न करो! एक होटल के मैनेजर में उत्सुकता से ज़्यादा बुरी बात नहीं हो सकती।—मुझे इस कमरे में आये हुए अधिक देर नहीं हुई थी कि यकायक देवी जी का कमरा खुला। मेजर महाशय उसमें से जल्दी से बाहर निकले। उनके पीछे २ देवी जी थीं। दोनों उद्विग्ना-

वस्था में थे । दोनों की कुछ ऐसी दशा थी जो देखने से ही समझी जा सकती है । उसे कहते नहीं बनता । देवी जी ने उन को पकड़ कर रोकना चाहा । उन्होंने अपने को छुड़ा लिया । कुमारी जी ने उनको दुबारा पकड़ा । "ट्यलहाइम !"—"कुमारी जी ! मुझे जाने दो !" "कहाँ ?", इस प्रकार वे कुमारी जी को सीढ़ी तक खींच लाये । ऐसा डर लगता था कि कहीं वे देवी जी को नीचे न खींच लावें । लेकिन वे अपने को छुड़ाकर चले गये । देवी जी ऊपर की पैड़ी पर ही रहीं—उनको पीछे देखती रहीं । उनको बुलाती रहीं और हाथ मलती रहीं । यकायक फिर कर वे खिड़की के पास दौड़ गईं । खिड़की से फिर ज़ीने को लौटीं । फिर ज़ीने से कमरे में जाकर इधर-उधर घूमती रहीं । मैं यहाँ खड़ा था । वे तीन बार मेरे पास से गुज़रीं—परंतु मुझको न देखा । अंत में ऐसा मालूम पड़ा कि उन्होंने मुझको देख लिया—परंतु ईश्वर की दया से, मैं समझता हूँ, उन्होंने मुझे तुमहो ऐसा समझा । "फ्रांसिस्का!" उन्होंने रोते-रोते मेरी तरफ़ ग़ौर से देखते हुए कहा "क्या मैं भाग्यशालिनी हूँ ?" तब उन्होंने छत की तरफ़ देखा, और फिर कहा "क्या मैं भाग्यवाली हूँ ?" तब वह आंसू पोंछ कर मुस्कुराईं और मुझसे उन्होंने फिर पूँछा "फ्रांसिस्का ! क्या मैं भाग्यवती हूँ ?" सचमुच मैं नहीं कह सकता कि मेरी उस समय क्या अवस्था थी । तब वे अपने कमरे को दौड़ गईं । लेकिन फिर मेरी ओर लौट कर कहने लगीं—"फ्रांसिस्का ! आओ ! अब

तुम्हारी सहानुभूति किसके साथ है ?" यह कह कर वे अन्दर चली गईं ।

फ्रांसिस्का—मैनेजर महाशय ! यह आपने स्वप्न देखा है ।

मैनेजर—स्वप्न देखा है ! नहीं भली लड़की ! स्वप्न इतना स्पष्ट नहीं देखा जाता ।—हाँ, मैं क्या कुछ नहीं दे दूंगा—मैं उत्सुक नहीं हूँ—लेकिन इसकी कुञ्जी पाने के लिये मैं क्या कुछ न दे दूंगा ।

फ्रांसिस्का—कुञ्जी ? हमारे कमरे की ? मैनेजर महाशय ! वह अंदर की तरफ़ से लगा है । रात में हमने उसे अंदर लगा दिया था, क्योंकि हमको भय मालूम होता था ।

मैनेजर—नहीं वह कुञ्जी नहीं । कुञ्जी से मेरा आशय जो कुछ मैंने देखा है उसके भेद या ठीक २ मतलब से है ।

फ्रांसिस्का—ऐसा !—अच्छा मैनेजर महाशय ! नमस्कार । क्या हमारा शाम का खाना तैयार है ?

मैनेजर—अहा ! जो विशेष बात मैं कहने आया था वह तो रह ही गई ।

फ्रांसिस्का क्या ? लेकिन बहुत संक्षेप से—

मैनेजर—मेरी अँगूठी अभी तक देवी जी के ही पास है; मैं उसको अपनी कहता हूँ ।—

फ्रांसिस्का—वह मारी नहीं जायगी ।

मैनेजर—मुझको इसका डर नहीं है; मैंने केवल तुम्हें उसका ध्यान दिला दिया । हाँ देखो ! मेरी उसको वापिस लेने की बिलकुल

इच्छा नहीं है। मैं यह आसानी से समझ सकता हूं कि कुमारी जी ने उसे क्यों कर पहचान लिया और किस कारण वह उनकी अपनी अंगूठी से मिलती-जुलती है। वह उनकी अंगुली में ही ठीक है। मैं उसको लेना नहीं चाहता। सौ अशर्फ़ियां जो कि मैंने उसके वास्ते दी थीं मैं देवी जी के नाम लिख सकता हूँ। क्या यह ठीक नहीं है, भली लड़की?

दृश्य चौथा

पाउल वेर्नर, मैनेजर, फ़्रांसिस्का

पाउल वेर्नर—अच्छा, वह यहाँ मौजूद है!

फ़्रांसिस्का—सौ अशर्फ़ियाँ? मुझे तो ८० का ही ध्यान था।

मैनेजर—ठीक, केवल ६०, केवल ६०। मैं ऐसा ही करूँगा। ए भली लड़की! मैं ऐसा ही करूँगा।

फ़्रांसिस्का—मैनेजर महाशय! यह सब तय हो जायगा।

पाउल वेर्नर—(पीछे से आकर और फ़्रांसिस्का के कन्धे पर हाथ रख कर) ऐ रमणी!—ऐ रमणी!

फ़्रांसिस्का—(डर कर) ओह!

पाउल वेर्नर—डरो मत।—रमणी! मालूम होता है कि तुम सुन्दरी होने के साथ २ परदेसी भी हो—और परदेसी सुन्दरियों को—सावधान कर देना चाहिये। सुन्दरी! तुमको इस आदमी से (मैनेजर को दिखाते हुए) सावधान रहना चाहिये।

मैनेजर—अहह ! यह अकस्मात् आनन्द कैसा ! महाशय पाउल वेर्नर ! आइये, आइये, आपका स्वागत है । ओ हो ! तुम तो अब भी वैसे ही प्रसन्नचित्त, और मसख़रे भले वेर्नर हो ।—अय ! भली लड़की ! तुमको मुझसे सावधान रहना चाहिये । हा ! हा ! हा !

पाउल वेर्नर—तुमको उसके रास्ते में भी नहीं आना चाहिये ।

मैनेजर— मेरे ? मेरे ?—क्या मैं ऐसा भयानक आदमी हूँ ?—हा ! हा ! हा !—अय भली लड़की सुनती हो न ? इस मज़ाक को तुम कैसा पसन्द करती हो ?

पाउल वेर्नर—ऐसे आदमियों के विषय में जब कोई सच बात कहता है उसे वे मज़ाक कह कर ही टाल देते हैं ।

मैनेजर—सच बात ! हा ! हा ! हा !— भली लड़की सुना ?—यह तो और भी बढ़िया बात रही ! यह आदमी मज़ाक करना जानता है । मैं भयानक आदमी ? मैं ?—बीस वर्ष पहले इसमें कुछ सचाई भले ही रही हो । हाँ ! हाँ ! भली लड़की ! तब मैं भयानक आदमी था । बहुतों को इसका पता था; लेकिन अब—

पाउल वेर्नर—अरे बुड्ढे ख़ुर्रांट !

मैनेजर—ठीक । बुड्ढे होने पर आदमी से कोई भय नहीं रहता । तुम्हारी भी यही दशा होगी, महाशय पाउल वेर्नर !

पाउल वेर्नर—अरे ख़ुर्रांट ।—रमणी ! इतनी समझ तो मुझ में है कि मैं इससे कोई भय है—यह नहीं कह सकता । यह ठीक है

कि उससे एक शैतानियत निकल गई है—लेकिन एक के स्थान में और सात ने प्रवेश कर लिया है।

मैनेजर—भला देखो ! यह बात को कैसे बदलता है।—मज़ाक पर मज़ाक और बार २ कोई न कोई नया !—अहा ! पाउल वेर्नर एक बढ़िया आदमी है !—(फ्रांसिस्का के मानों कान में कहते हुए) एक खाता पीता आदमी और तिस पर अविवाहित। यहां से कोई तीन मील की दूरी पर उसके पास एक बढ़िया माफ़ी की ज़मीन है। पिछले युद्ध में इसने ख़ूब कमाई की है। और यह मेजर टयलहाइम का सारजन्ट था। ओह ! यह मेजर महाशय का एक सच्चा मित्र है है और उनके वास्ते अपने प्राणों को भी दे सकता है।

पाउल वेर्नर—हाँ, और यह भी हमारे मेजर महाशय के एक मित्र हैं। अर्थात् ऐसे मित्र कि जिनके प्राण मेजर महाशय को ले लेने चाहिएं।

मैनेजर—क्या ? कैसे ?—नहीं महाशय पाउल वेर्नर !—यह अच्छा मज़ाक नहीं हुआ। मैं मेजर महाशय का मित्र नहीं ! इस उपहास को मैं नहीं समझता।

पाउल वेर्नर—जुष्ट ने मुझे बढ़िया २ बातें सुनाई हैं।

मैनेजर—जुष्ट ने ! मैं भी यही समझ रहा था कि तुम्हारे मुख से जुष्ट बोल रहा है। जुष्ट एक दुष्ट आदमी है। लेकिन यहीं एक सुंदरी खड़ी है। वह कह सकती है, वह बतला सकती है कि मैं मेजर महाशय का मित्र हूँ या नहीं ?—और मैंने उनकी अच्छी

सेवा की है या नही ? और कोई कारण भी नहीं कि मैं उन का मित्र न होऊँ ? क्या वह एक योग्य पुरुष नहीं हैं ? यह ठीक है कि उन पर बरख़ास्त किए जाने की आपत्ति आ पड़ी है; लेकिन इससे क्या ? महाराज सब योग्य पुरुषों के विषय में जानकार नहीं हो सकते। और होने पर भी वह उन सब को उचित रीति से पुरस्कार नहीं दे सकते।

पाउल वेर्नर—यह तो सरस्वती ने तुम्हारे मुख से ठीक कहला दिया ! लेकिन जुष्ट......सचमुच जुष्ट मे कोई ख़ास बात नहीं है; तो भी जुष्ट झूठा आदमी नहीं है। और अगर जो कुछ उस ने कहा है वह सच है तो—

मैनेजर—मैं जुष्ट के विषय में कुछ सुनना नही चाहता। जैसा मैंने अभी कहा है, यह सुंदरी इस विषय में कह सकती है। (धीरे से उससे कहते हुए) मेरी बच्ची तुम जानती हो; वह अंगूठी ! महाशय वेर्नर से उसके विषय में कहो। तब वह मेरी बाबत कुछ जान सकेंगे कि मैं कैसा—आदमी हूँ। जिससे यह न समझा जावे कि वह मेरी इच्छा के अनुसार ही कह रही है मैं यहाँ न रहूँगा। मैं चला जाता हूँ। परंतु महाशय पाउलवेर्नर ! तुम पीछे से मुझे बतलाना कि जुष्ट एक दुष्ट निन्दक है या नहीं।

[जाता है।

दृश्य पाँचवाँ

पाउल वेर्नर, फ्रांसिस्का ।

पाउल वेर्नर—रमणी ! क्या तुम मेरे मेजर महाशय को जानती हो ?

फ्रांसिस्का—मेजर टय्लहाइम को ? हाँ मैं उन सज्जन को जानती हूँ ।

पाउल वेर्नर—हाँ, वह ज़रूर सज्जन हैं । क्या तुम उनको अच्छा समझती हो ?

फ्रांसिस्का—हाँ, अपनी अंतरात्मा से ।

पाउल वेर्नर—सचमुच ? देखो रमणी ! अब तुम मुझको पहले से दुगुनी सुंदरी लगती हो । परंतु मैनेजर ने उनकी कौन-कौन सी सेवायें की हैं ?

फ्रांसिस्का—यह तो मैं नहीं जानती । हाँ ! यदि उसका मतलब उस सेवा से है जो भाग्यवश उसकी दुष्टता से हो गई है तो दूसरी बात है ।

पाउल वेर्नर—तब तो जो जुस्ट ने मुझसे कहा है वह सच ही है । (उस तरफ़ जिस तरफ़ मैनेजर गया था देख कर) यह अच्छा हुआ कि तुम चले गये हो ।—इसने सचमुच उनको अपने कमरे से निकाल दिया !—ऐसे सज्जन के साथ ऐसा दुर्व्यवहार, क्योंकि यह गदहा समझता था कि उनके पास रुपया शेष नहीं रहा है ! मेजर महाशय के पास रुपया नहीं !

फ्रांसिस्का—क्या ! क्या मेजर महाशय के पास रुपया है ?

पाउल वेर्नर—बहुतेरा ! उनको पता नहीं है कि कितना रुपया उनके पास है। उनको यह भी मालूम नहीं है कि किस २ पर उन का रुपया चाहिये। मैं स्वयं उनका ऋणी हूँ और उनके पास उनका कुछ पुराना ऋण देने आया हूँ। देखो रमणी ! इस बटुये में (जेब से निकाल कर) एक सौ अशर्फ़ियाँ हैं; और इस दूसरी गांठ में (दूसरी जेब में से निकाल कर) एक सौ डकट हैं। यह सब उन्हीं का धन है।

फ़्रांसिस्का—सचमुच ! तब वे अपनी वस्तुओं को गिरवीं क्यों रखते हैं ? एक अंगूठी तो उन्होंने गिरवीं रक्खी ही थी।—

पाउल वेर्नर—गिरवीं रक्खी ? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। कदाचित् वह निकम्मी अंगूठी रही होगी और वे उसे दूर करना चाहते होंगे।

फ़्रांसिस्का—वह निकम्मी नहीं है। वह एक क़ीमती अंगूठी है और जिसको, मालूम होता है, उन्होंने किसी प्रेमपात्र के हाथ से पाया होगा।

पाउल वेर्नर—हाँ यह भी हो सकता है। किसी प्रेमपात्र के हाथ से !—हाँ, हाँ, ऐसी वस्तु प्रायः उसका स्मरण कराती है जिसके स्मरण की इच्छा स्वयं नहीं होती। इसीलिये आदमी ऐसी वस्तु को अपने पास से दूर कर देता है।

फ़्रांसिस्का—क्या !

पाउल वेर्नर—जाड़ों के कैम्प में सैनिक को विचित्र बातों का अनुभव हुआ करता है। उसको खुद कुछ काम नहीं होता, इसी-

लिये वह मौज करता है। समय आनंद से काटने के लिये वह नये २ परिचय करता है; जिनको वह केवल उन्हीं जाड़ों तक स्थायी समझता है—परंतु दूसरा सरल हृदय उस परिचय को जीवनपर्यन्त रहने वाला मानता है। झट उस सैनिक की अंगुली में अंगूठी पहना दी जाती है; जिसकी उसे प्रायः सुध भी नहीं होती। बहुत करके तो वह उस अंगूठी से पीछा छुड़ाने के लिये अपनी अंगुली भी प्रसन्नता से कटवा देगा।

फ्रांसिस्का—ओह ! क्या तुम्हारी सम्मति में मेजर महाशय के साथ भी ऐसा ही हुआ है ?

पाउलवेर्नर—निःसंदेह ! ख़ास कर सैक्सनी में। वहां तो यदि उन के प्रत्येक हाथ में १० अंगुलियां होतीं तो बीस की बीस अंगूठियों से भर जातीं।

फ्रांसिस्का—(पृथक्) यह तो ख़ास बात मालूम होती है और इस योग्य है कि इसके विषय में कुछ छान बीन की जावे।—चौधरी महाशय ! या सार्जन्ट महाशय !—

पाउलवेर्नर—रमणी ! मैं तो। "सार्जन्ट महाशय" यही अधिक पसंद करता हूं।

फ्रांसिस्का—अच्छा सार्जन्ट महाशय ! मेजर महाशय की यह चिट्ठी मुझे अपनी स्वामिनी को देनी है। मैं इसको अंदर देकर झट वापिस आती हूं। क्या आप कृपा करके ज़रा प्रतीक्षा करेंगे ! मैं आप के साथ कुछ और बातचीत करना चाहती हूँ।

पाउल वेर्नर—रमणी ! और बातचीत करना चाहती हो ? हां, जल्दी आओ। मैं भी बातचीत करना पसंद करता हूँ। मैं प्रतीक्षा करूँगा।

फ्रांसिस्का—हाँ ! हाँ ! कृपया प्रतीक्षा कीजिएगा।

[जाती है।

दृश्य छठा

पाउल वेर्नर

पाउल वेर्नर—यह कोई बुरी स्त्री नहीं है। परंतु मुझे उसे प्रतीक्षा करने का वचन न देना चाहिये था। क्योंकि मेरे लिये यह कहीं ज़्यादा आवश्यक है कि मैं मेजर महाशय की तलाश करूँ। वह मेरा रुपया नहीं लेना चाहते और माल गिरवीं रखना पसंद करते हैं।—यह ठीक उनकी प्रकृति के अनुसार ही है—अच्छा मुझे एक चाल सूझी है—दो सप्ताह पूर्व जब मैं शहर आया था तब मैं कप्तान मार्लोफ़ की विधवा के भी पास गया था। वह बिचारी बीमार थी और इसका रोना रोती थी कि उस के पति मेजर महाशय के चार सौ थेलर जो उन्हें देने थे, बिना अदा किए ही स्वर्ग सिधार गए और अब उसे चिन्ता थी कि उस ऋण को कैसे चुकाया जावे। मैं आज फिर उससे मिलने गया था। मेरी इच्छा उससे यह कहने की थी कि यदि मुझे अपनी जायदाद के बेचने से कुछ धन मिल गया तो मैं

उसको ५०० थेलर उधार दे सकता हूँ। क्योंकि अगर मेरा फ़ारिस जाना न हुआ तो मुझे कुछ रुपया पक्की जगह लगा देना चाहिये। लेकिन वह कहीं चली गई थी। इसमें संदेह नहीं कि उसने अभी तक मेजर महाशय का ऋण अदा नहीं किया है। हाँ, मैं ऐसा करूँगा; और जितनी जल्दी यह हो उतना ही अच्छा है। उस रमणी को मेरे जाने का बुरा न मानना चाहिए। मैं प्रतीक्षा नहीं कर सकता। (सोचता हुआ चल पड़ता है और सामने से आते हुये मेजर से लगभग टकरा जाता है)

दृश्य सातवाँ

ट्यलहाइम, पाउल वेर्नर

ट्यलहाइम—वेर्नर ? इतने विचार में क्यो डूबे हो ?

पाउल वेर्नर—ओह ! आप हैं। श्रीमान् जी ! मैं आप से ही मिलने के लिये आप के नये स्थान पर जा रहा था।

ट्यलहाइम—पुराने होटल के मैनेजर के प्रति गालियों से मेरे कानों को भरने के लिए ? मुझे उसकी याद न दिलाओ।

पाउल वेर्नर—हाँ ! मैं प्रसङ्ग वश यह भी ज़रूर करता, परन्तु विशेष बात यह है कि मैं आप को इसलिए धन्यवाद देना चाहता था, कि आप कृपा करके मेरी १०० अशर्फ़ियों को अब तक अपने

पास रक्खे रहे। जुष्ट ने उनको मुझे लौटा दिया है। परंतु क्या ही अच्छा होता यदि आप उनको कुछ और दिनों अपने पास रहने देते। परंतु अब आप एक नए स्थान पर रहने लगे हैं जिसके विषय में न तो आप और न मैं ही कुछ जानता हूँ। कौन जाने यह कैसा स्थान है ? कहीं कोई यहां उनको चुरा ले और पुनः आप को देनी पड़ें। इसका कोई इलाज नहीं हो सकता। इसलिए मैं आप से उनको फिर रखने के लिए नहीं कह सकता।

टयलहाइम—(मुसकराते हुए) वेर्नर ! तुम ऐसे दूरदर्शी कब से हो गए ?

पाउल वेर्नर—आदमी को होना ही पड़ता है। आजकल अपने धन के विषय में मनुष्य जितना ही सावधान हो थोड़ा है।—इसके अतिरिक्त, मेजर महाशय ! मुझे आप को कुछ संदेश भी देना है, श्रीमती मार्लोफ़ की तरफ़ से। मैं अभी उन्हीं के पास से आ रहा हूँ। उनके पति पर आप के चार सौ थेलर शेष रह गए थे, उन्होंने यह सौ डकट बतौर क़िस्त के भेजे हैं। शेष अगले सप्ताह में आप के पास आ जायगा। शायद इसी समय सब धन न भेज देने का कारण मैं ही हूँ। क्योंकि उनके ऊपर मेरे भी ८० थेलर चाहते थे। उन्होंने यह समझ कर कि मैं उनका तक़ाज़ा करने आया हूँ—और शायद बात भी ऐसी ही थी—उस थैली में से, जिसको आप के लिए पृथक् रख दिया था, मेरा रुपया मुझको दे दिया। आप को अपने १०० थेलर की

एक सप्ताह तक और प्रतीक्षा करना इतना नहीं अखरेगा जितना मेरे लिए थोड़े से ग्रोशन की भी। अच्छा इनको लीजिए (उसके हाथ में डकट की थैली देता है)

ट्यलहाइम—वेर्नर !

पाउल वेर्नर—क्या ! आप मेरी तरफ़ इस तरह क्यों घूरते हैं ? इनको ले लीजिए !

ट्यलहाइम—वेर्नर !

पाउल वेर्नर—क्या मामला है ? आप खिन्न क्यों हैं ?

ट्यलहाइम—(क्रोध से अपने माथे पर हाथ मार कर और पैर को ज़मीन पर ठसक कर) इसलिए कि......पूरे चार सौ थेलर यहाँ नहीं हैं।

पाउल वेर्नर—मेजर महाशय ! क्या आप ने मेरा मतलब नहीं समझा ?

ट्यलहाइम—मतलब समझ लिया तभी तो !—शोक की बात तो यह है कि मुझे उन्हीं लोगों से सब से अधिक दुःख हो जो मेरे सब से अधिक हितेच्छु हैं !

पाउल वेर्नर—आप का क्या मतलब है ?

ट्यलहाइम—तुम्हारे विषय में यह बात कुछ हद तक ही ठीक है।—जाओ वेर्नर ! (पाउलवेर्नर के हाथ को जिससे वह रुपया दे रहा था हटाते हुए)—

पाउल वेनर—ज्योंही मैं इस बोझ से छुट्टी पाऊँ !

ट्यलहाइम—वेर्नर ! अगर ऐसा हो कि श्रीमती मार्लोफ़ आज ही सवेरे प्रातःकाल यहाँ आई हों ?

पाउलवेर्नर—सचमुच ?

स्यलहाइम—और यह कि उन पर अब मेरा कुछ न चाहिए ?

पाउल वेर्नर—क्या वस्तुतः ?

स्यलहाइम—और यह कि उन्होंने मेरा रुपया कौड़ी २ करके चुका दिया।—तब तुम क्या कहोगे ?

पाउल वेर्नर—(क्षण भर सोच कर) मैं यही कहूँगा कि मैंने झूठ बोला, तथा झूठ बोलना बुरी बात है; क्योंकि आदमी का झूठ पकड़ा जा सकता है।

स्यलहाइम—और तुमको अपने ऊपर लज्जा भी आवेगी ?

पाउलवेर्नर—परंतु उसके विषय में तो कहिए जो मुझको झूठ बोलने के लिए विवश करता है ? क्या उसको भी लज्जित न होना चाहिए ? देखिए मेजर महाशय ! अगर मैं यह कहूँ कि आप के व्यवहार से मुझे दुःख नहीं हुआ है तो मैं झूठ बोलता हूँ; और मैं झूठ नहीं बोलना चाहता।—

स्यलहाइम—वेर्नर ! तुम खिन्न न होओ। मैं तुम्हारे हृदय को और मेरे प्रति जो तुम्हारा प्रेम है उसको जानता हूँ। लेकिन मुझे तुम्हारे धन की आवश्यकता नहीं है।

पाउल वेर्नर—आप को आवश्यकता नहीं है ? तो भी आप चीज़ों को बेचना, गिरवीं रखना और आदमियों से चर्चा किया जाना अधिक पसंद करेंगे ?

स्यलहाइम—ओह ! आदमी भले ही यह समझें कि मेरे पास अब

कुछ नहीं रहा है। मनुष्य को जितना वह धनवान् है उससे अधिक दिखलाई देने की इच्छा न रखनी चाहिए।

पाउल वेर्नर—परंतु जैसा हो उससे अधिक निर्धन भी तो दिखलाई देना नहीं चाहिए। मित्रों के पास कुछ रहते हुए मनुष्य निर्धन नहीं कहलाता।

ट्यलहाइम—यह उचित नहीं दीखता कि मैं तुम्हारा ऋणी बनूँ।

पाउल वेर्नर—उचित नहीं है!—उस गर्मी के दिन जो कि शत्रु और तीक्ष्ण धूप के कारण असह्य हो रहा था, जब कि आप के साईस का, जिसके पास आप का पानी था, कहीं पता नहीं था, तब आपने मेरे पास आकर कहा था—"वेर्नर! तुम्हारे पास कुछ पीने को नहीं है?"। तब मैंने आप को अपना फ़्लास्क (पानी की बोतल) दिया था और आपने उसे लेकर अपनी प्यास बुझाई थी। क्या ऐसा नहीं है? क्या यह उचित था? निःसंदेह उस समय प्यास बुझाने के लिए जरा सा गंदा पानी इस हाथ के मैल से अधिक मूल्यवान् था। (अपनी जेब से बटुए को भी निकाल कर दोनों को सामने करते हुए) प्रिय मेजर! इनको ले लो। आप यह समझें कि यह पानी है। ईश्वर ने इसे भी सब के लिए बनाया है।

ट्यलहाइम—तुम मुझको क्यों दिक़ करते हो। मैंने तुमसे कह दिया कि मैं तुम्हारा ऋणी न बनूँगा।

पाउल वेर्नर—पहले तो यह उचित नहीं था। अब यह कि आप लेना नहीं चाहते। यह तो दूसरी ही बात है। (कुछ क्रोध से)

आप मेरे ऋणी नहीं बनना चाहते। और यदि आप पहले से ही मेरे ऋणी हों तो? अथवा क्या आप उस मनुष्य के ऋणी नहीं हैं जिसने एक बार आप के सिर पर पड़ने वाले शत्रु के वार को हटाया था और एक बार उस बाहु को जो आप की छाती पर गोली चलाना चाहती थी तन से काट कर गिरा दिया था? इससे अधिक उस मनुष्य के और ऋणी आप क्या होंगे? अथवा क्या यह बात है कि मेरा सिर मेरे रुपए से कम क़ीमत का है? यदि यही ऊँचा विचार है—तब तो मेरे ख़्याल में यह सिड़ीपन भी है।

ट्यलहाइम—वेर्नर! यह तुम किससे कह रहे हो? हम यहाँ इकेले हैं, और इसलिए मैं कह सकता हूँ। यदि कोई तीसरा व्यक्ति हमें सुन लेवे तो उसे यह सब शेख़ी प्रतीत होगी। मैं प्रसन्नतापूर्वक यह स्वीकार करता हूँ कि दो बार तुमने मेरे प्राण बचाए हैं। मित्र! क्या तुम नहीं समझते हो कि समय पड़ने पर मैं भी तुम्हारे साथ ऐसा ही व्यवहार करता?

पाउल वेर्नर—अवसर पड़ने पर ही तो! इसमें किसे संदेह है? क्या मैंने आप को सैकड़ों बार अत्यंत साधारण सिपाही के लिए अपनी जान ख़तरे में डालते हुए नहीं देखा है?

ट्यलहाइम—अच्छा!

पाउलवेर्नर—लेकिन—

ट्यलहाइम—तुम मेरा मतलब क्यों नहीं समझते? मैं कहता हूँ, यह उचित प्रतीत नहीं होता कि मैं तुम्हारा ऋणी बनूँ। मैं

तुम्हारा ऋणी नहीं बनूँगा। अर्थात् मैं अपनी वर्तमान अवस्था में।

पाउलवेर्नर—आ हा ! तो आप अच्छे दिनों तक प्रतीक्षा करेंगे। आप उस समय मुझसे उधार लेवेंगे जब कि आपको कुछ आवश्यकता नहीं होगी; जब कि ख़ुद आपके पास कुछ धन होगा और शायद मेरे पास कुछ न होगा।

स्यलहाइम—वापिस करने की शक्ति न रखते हुए किसी को उधार न लेना चाहिये।

पाउलवेर्नर—आप जैसा मनुष्य सदा निर्धन अवस्था में नहीं रह सकता।

स्यलहाइम—तुम दुनिया को जानते हो......मनुष्य को उस व्यक्ति से तो जिसे अपने धन की स्वयं आवश्यकता हो कभी भी ऋण न लेना चाहिए।

पाउलवेर्नर—ठीक ! हाँ, मैं ऐसा ही हूँ ! ज़रा बतलाइये तो कि मुझे रुपये की किस लिये आवश्यकता है ? एक सार्जन्ट को नौकरी पर खाने पीने को काफ़ी मिल ही जाता है।

स्यलहाइम—तुमको इस लिये आवश्यकता है कि तुम सार्जन्टी के पद से कुछ ऊपर भी बढ़ सको। उस मार्ग पर कुछ आगे बढ़ सको जिस पर, रुपये के बिना, बड़े २ योग्य मनुष्य भी पीछे रह जाते हैं।

पाउल वेर्नर—सार्जन्ट के पद से उन्नत होने के लिये ? मैं इसकी परवाह नहीं करता। मैं एक अच्छा सार्जन्ट हूँ। मैं इतना अच्छा कप्तान नहीं बन सकता। और एक जनरल का काम

तो और भी बुरी तरह कर सकूँगा। मनुष्य का कल्याण उसी काम के करने में होता है जिसके योग्य वह होता है।

ट्यलहाइम—वेर्नर ! ऐसा कोई काम न करो जिससे तुम्हारे विषय में मेरे मन में बुरे विचार हो जावें। जो कुछ जुष्ट से मैंने तुम्हारे विषय में सुना है उससे मुझे बड़ा दुःख हुआ है। तुमने अपनी धरती बेच डाली है। और आवारा घूमना चाहते हो। किसी को अपने विषय में यह सोचने का मौक़ा न दो कि तुम वस्तुतः सिपाहीगीरी को पसन्द न करके दुर्भाग्यवश उससे सम्बद्ध ऊलजलूल असंयत जीवन को पसन्द करते हो। मनुष्य को सिपाही बनना चाहये या तो अपने देश के लिये या किसी दूसरे अच्छे उद्देश्य के लिये। किसी उद्देश्य के बिना आज यहाँ रहना और कल वहाँ, केवल एक बेलगाम घोड़े की तरह मारा २ फिरना है।

पाउल वेर्नर—अच्छा मेजर महाशय ! मैं आप के कथनानुसार ही करूँगा। आपको कर्त्तव्याकर्त्तव्य का अधिक ज्ञान है। मैं आपके ही साथ रहूँगा। लेकिन, प्रिय मेजर ! इस समय तो आप मेरे धन को लेलें। आज कल में ही आपका मामला ठीक हो जायगा। तब आप के पास रुपये की कमी न रहेगी। तब आप इस धन को सूद के साथ मुझे लौटा दें। वस्तुतः मैं सूद की ख़ातिर ही ऐसा करना चाहता हूँ।

ट्यलहाइम—इस विषय की बात न करो।

पाउल वेर्नर—अपनी शपथ। मैं खुद की ख़ातिर ही ऐसा करना चाहता हूँ। अनेक बार मैंने अपने मन में सोचा है "अरे वेर्नर! तू अपने बुढ़ापे में क्या करेगा, जब कि तू बेक़ाबू हो जायगा, जब तेरे पास कुछ न रहेगा और तू दरदर मारा फिर कर भीख माँगने के लिये विवश होगा?" ऐसा सोचने पर मेरे मन में यही आया "नहीं, तुझे भीख माँगनी न पड़ेगी। तू मेजर ट्यलहाइम के पास चला जाना। वे एक पैसे के भी रहते तेरी सहायता करेंगे—वे तेरी मृत्यु पर्यन्त तुझको खिलायेंगे। और उनकी शरण में तू एक भले मनुष्य की तरह मर सकेगा।"

ट्यलहाइम—(पाउल वेर्नर का हाथ पकड़ कर) और भाई! अब तुम ऐसा नहीं सोचते हो?

पाउल वेर्नर—नहीं। अब मैं ऐसा नहीं सोचता। जो आदमी ज़रूरत में होकर और मेरे पास रुपये के होने पर, मुझसे रुपया नहीं लेना चाहता वह अपने पास रुपये के होने पर मुझे भी, मेरे ज़रूरतमन्द होने पर, कुछ नहीं देगा। अच्छा ऐसा ही सही!

[जाना चाहता है]

ट्यलहाइम—मुझे आपे से बाहर न करो! तुम कहाँ जा रहे हो! (उसे रोकता है) यदि मैं तुमको अपनी प्रतिष्ठा के नाम पर इसका विश्वास दिलाऊँ कि मैं आवश्यकता पड़ने पर तुमसे कह दूँगा और सब से पहले तुमसे ही मैं कुछ उधार मागूगा—तो क्या तुम को सन्तोष हो जायगा!

पाउल वेर्नर—हाँ, मैं समझता हूँ. ज़रूर। अच्छा ! मेरे हाथ में हाथ दे कर मुझे इसका विश्वास दिलाओ।

ट्यलहाइम—(उसके हाथ में हाथ देकर) अच्छा लो वेर्नर ! अब इस विषय को समाप्त करो। मैं यहाँ एक देवी से कुछ बात-चीत करने के वास्ते आया था।

दृश्य आठवाँ

फ्रांसिस्का (कुमारी मिना के कमरे से निकलते हुए), ट्यल-हाइम, पाउलवेर्नर।

फ्रांसिस्का—(प्रवेश करते हुए) सार्जन्ट महाशय ! क्या आप अभी यहीं हैं ? (ट्यलहाइम को देखकर) और आप भी यहाँ मौजूद हैं, मेजर महाशय ?—एक क्षण में मैं आप की सेवा में उपस्थित होती हूँ। (जल्दी से कमरे में फिर चली जाती है)।

दृश्य नवाँ

मेजर ट्यलहाइम और पाउलवेर्नर

ट्यलहाइम—यह फ्रांसिस्का थी।—परंतु वेर्नर ! मालूम होता है तुम उसको जानते हो ?

पाउलवेर्नर—हाँ, मैं उसको जानता हूँ।

ट्यलहाइम—तो भी, जहां तक मुझे याद है, जब मैं थुरिङ्गिया में था तब तो तुम मेरे साथ नहीं थे।

पाउल वेर्नर—नहीं, उन दिनों मैं कार्यवश लाइपज़िक नगर में था।

ट्यलहाइम—तब तुम उसको कहाँ से जानते हो?

पाउलवेर्नर—हमारा परिचय बहुत ही नवीन है। यह आज से ही है। परंतु ताज़ा परिचय गाढ़ा होता है।

ट्यलहाइम—तो क्या तुम उसकी स्वामिनी से भी मिल चुके हो?

पाउल वेर्नर—क्या उसकी स्वामिनी अविवाहित है? उसने मुझसे कहा था कि आप उसकी स्वामिनी से परिचित हैं।

ट्यलहाइम—क्या तुमने नहीं सुना कि वह थुरिंगिया से आई है?

पाउल वेर्नर—क्या वे नवयुवती हैं?

ट्यलहाइम—हाँ।

पाउलवेर्नर—सुंदरी?

ट्यलहाइम—अत्यंत सुंदरी।

पाउलवेनर—ऐश्वर्य वाली?

ट्यलहाइम—अत्यंत ऐश्वर्य वाली?

पाउलवेर्नर—क्या वे आप को पसंद भी करती हैं? यदि ऐसा है तब तो क्या कहना!

ट्यलहाइम—तुम्हारा मतलब क्या है?

—— —

दृश्य दसवाँ

फ्रांसिस्का (हाथ में चिट्ठी लिए हुए), ट्यलहाइम, पाउलवेर्नर

फ्रांसिस्का—मेजर महाशय !

ट्यलहाइम—फ्रासिस्का ! तुम्हारे यहाँ आने पर अब तक मैंने तुम्हारा कुछ स्वागत नहीं किया है।

फ्रांसिस्का—मुझे विश्वास है कि विचारों में तो आपने मेरा स्वागत कर ही दिया होगा। मैं जानती हूँ कि आप का मुझ पर स्नेह है। मैं भी आप से स्नेह करती हूँ। परतु यह उचित नहीं है कि आप उनको दिक़ करें जो आप के प्रति इतना मित्रता का भाव रखते हैं।

पाउलवेर्नर—(पृथक्) अच्छा ! यह बात है। तब तो ठीक है।

ट्यलहाइम—मेरा भाग्य, फ्रासिस्का ! तुमने उनको वह चिट्ठी दे दी?

फ्रांसिस्का—जी हां। और यह मैं आप के लिए लाई हूँ। (एक चिट्ठी देती है)

ट्यलहाइम—उत्तर?

फ्रांसिस्का—नहीं, यह आप की चिट्ठी वापिस है।

ट्यलहाइम—क्या? उन्होंने पढ़ना नहीं चाहा?

फ्रांसिस्का—उन्होंने चाहा तो बहुतेरा,—लेकिन—हम लिखे हुए को अच्छी तरह पढ़ नहीं सकतीं।

ट्यलहाइम—तुम उपहास करती हो !

फ्रांसिस्का—और हम समझती हैं कि लिखने की कला का आविष्कार उन लोगों के लिए नहीं हुआ था जो जब चाहें तब इच्छानुसार बातचीत कर सकते हैं।

ट्यलहाइम—कैसा अच्छा बहाना है। उनको इसे पढ़ना चाहिए।—इसमें उनके साथ जो बर्ताव मैंने किया है उसके पक्ष में सब हेतु और कारणों को दिखलाया है।

फ्रांसिस्का—मेरी स्वामिनी उनको आप के मुख से ही सुनना चाहती हैं। पढ़ना नहीं चाहतीं।

ट्यलहाइम—मुझसे ही सुनना चाहती हैं ? यह इसलिए कि उनके प्रत्येक दृष्टिपात को देख कर और उनके प्रत्येक शब्द को सुन कर मेरे मन को असह्य पीड़ा हो और उनके प्रत्येक दृष्टिपात के साथ २ मैं उनको स्वीकार न करने से होने वाली अपनी हानि की महत्ता का अनुभव करूँ।

फ्रांसिस्का—परंतु तो भी अनुकंपा के भाव का उदय न हो। यह लीजिए। (पत्र को लौटाते हुए) मेरी स्वामिनी ३ बजे के लगभग आप की प्रतीक्षा करेंगी। वे गाड़ी पर घूमने के लिए और शहर देखने के लिए जाना चाहती हैं। आपको उनके साथ जाना चाहिए।

ट्यलहाइम—साथ जाना चाहिए ?

फ्रांसिस्का—और आप दोनों को इकेला जाने देने के लिए आप मुझ को क्या देंगे ? मैं घर पर ही रहूँगी।

स्यलहाइम—इकेले हम दोनों !

फ़्रांसिस्का—एक बहुत बढ़िया बंद गाड़ी में ।

स्यलहाइम—ऐसा नहीं हो सकता ।

फ़्रांसिस्का—हाँ, हाँ । आप को चुपचाप ऐसा करना पड़ेगा । इससे आप बच नहीं सकते । यही तो कारण है ।—संक्षेप में, मेजर महाशय ! आप ज़रूर आइएगा और ठीक ३ बजे ।—अच्छा ! आप मुझसे भी इकेले में कुछ कहना चाहते थे । आप मुझसे क्या कहना चाहते हैं ? ओहो ! हम इकेले नहीं हैं । (पाउल-वेर्नर की ओर देखते हुए)

स्यलहाइम—हाँ फ़्रांसिस्का ! इकेले ही समझो । परंतु तुम्हारी स्वामिनी ने मेरा पत्र नहीं पढ़ा—इसलिए अब मुझे तुमसे कुछ कहना नहीं है ।

फ़्रांसिस्का—इकेले ही समझो !—तब आप सार्जन्ट महाशय से कोई बात नहीं छिपाते ?

स्यलहाइम—नहीं कोई नहीं ?

फ़्रांसिस्का—तो भी मैं समझती हूँ कुछ तो आप छिपाते ही होंगे ?

स्यलहाइम—ऐसा क्यों ?

पाउलवेर्नर—रमणी ! ऐसा क्यों ?

फ़्रांसिस्का—एक विशेष प्रकार के कुछ रहस्य··· ···············"बीस की बीस"* । सार्जन्ट महाशय ! (अंगुलियों को फैला कर अपने दोनों हाथों को उठाती है)

---

* देखो पृ० ११९ (अंक ३ दृश्य २)

पाउल०—हिश ! हिश !

स्यलहाइम—इसका क्या अर्थ है ?

फ्रांसिस्का—"झट अंगुली में"—सार्जन्ट महाशय ! (अंगुली में अंगूठी डालने का अभिनय करते हुए)

स्यलहाइम—तुम क्या बात कर रही हो ?

पाउल०—युवती ? क्या तुम उपहास को नहीं समझती हो ?

स्यलहाइम—वेर्नर ! मुझे आशा है तुम भूले नहीं होओगे। मैंने तुमसे अनेक बार कहा है कि किसी को एक विशेष सीमा से अधिक स्त्रियों के साथ उपहास नहीं करना चाहिए।

पाउल०—सच तो यह है कि शायद मैं इसे भूल गया था।—युवती ! कृपया—

फ्रांसिस्का—ख़ैर, यदि यह उपहास था तो एक बार मैं इसे क्षमा कर दूँगी।

स्यलहाइम—अच्छा, फ्रांसिस्का ! यदि मेरा आना ज़रूरी ही है तो कम से कम ऐसा करना कि तुम्हारी स्वामिनी मेरे आने तक मेरी चिट्ठी पढ़ लें। इससे उन बातों के, जिन को मैं भूल जाना ही चाहता हूँ, दुबारा सोचने का और दुबारा कहने का कष्ट मुझे बच जायगा। लो, यह उनको दे देना ! (उसको देते हुए पत्र को लौटाता है और देखता है कि वह खोला गया है) क्या मेरा देखना ठीक है ? फ्रांसिस्का ! यह चिट्ठी तो खोली गई प्रतीत होती है।

फ्रांसिस्का—हो सकता है (उसको देखती है)। सचमुच यह तो खोली

हुई है। परंतु इसको किसने खोला होगा ? मेजर महाशय ! हम ने तो इसे बिल्कुल नहीं पढ़ा है और हम लोग तो इसको पढ़ना भी नही चाहतीं—क्योंकि इसके लेखक स्वयं आने वाले हैं। अवश्य आइये। परंतु मेजर महाशय ! इसका ख्याल रहे। किसका ? इसका कि आप इसी पोशाक में न आवें जिसमें इस समय हैं—बूट पहिने हुए और बालों को बिना सभाले हुए। शू पहिन कर आइए और अपने बालों को ठीक २ संभाल कर। इस समय के वेश में तो आप हद से ज़्यादा एक फ़ौजी आदमी की तरह और एक प्रुशिया के निवासी के सदृश दिखलाई देते हैं।

ट्यलहाइम—इसके लिए तुम्हारा धन्यवाद है, फ्रांसिस्का !

फ्रांसिस्का—इस समय तो आप ऐसे मालूम होते हैं कि मानों आप पिछली रात कहीं कैम्प में थे।

ट्यलहाइम—शायद तुम्हारा अनुमान सच ही हो।

फ्रांसिस्का—हम भी फ़ौरन कपड़े बदलती हैं और तब खाना खायेंगी। हम आपको भी खाना खाने को अवश्य रोकतीं, परन्तु सम्भव है आपकी उपस्थिति में हम खाना भी न खा सकें। हम लोग प्रेम से इतने विह्वल नहीं हैं कि हमने अपनी भूख भी खो दी हो।

ट्यलहाइम—मैं जाता हूँ। इस बीच में, फ्रांसिस्का ! अपनी स्वामिनी को ऐसे समझा-बुझा रखना कि मैं न तो उनकी दृष्टि में और न

अपनी दृष्टि में घृणित बनूँ। वेर्नर! आओ तुम भी मेरे साथ ही खाना खाना।

पाउल वेर्नर—क्या इसी होटल में? यहाँ तो मैं एक ग्रास भी न खा सकूँगा।

श्यलहाइम—नहीं; मेरे साथ, मेरे कमरे में।

पाउल वेर्नर—मैं आपके पीछे अभी आता हूँ—केवल एक बात इस युवती से कर लूँ।

श्यलहाइम—मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

[बाहर जाता है

दृश्य ग्यारहवाँ

पाउलवेर्नर, फ़्रांसिस्का

फ़्रांसिस्का—अच्छा, सार्जन्ट महाशय!

पाउल वेर्नर—युवती! अगर मैं दुबारा यहाँ आऊँ, तो क्या मैं भी कुछ बन-ठन कर आऊँ?

फ़्रांसिस्का—तुम जैसे चाहो वैसे आना; मेरी आँखें तुम में कोई दोष नहीं देखेगी। परन्तु मेरे कानो को पहले की अपेक्षा अधिक होशियार रहना पड़ेगा। बीस अंगुलियां, और सब अँगूठियों से भरी हुई! अह ह! सार्जंट महाशय!

पाउल वेर्नर—नहीं रमणी! मैं भी इसी विषय में कुछ कहना चाहता था। वह केवल मेरी वाचालता थी। वस्तुतः उसमें कुछ सत्य

न था। मनुष्य के लिये केवल एक अंगूठी पर्याप्त है। और सैकड़ों बार मैंने मेजर महाशय को कहते हुए सुना है।—"वह सैनिक वस्तुतः धूर्त है जो एक कुमारिका को बहकाता है।" युवती! मैं भी ऐसा ही समझता हूँ। तुम इस पर विश्वास करो।—मुझे जल्दी करनी चाहिये जिससे मैं उनके साथ आ सकूं।—अच्छी तरह भोजन करना!

(चला जाता है)

फ्रांसिस्का—तुम्हारे लिए भी मेरी ऐसी ही कामना है, सार्जन्ट महाशय! (पृथक्) मुझे विश्वास होता है कि मैं इस मनुष्य को पसन्द करती हूँ (अन्दर जाते हुए बाहर आती हुई कुमारी मिना से मिलती है)

दृश्य बारहवाँ

मिना, फ्रांसिस्का

मिना—क्या मेजर चले गये?—फ्रांसिस्का! मालूम होता है अब मैं काफ़ी शान्त हूँ। तभी तो मैं उनको इतनी देर यहाँ रोक सकी।

फ्रांसिस्का—और मैं आप को और भी अधिक शान्त करे देती हूँ।

मिना—यह और भी अच्छा होगा! उनका पत्र! ओह, उनका पत्र! उसकी प्रत्येक पंक्ति से उनका उदार चरित प्रतीत होता था। मेरे पाणिग्रहण के लिये उनके प्रत्येक निषेध से उनका मेरे प्रति प्रेम प्रकट होता था। मैं समझती हूँ उन्हें इसका पता

लग गया कि हमने उनका पत्र पढ़ लिया है। मुझे इसकी चिन्ता नहीं है—यदि वे सिर्फ़ यहाँ आ जावें। परन्तु क्या तुम्हें विश्वास है कि वे यहाँ आवेंगे? मुझे उनके व्यवहार में कुछ थोड़ा सा अभिमान प्रतीत होता है। क्योंकि, अपने ऐश्वर्य्य के लिये अपनी प्रेमपात्री स्त्री के प्रति भी ऋणी बनने को तय्यार न होना अभिमान—एक अक्षम्य अभिमान—ही है। फ्रांसिस्का! यदि वे इस अभिमान को मुझे बहुत अधिक दिखावें तो—

फ्रांसिस्का—तुम उनकी परवाह न करोगी!

मिना—देखो! तुम उनके साथ फिर सहानुभूति करने लगीं। नहीं, मूढ़ लड़की! एक दोष के कारण कोई किसी को त्याग नहीं देता है। नहीं, लेकिन मुझे एक चाल सूझी है।—अर्थात् उनके इस अभिमान का इसी प्रकार के अभिमान से उत्तर देना।

फ्रांसिस्का—कुमारी जी! अब तो आप काफ़ी शान्त हैं—तभी तो आप चालें सोच सकती हैं।

मिना—हाँ मैं शान्त हूँ। आओ, इस षड्यन्त्र में तुम्हें भी भाग लेना होगा।

[चली जाती है।

———

अंक चौथा

दृश्य पहला

स्थान—कुमारी मिना का कमरा

मिना (सुन्दर बढ़िया पर सादे वेश में), फ्रांसिस्का।

(वे अभी खाने के टेबिल पर से उठी हैं जिसको एक नौकर साफ़ कर रहा है)

फ्रांसिस्का—मेरी स्वामिनी ! आपने तो बहुत ही कम खाना खाया।

मिना—तुम्हारा ऐसा ख़्याल है ? शायद जब मैं खाने को बैठी थी तो भूख नहीं लगी थी।

फ्रांसिस्का—हमने यह तय कर लिया था कि भोजन के समय उनका ज़िक्र न करेंगी। हमको यह भी निश्चय कर लेना चाहिये था कि उनके विषय में सोचेंगी भी नहीं।

मिना—सचमुच मैं केवल उनके विषय में ही सोचती रही।

फ्रांसिस्का—मैंने भी यह देखा था। मैंने सैकड़ों तरह के विषयों की चर्चा चलाई, परन्तु आपने प्रत्येक का उल्टा उत्तर दिया। (एक दूसरा नौकर काफ़ी लाता है) लीजिये यह स्वादिष्ठ काफ़ी आ गई। इसके पीने से मनुष्य के चित्त में नई २ विचार-तरङ्गें उत्पन्न होती हैं।

मिना—मैं विचार-तरंगों को नहीं चाहती। मैं केवल उस शिक्षा के विषय में सोच रही हूँ जिसे मैं उन्हे देना चाहती हूँ। क्या तुमने मेरी चाल को समझ लिया ?

फ्रांसिस्का—जी हाँ। परन्तु अच्छा होगा यदि आप उस चाल को प्रयोग में न लावें।

मिना—तुमको पता लग जायगा कि मैं उनको ख़ूब समझती हूँ। जो इस समय मेरी सम्पूर्ण सम्पत्ति के साथ मुझे स्वीकार करना नहीं चाहता, वह ज्योंहीं यह सुनेगा कि मैं निराश्रय और विपत्ति-ग्रस्त हूँ मेरे लिये सम्पूर्ण संसार से युद्ध करने को तय्यार हो जावेगा।

फ्रांसिस्का—(गम्भीरता के साथ) यह बात तो एक अत्यन्त शुद्धात्मा के भी मन में गुदगुदी पैदा कर सकती है।

मिना—उपदेशिके ! प्रथम तो तुम मुझ पर गर्व का दोष आरोप करती थीं—और अब कुछ और ही कहती हो।—फ्रांसिस्का ! मुझे मेरी इच्छानुसार करने दो। तुम भी अपने सार्जन्ट के साथ जो चाहो सो करो।

फ्रांसिस्का—अपने सार्जन्ट के साथ ?

मिना—हाँ, तुम कितना ही मना करो, यह सच है। मैंने उनको अभी तक देखा नहीं है। लेकिन जो कुछ तुमने उनके विषय में कहा है उससे मैं तुम्हारे भावी पति को अभी से बतला सकती हूँ।

———

दृश्य दूसरा

मार्लिनेअर, मिना, .फ्रांसिस्का

मार्लिनेअर—(प्रवेश करने से पहले) मेजर महाशय ! क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?

फ्रांसिस्का—कौन ? क्या किसी को हमसे काम है ? (दरवाज़े पर जाती है)

मार्लिनेअर—सचमुच ! मैंने भूल की। लेकिन नहीं —मैंने भूल नहीं की। यही कमरा—

फ्रांसिस्का—निःसन्देह, कुमारी जी ! यह महाशय यही समझते हैं कि मेजर टय्लहाइम अभी तक यहीं रहते हैं।

मार्लिनेअर—हाँ ! ठीक, मेजर टय्लहाइम, ठीक। भली लड़की ! मैं उन्हीं को ढूँढ़ता हूँ। वे कहाँ हैं ?

फ्रांसिस्का—वे अब यहाँ नहीं रहते।

मार्लिनेअर—यह कैसे ? २४ घंटे पहले वे यहाँ ठहरे हुए थे। और अब यहाँ नहीं रहते ! तो वे अब कहाँ रहते हैं ?

मिना—(पास जाकर) श्रीमान् जी !

मार्लिनेअर—ओह श्रीमती जी ! कुमारी जी कृपया क्षमा करें।

मिना—महाशय ! आप की भूल सर्वथा क्षन्तव्य है और आपका आश्चर्य बिलकुल स्वाभाविक है। मेजर टय्लहाइम यहाँ अवश्य ठहरे हुए थे। परन्तु मुझ परदेसी के लिये, जिसको

कोई और स्थान नहीं मिल रहा था, उन्होंने यह स्थान उदारतावश ख़ाली कर दिया।

मार्लिनेअर—ओह! ऐसी उदारता उनके योग्य ही है। मेजर महाशय वस्तुतः एक उदार पुरुष हैं।

मिना—वे अब कहाँ गये हैं?—सचमुच मुझे बड़ी लज्जा है कि मैं नहीं जानती।

मार्लिनेअर—आप यह नहीं जानतीं? यह तो बड़ा बुरा है।

मिना—यह तो मुझे अवश्य पूछ लेना चाहिये था। मुझे सोचना चाहिये था कि उनके मित्र यहाँ आकर उनको पूछेंगे।

मार्लिनेअर—देवी जी! मैं भी उनका एक बड़ा भारी मित्र हूँ।

मिना—फ़्रांसिस्का! क्या तुम भी नहीं जानती?

फ़्रांसिस्का—नहीं स्वामिनी!

मार्लिनेअर—मेरा उनसे बात चीत करना अत्यावश्यक है। मैं उनके लिये एक समाचार लाया हूँ जिसे सुनकर उनको अति प्रसन्नता होगी।

मिना—ऐसी दशा में मुझे और भी अधिक दुःख है।—परन्तु मैं आशा करती हूँ कि मैं उनसे सम्भवतः शीघ्र मिलूँगी। यदि इसमें कुछ भेद न पड़े कि वे किस के द्वारा इस शुभ संवाद को सुनें तो, महाशय, मैं अपने को इसके लिये—

मार्लिनेअर—मैं समझता हूँ।—क्या आप फ़्रेंच भाषा बोल सकती हैं? लेकिन निःसन्देह मुझे ऐसा प्रश्न न करना चाहिये। क्षमा कीजिये।

मिना—महाशय !

मार्लिनेअर—नहीं ! आप फ्रेंच भाषा नहीं बोलतीं ? देवी जी !

मिना—प्रिय महाशय ! आपके देश में ऐसा करने का प्रयत्न करूँगी; लेकिन यहाँ क्यों ? मैं देखती हूँ कि आप मेरी बात को समझते हैं और मै भी निःसन्देह आपको समझ लूँगी—आप जैसे चाहें वैसे बोलें ।

मार्लिनेअर—अच्छा ! अच्छा ! मैं भी आप की भाषा में अपने अभिप्राय को प्रकट कर सकता हूँ ।—अच्छा आप सुनिये । मैं अभी उन राज-मन्त्री महाशय के घर से खाना खाकर आ रहा हूँ । वे जो चौक में बड़ी सड़क पर रहते हैं । वे किस विभाग के मन्त्री हैं ?

मिना—मैं एक परदेसी हूँ और यहाँ हाल ही में आई हूँ ।

मार्लिनेअर—हाँ, युद्ध विभाग के मन्त्री ।—वहीं मैंने दोपहर को खाना खाया था ।—मैं साधारणतया वहीं खाना खाता हूँ ।—और वहाँ प्रसङ्गवश मेजर ट्यलहाइम की बात चल पड़ी और उन्होंने यह रहस्य की बात कही—क्योंकि वे मेरे मित्रों में से एक हैं और ऐसा कोई रहस्य नहीं जो वे मुझसे छिपावें—उन्होंने मुझे यह रहस्य बतलाया कि हमारे मेजर टॅथलहाइम का मामला अब जल्द तय होने वाला है और वह भी उनके पक्ष में । उन्होंने उस विषय की सूचना महाराज को दी थी और महाराज ने उसको बिल्कुल उनके पक्ष ही में तय करने का निश्चय कर लिया है । मुझे मन्त्री महाशय ने कहा "आप अच्छी तरह जानते हैं कि ऐसी बातों का निश्चय इस पर आश्रित होता है

कि उनको महाराज के सामने किस तरह पेश किया जावे, और आप मुझको भी जानते हैं। टय्लहाइम एक भले मनुष्य हैं। और क्या मैं यह नहीं जानता कि तुम्हारा उन पर स्नेह है ? मेरे मित्र के मित्र मेरे भी मित्र हैं। मेजर टय्लहाइम को अपनी नौकरी में रखना महाराज के लिये कुछ तेज़ अवश्य पड़ेगा। परन्तु अन्यथा महाराजाओं की नौकरी करने से क्या लाभ ? इस ससार में सब को एक दूसरे की सहायता करनी चाहिये, और सरकारी काम मे यदि कभी हानि भी हो जावे तो उसे राजा को ही उठाना चाहिये—न कि हम में से किसी को। मेरा यही सिद्धान्त है। इस पर मैं क़ायम रहता हूँ ''—इस पर आप का कैसा ख़याल है ? क्या सचमुच वे भले आदमी नहीं है ? मन्त्री महाशय एक करुणा-पूर्ण हृदय रखते हैं। अन्त में उन्होने मुझे निश्चय दिलाया कि यदि मेजर टय्लहाइम ने अभी तक इस विषय में महाराज के अपने हाथ का पत्र नहीं पाया है तो वे आज अवश्य पालेंगे।

मिना—महाशय ! निःसन्देह मेजर टय्लहाइम के लिये यह अत्यन्त आनन्दप्रद समाचार होगा। मैं केवल यह और चाहती हूँ कि मैं उनको उन मित्र का नाम भी बतला सकूँ जो उनका इतना हित चाहते हैं।

मार्लिनेश्चर—आप मेरा नाम जानना चाहती हैं ? मुझको लोग कप्तान मार्लिनेश्चर कहते हैं। पर मेरा पूरा परिचय इस प्रकार है:—ल शवालियर रिको द ला मार्लिनेश्चर, सेंञेर द प्रेत-ऊ-वाल,

वंश—प्रसदोर। आप को यह सुन कर कि मैं इतने उच्च वंश का हूँ आश्चर्य होता होगा। वस्तुतः प्रारम्भ में यह एक राजवंश था। असल में मैं इसी वंश का अत्युत्साही नवयुवक सन्तान हूँ। ११ वर्ष की आयु से ही मैं नौकरी में हूँ। एक पैज के कारण मुझे घर छोड़ना पड़ा था। इस बीच में मैंने अनेक देश देशान्तरों में नौकरी की। और अन्त में यहाँ आया हूँ। पर देवी जी! कैसा अच्छा होता अगर मैं इस देश में न आया होता। और जगह मैं अब तक कभी का कम से कम करनल हो गया होता। पर यहाँ तो अभी तक सदा कप्तानी में ही दिन काटने पड़े। और अब तो उससे भी बरख़ास्त हूँ।

मिना—यह तो बड़ा दुर्भाग्य है!

मार्लिनेअर—हाँ, देवी जी! आज कल मैं नौकरी से बरख़ास्त होकर बेकार हूँ।

मिना—मुझे इसका अत्यन्त दुःख है।

मार्लिनेअर—देवी जी! आप बड़ी दयालु हैं।—..........नहीं, संसार में योग्यता की पूछ नहीं है। मुझ जैसे आदमी को बरख़ास्त करना।—जिसने अपना सब कुछ इस नौकरी के कारण खो दिया है! मैंने इसमें २०००० लीब्र से अधिक नष्ट कर दिये। अब मेरे पास क्या है! अधिक क्या, अब मेरे पास एक पैसा भी नहीं है। और दरिद्रता ही सामने घूर रही है।

मिना—यह सुन कर मुझे बड़ा दुःख होता है।

मार्लिनेअर—देवी जी! आप बड़ी दयाशील हैं। परन्तु "छिद्रेष्वनर्था

बहुलीभवन्ति" या "एक आपत्ति अपने साथ दूसरी आपत्ति को लाती है" इस उक्ति के अनुसार ही मुझ पर आपत्तियों का समूह आ पड़ा है। मेरे जैसे कुलीन मनुष्य के लिये जुए के सिवा और क्या सहारा हो सकता है। जब तक मेरे अच्छे दिन थे और मुझे धन की कोई दरकार नहीं थी—मुझे जुए में सफलता मिलती रही। अब जब कि मुझे धन की दरकार है मुझे सदा ऐसी बुरी हार नसीब हो रही है जिसका कोई विश्वास नहीं कर सकता। एक पखवाड़े से तो कोई दिन ऐसा नहीं बीतता जिस दिन मेरी थैली ख़ाली न हो जाती हो। कल ही तीन बार मेरी यह दशा हुई। मैं खूब जानता हूँ कि इस मामले में खेल के अतिरिक्त कुछ और भी भेद था। क्योंकि, दूसरी ओर से खेलनेवालों में कुछ रमणियाँ भी थीं। इससे अधिक और मैं कुछ नहीं कहूँगा। पुरुष को रमणियों के प्रति अति उदार होना चाहिये। उन्होंने आज मुझ को फिर निमन्त्रण दिया है। लेकिन, देवी जी! आप जानती हैं, मनुष्य को सबसे पहले पेट भरने को चाहिये। उससे जो बचे उससे वह खेल सकता है।

मिना—महाशय! मुझे आशा है कि—

मार्लिनेअर—श्रीमती जी! आप बड़ी कृपालु हैं।

मिना—(फ्रांसिस्का को अलहदा ले जाकर) फ्रांसिस्का! मुझे इस मनुष्य पर वस्तुतः दया आती है। यह बुरा तो नहीं मानेगा अगर मैं इसको कुछ दूँ?

फ्रांसिस्का—मुझे तो वह ऐसा आदमी नहीं मालूम होता।

मिना—ठीक !..... महाशय ! जान पड़ता है कि आप जुआ खेलने के साथ ही रुपये का लेन देन भी रखते हैं—निःसन्देह ऐसे स्थानों में जहाँ से कुछ जीत की आशा की जा सकती है। मुझे भी स्वीकार करना चाहिये कि मुझे भी····· खेल का बड़ा शौक़ है।

मार्लिनेअर—ख़ूब ! ख़ूब ! यह तो और भी अच्छा है। सब दिलचले लोग खेल को हृदय से पसन्द करते हैं।

मिना—वस्तुतः मेरी यह बड़ी इच्छा रहती है कि मेरी जीत हो। मैं ख़ुशी से अपना रुपया ऐसे आदमी के सुपुर्द करना पसन्द करती हूँ जो जानता है कि कैसे खेलना चाहिये। महाशय ! आपको इसमें कोई आपत्ति तो नहीं होगी कि मैं आपमें शरीक हो जाऊँ; कि आप के हिसाब में मेरा भी हिस्सा रहे ?

मार्लिनेअर—आपत्ति कैसी ? देवी जी ! हमारा और आपका अर्द्धम-अर्द्ध का हिसाब रहेगा। बड़ी प्रसन्नता से।

मिना—प्रारम्भ में केवल थोड़े से ही सही। (जाकर सन्दूक़ से कुछ रुपया लाती है)

मार्लिनेअर—आः ! श्रीमती जी ! आपका कैसा अच्छा स्वभाव है।

मिना—थोड़ा समय हुआ तब मैंने यह जीत में पाया था। केवल १० अशर्फ़ियाँ। मुझे इस पर लज्जा आती है कि इतना थोड़ा—

मार्लिनेअर—तो भी क्या हर्ज़ है, देवी जी ! लाइये। (ले लेता है)।

मिना—महाशय ! निःसन्देह आपका लेन देन तो बहुत बड़ा है !

मार्लिनेअर—जी हाँ बहुत ही बड़ा है। दस अशर्फ़ियाँ! आपको मेरे बक से इन पर तिहाई सूद मिलेगा। हाँ, लगभग तीसरा हिस्सा या कुछ ज़्यादा सूद होगा। एक सुन्दरी के साथ आदमी को कौड़ी कौड़ी का हिसाब नहीं करना चाहिये। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि इसके द्वारा मेरा और आप का सम्बन्ध स्थापित हो गया है और इस समय से मुझे आशा है कि मेरा अच्छा भाग्य शुरू होगा।

मिना—लेकिन, महाशय! आपके खेल के समय मैं उपस्थित नहीं हो सकती।

मार्लिनेअर—आपके वहाँ उपस्थित होने की आवश्यकता भी क्या है! हम खिलाड़ी लोग परस्पर व्यवहार में सच्चे होते हैं।

मिना—अगर हमारा भाग्य अच्छा निकला, तब तो यह निश्चय है कि आप मेरा हिस्सा मुझ को लाकर दे देवेंगे। अगर हमारा भाग्य अच्छा नहीं हुआ तो—

मार्लिनेअर—मैं नये रंगरूटों को फाँसूँगा। देवी जी! क्या यह ठीक नहीं है!

मिना—हो सकता है अन्त में रंगरूट न मिलें। इसलिये महाशय! हमारे रुपये का ठीक तरह से प्रबन्ध रखिये।

मार्लिनेअर—देवी जी! मुझे क्या समझती हैं! एक मूर्ख, एक बेवकूफ़!

मिना—मुझे क्षमा कीजिये।

मार्लिनेअर—देवी जी! मैं एक होशियार, चालाक और तजर्बेकार आदमी हूँ।

मिना—लेकिन, तो भी, महाशय !—

मार्लिनेअर—मैं एक चाल जानता हूँ ।

मिना—[आश्चर्य से] ऐसा ?

मार्लिनेअर—मैं फाँसो को एक ख़ास चालाकी से फेंकता हूँ ।

मिना—नहीं, आप ऐसा कभी नहीं—

मार्लिनेअर—क्या नहीं ? देवी जी ! क्या नहीं ?

मिना—धोखा देना । चाल से खेलना ।

मार्लिनेअर—क्या, देवी जी ? आप इसको धोखा देना कहती हैं ? अपने भाग्य को सुधारना, उसको क़ाबू में रखना, अपने काम में चौकस होना, इसको आप धोखा देना कहती हैं ? वाह ! आपकी भाषा ऐसी भद्दी है ? क्या उसमें इसके लिये यही शब्द है ?

मिना—नहीं, महाशय ! अगर आप ऐसा समझते हैं—

मार्लिनेअर—देवी जी । आप मुझे मेरी इच्छानुसार करने दें । आप निश्चिन्त रहें । आप को इससे क्या कि मैं कैसे खेलता हूँ । अब बस । देवी जी ! कल या तो आप मुझे सौ अशर्फ़ियों के साथ देखेंगी । या आप मुझको बिलकुल नहीं देखेंगी । आप बड़ी सुशील हैं । देवी जी ! आप बड़ी सुशील हैं ।

(शीघ्रता से निकल जाता है)

मिना—(उसकी तरफ़ आश्चर्य और अप्रसन्नता से देखते हुए) महाशय ! मैं दूसरी बात की ही आशा करती हूँ ।

दृश्य तीसरा

मिना और फ्रांसिस्का

फ्रांसिस्का—(क्रोध से) मैं क्या कह सकती हूँ ? वाह ! क्या कहना है ! क्या कहना है !

मिना—मेरा उपहास करो; मैं इसी योग्य हूँ । (कुछ सोचकर, अधिक शान्तिपूर्वक) फ्रांसिस्का ! उपहास न करो । मैं उपहास योग्य नहीं हूँ ।

फ्रांसिस्का—क्या ख़ूब ! यह तो आपने बहुत ही बढ़िया काम किया कि एक धूर्त को फिर उसके काम के योग्य बना दिया ।

मिना—मेरा उद्देश्य एक अभागे की सहायता से था ।

फ्रांसिस्का—और उसका फल यह है कि वह अब आपको अपने ही जैसा समझता है । ओह ! मुझे उसका पीछा करना चाहिये और रुपया उससे वापिस लेना चाहिये । (जाना चाहती है)

मिना—फ्रांसिस्का—कहीं काफ़ी ठंडी न हो जावे । अच्छा, उसे प्याले में कर दो ।

फ्रांसिस्का—उसे रुपया अवश्य वापिस करना चाहिये । आशा है अब आपने भी अपना विचार बदल दिया होगा । आप उसके साथ खेल में हरगिज़ शरीक न हों । दस अशर्फ़ियाँ ! मेरी स्वामिनी ! आपने सुना कि वह एक भिखारी था ! (मिना स्वयं प्याले में काफ़ी डालती है) भला एक भिखारी को इतना रुपया कौन दे देगा । और इस पर तुर्रा यह कि इस बात का प्रयत्न करना कि

उसे माँगने की लज्जा का भी अनुभव न हो। वह उस परोपकारिन देवी को, जो अपनी उदारता वश उसे भिखारी न समझने की भूल करती है, बदले में कुछ का कुछ समझता है। स्वामिनी ! यह ठीक ही है अगर वह आपकी सहायता को—मैं नहीं समझती क्या समझता है। (मिना काफ़ी का प्याला फ्रांसिस्का को देती है) क्या आप मुझे और भी उत्तेजित करना चाहती हैं ? इस समय मैं नहीं पीऊँगी। (मिना प्याले को फिर नीचे रख देती है)—"सचमुच, देवी जी ! संसार में योग्यता की पूछ नहीं है।" (मार्लिनेअर के लहजे में। अवश्य नहीं है, जब कि ऐसे धूर्त लोग स्वतंत्रता से सर्वत्र घूमते फिरते हैं।

मिना—(शान्ति और गम्भीरता से काफ़ी को पीते हुए) ऐ लड़की ! तुम सज्जनों को तो अच्छी तरह समझती हो, परन्तु बुरों के साथ भी सहिष्णुता करना कब सीखोगी ? बुरे होने पर भी वे आदमी हैं; और अधिकतर वे इतने बुरे नहीं होते जितने प्रतीत होते हैं। केवल उनकी अच्छी बातों को देखने की आवश्यकता है। मैं समझती हूँ कि इस फ्रांसीसी में यही बड़ी बुराई है कि वह अभिमानी है। अभिमान के कारण ही वह अपने को झूँठ मूँठ एक खिलाड़ी प्रकट करता है। वह अपने को मुझसे अनुगृहीत हुआ नहीं दिखलाना चाहता। और इस प्रकार दूसरे को धन्यवाद नहीं देना चाहता। यह संभव है कि वह अब जाकर अपने ऋण को चुका दे और बाक़ी धन से शान्ति और संयम का

जीवन व्यतीत करे और जुए का कभी नाम भी न ले। यदि ऐसा हो तो फ्रांसिस्का ! वह भले ही जब चाहे तब फिर नये रंगरूटों को फंसाने आवे। (फ्रांसिस्का को अपना प्याला देती है , लो ! इसे रख दो। लेकिन यह तो बताओ कि क्या त्यलहाइम को इस समय तक यहाँ नहीं आजाना चाहिए था ?

फ्रांसिस्का—नहीं, देवी जी ! मैं न तो अच्छे आदमी में बुरी बातों को और न बुरे आदमी में अच्छी बातों को पा सकती हूँ।

मिना—वे आवेंगे तो अवश्य, क्यों ?

फ्रांसिस्का—उनको नहीं ही आना चाहिए। आप उनमें—जो मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ हैं—थोड़ा सा अभिमान समझती हैं; और इस वास्ते उनको इतनी क्रूरता के साथ तंग करना चाहती हैं ?

मिना—क्या तुमने फिर वही बात चला दी ! चुप जाओ ! मेरी ऐसी ही इच्छा है। तुम को शपथ है अगर तुम इस मज़ाक में बाधा डालो...और जैसा हमने निश्चय किया है वैसा न करो और न कहो ! मैं तुम को इकेला उनके पास छोड़ दूँगी, और तब —लो ! वे आ ही गये !

दृश्य चौथा

पाउल वेर्नर (जैसे कोई ड्यूटी पर हो इस तरह अकड़ कर चलते हुए), मिना, फ्रांसिस्का

फ्रांसिस्का—नहीं, यह तो केवल उनके प्रिय सार्जन्ट हैं।

मिना—प्रिय सार्जन्ट ! यहाँ 'प्रिय' शब्द से किसका अभिप्राय है ?

फ्रांसिस्का—देवी जी ! कृपा करके इनको तंग न कीजिये ।—कहिये सार्जन्ट महाशय ! आप हमारे लिये क्या समाचार लाये हैं ?

पाउलवेर्नर—(फ्रांसिस्का की ओर न देख कर सीधा मिना के पास जाता है) मेजर ट्यलहाइम ने मुझ सार्जन्ट पाउलवेर्नर के द्वारा आपको सादर नमस्कार भेजा है। और कहला भेजा है कि वे अभी थोड़ी देर में यहाँ आ जावेंगे।

मिना—वे अब कहाँ हैं ?

पाउलवेर्नर—आप क्षमा करें। हम लोग अपने स्थान से तीन बजे से पूर्व ही चल पड़े थे ; परन्तु ख़जांची महाशय हम को रास्ते में मिल गये। और चूँकि ऐसे महाशयों के साथ बातचीत का अन्त नहीं होता इसलिये मेजर महाशय ने मुझे इशारा किया कि मैं इस की सूचना आपको दे दूँ।

मिना—बहुत अच्छा. सार्जन्ट महाशय ! मेरी यही अभिलाषा है कि ख़जाची महाशय ने कोई सुसमाचार ही उनको दिया हो।

पाउलवेर्नर—ऐसे लोग अफ़सरों को सुसमाचार बहुत ही कम देते हैं। क्या आपकी कोई आज्ञा है ? (जाना चाहता है)

फ्रांसिस्का— सार्जन्ट महाशय ! यह क्यों ! अभी आप फिर कहाँ जाते हैं ? क्या हमें एक दूसरे से कुछ बातचीत नहीं करनी है ?

पाउलवेर्नर—(धीरे से पर गंभीरतापूर्वक फ्रांसिस्का के प्रति) यहाँ नहीं, रमणी ! यह नियम और विनय के विरुद्ध होगा। ..देवी जी !

मिना—सार्जन्ट महाशय ! तुम्हारे कष्ट के लिए मैं तुम को धन्यवाद देती हूँ। तुम्हारे परिचय से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। फ़्रासिस्का ने मुझसे तुम्हारी बड़ी प्रशंसा की थी। (पाउलवेर्नर अकड़े हुए नमस्कार करता है और जाता है)

— — —

दृश्य पाँचवाँ

मिना, फ़्रांसिस्का

मिना—सो यह तुम्हारे सार्जन्ट हैं, फ़्रांसिस्का ?

फ़्रांसिस्का—(पृथक्) इस चिढ़ानेवाले 'तुम्हारे' शब्द के लिये उपालम्भ देने का अभी मुझे समय नहीं है।—(प्रकाश) जी हाँ, देवी जी ! यह मेरे सार्जन्ट हैं। निःसन्देह आपको यह कुछ गँवार और रूखे प्रतीत होते हैं। मुझको भी अभी २ वह ऐसे ही जान पड़े। परंतु मेरा तो अनुमान है कि वह जान बूझ कर आपके सामने पैरेड पर जैसा चलना चाहते थे; और जब सिपाही लोग पैरेड करते हैं तब वे आदमियों की अपेक्षा कठपुतली ही अधिक मालूम पड़ते हैं। आप को उन्हें उस समय देखना और सुनना चाहिये जब वे अपनी स्वाभाविक अवस्था में हों।

मिना—हाँ, यह ठीक है !

फ़्रांसिस्का—वह अभी दूसरे कमरे में ही होंगे। क्या मैं जाकर ज़रा उनसे बातचीत कर लूँ ?

मिना—चाहने पर भी मैं इस समय तुमको इसकी आज्ञा नहीं दे सकती। फ्रांसिस्का ! तुम को यहीं मौजूद रहना चाहिये। तुम को हमारी बातचीत के समय मौजूद रहना चाहिये। (अपनी अँगूठी अपनी अँगुली से उतारती है) यह मेरी अँगूठी लो और इसको अपने पास रक्खो, और इसके बदले में मुझे मेजर महाशय वाली अँगूठी दो।

फ्रांसिस्का—यह किस लिये ?

मिना—(फ्रांसिस्का अंगूठी ला देती है) मैं भी ठीक २ नहीं जानती; लेकिन कुछ कुछ जान पड़ता है कि मैं किस तरह इससे काम निकाल सकूँगी। – कोई खटखटाता है !—इसे मुझे दो, जल्दी से। (अंगूठी पहन लेती है) यह वही है।

———

दृश्य छठा

मेजर टयलहाइम (उसी पहले कोट को पहने हुए—परन्तु और बातों में जैसे फ्रांसिस्का ने कहा था वैसे), मिना, फ्रांसिस्का

मेजर ट्यलहाइम—देवी जी ! कृपा करके देरी के लिये क्षमा कीजिये।

मिना—ओह मेजर महाशय ! हमें परस्पर इस तरह फ़ौजी ढंग से व्यवहार नहीं करना होगा। अब आप यहाँ हैं। और एक आनन्द की प्रतीक्षा भी आनन्द-दायक होती है। ख़ैर (उनकी

तरफ़ देखकर और मुसकराकर) प्रिय टयलहाइम ! क्या हम बच्चों की तरह व्यवहार नहीं कर रहे हैं ?

मेजर ट्यलहाइम—हाँ देवी जी ! बच्चों की तरह, जो आज्ञा मानने के स्थान में शोख़ी दिखाते हैं ।

मिना—प्रिय मेजर ! चलो हम गाड़ी पर बैठकर कुछ नगर के सैर करें और उसके बाद चाचा जी से मिलें ।

मेजर ट्यलहाइम—क्या ?

मिना—देखो अब तक तो हमें अत्यावश्यक बातों की भी चर्चा करने का अवसर नहीं मिला है । हाँ, मेरे चाचा जी भी आज यहाँ आ रहे हैं । एक आकस्मिक घटना के कारण ही मैं इकेली उनसे एक दिन पहले यहाँ आ गई थी ।

मेजर ट्यलहाइम ब्रुख़साल के काउन्ट ! क्या वह लौट आए ?

मिना—युद्ध के झगड़ों के कारण ही उनको अपना देश छोड़ना पड़ा था । युद्ध के अनन्तर शान्ति स्थापित होने पर वे वापिस आ गये । टयलहाइम ! घबड़ाओ मत ! यद्यपि हमारे विवाह के सम्बन्ध में पहले उन्हीं की तरफ़ से सबसे बड़ी रुकावट थी—

मेजर ट्यलहाइम—हमारे विवाह के सम्बन्ध में !

मिना—तो भी वे अब आपके पक्ष में हैं । उन्होने अनेक लोगों से आपकी इतनी अधिक प्रशंसा सुनी कि ऐसा होना ज़रूरी था । वे उस व्यक्ति से, जिसको उनकी इकलौती उत्तराधिकारिणी ने अपना जीवन-संगी चुना है, मिलने के लिये अत्यन्त उत्कंठित

हो रहे हैं। वे बतौर एक चाचा, सरक्षक या पिता के मुझे आपके सुपुर्द करने के लिये ही आ रहे हैं।

मेजर ट्यलहाइम—आः! देवी जी! तुमने मेरी चिट्ठी क्यों नहीं पढ़ी? तुमने उसे पढ़ना क्यो नहीं चाहा?

मिना—आपकी चिट्ठी? हाँ, ठीक है; मुझे स्मरण है आपने एक चिट्ठी मेरे पास भेजी थी। फ्रांसिस्का! तुमने उस चिट्ठी का क्या किया? हमने उसे पढ़ लिया—या नहीं पढ़ा! प्रिय टयलहाइम! तुमने उसमें क्या लिखा था?

मेजर ट्यलहाइम—मैंने जो कुछ लिखा था उसे आत्म-सम्मान के भाव से प्रेरित होकर लिखा था।

मिना—अर्थात्—एक प्रतिष्ठित रमणी को, जो आप को प्यार करती है, नहीं छोड़ना चाहिये। सचमुच आत्म-सम्मान का भाव ऐसी प्रेरणा कर सकता है। वस्तुतः मुझे आपका पत्र पढ़ लेना चाहिये था। परन्तु जो बात मैंने पढ़ी नहीं थी उसे अब आपके मुख से ही सुन लूँगी।

मेजर ट्यलहाइम—हाँ, उसे सुन लोगी।

मिना—नहीं! मुझे उसके एक बार भी सुनने की आवश्यकता नहीं। यह स्वतः स्पष्ट है। क्या ऐसा हो सकता है कि आप ऐसा अनुचित काम करें कि मुझे न अपनायें? क्या आप नहीं जानते कि उस अवस्था में जन्म भर मेरे ऊपर सब उँगली उठायेंगे। मेरी स्वदेशी स्त्रियाँ मेरे विषय में यही कहा करेंगी—"यह वह है, यह वही मिना है जो अपने को अमीर मानकर यह

समझे बैठी थी कि यह कुलीन टच्यलहाइम के साथ विवाह कर सकती है—मानो ऐसे मनुष्य धन से फाँसे जा सकते हैं।" वे सब यही कहेंगीं--क्योंकि वे सब मुझ से ईर्ष्या करती हैं। मैं ऐश्वर्य्य वाली हूँ। यह तो वे मना नहीं कर सकतीं। परंतु वे यह नहीं मानना चाहतीं कि मैं साधारणतया एक अच्छी लड़की भी हूँ। और मैं अपने पति के योग्य हो सकूँगी। टच्यलहाइम ! क्या ऐसा नहीं है ?

मेजर टच्यलहाइम—हाँ, हाँ कुमारी जी ! यह आपकी स्वदेशीय स्त्रियों के सर्वथा अनुकूल ही है। वे एक नौकरी से पृथक् किये हुए अङ्गहीन, भिखारी, और प्रतिष्ठा से च्युत व्यक्ति को तुम्हारा पति देख कर तुमसे अत्यधिक ईर्ष्या करेंगी !

मिना—तो क्या आप में बस इतनी ही बातें हैं ? अगर मैं भूलती नहीं हूँ तो आपने ही आज प्रातःकाल कुछ इस प्रकार कहा था कि अच्छाई और बुराई परस्पर मिली हुई रहती हैं। अच्छा आओ हम प्रत्येक दोष की कुछ अधिक परीक्षा करें। आप नौकरी से पृथक् किये गये हैं ? ऐसा आपका कहना है। मैंने समझा था कि आपका रिसाला तोड़ दिया गया और दूसरे रिसालों में मिला दिया गया है। इसका क्या कारण है कि आप जैसी योग्यता का मनुष्य नौकरी में नहीं रक्खा गया ?

मेजर टच्यलहाइम—ऐसा हुआ क्योंकि ऐसा होना ही चाहिये था। उच्चाधिकारियो का ऐसा विश्वास है कि एक सैनिक जो कुछ करता है वह न तो उनके प्रति गौरव के भाव से करता है और

न अपना कर्त्तव्य समझ कर करता है। किन्तु केवल अपने लाभ की दृष्टि से ही करता है। ऐसी दशा में वे नहीं समझते कि उनका भी कुछ कर्त्तव्य उस सैनिक के प्रति है। शान्ति स्थापित हो जाने के कारण उनके लिए मेरे जैसे अनेक सैनिक व्यर्थ हो गये हैं और अन्त में सब व्यर्थ हो जावेंगे।

मिना—आप ऐसे कहते हैं जैसे उस मनुष्य को क़हना चाहिये जिसकी दृष्टि में उच्चाधिकारी गण व्यर्थ हैं। और वे इतने व्यर्थ कभी नहीं थे जितने अब हैं। उन उच्चाधिकारियों को मैं अनेक धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने उस मनुष्य पर से अपने सारे अधिकार हटा लिए जिसके ऊपर ख़ुशी से मैं अपने सिवा किसी दूसरे का अधिकार नहीं देख सकती। टयलहाइम! मैं आपकी महाराणी हूँ। आपको किसी दूसरे स्वामी की आवश्यकता नहीं है।—आप नौकरी से पृथक् कर दिये गये हैं—इस अच्छे भाग्य का तो मुझे सुपने में भी ख़्याल नहीं था।

परन्तु इतना ही नहीं कि आप नौकरी से पृथक् कर दिये गये हैं—कुछ और भी बात है। और बात क्या है? आप कहते हैं कि आप अङ्गहीन हैं? अच्छा! (उसको ऊपर से नीचे तक देखती है) जो अङ्गहीन है वह तो काफ़ी स्वस्थ और बलवान् दिखलाई देता है। अब भी अच्छा ख़ासा प्रतीत होता है। प्यारे टयलहाइम! अगर आप अपने अङ्ग की हीनता के बूते पर भीख माँगने की आशा करते हों तो मैं भविष्यवाणी किये

देती हूँ कि आप किसी दरवाज़े पर सफल न हो सकेंगे। केवल मुझ जैसी सुशील लड़की के दरवाज़े को छोड़कर।

मेजर ट्यलहाइम—प्रिय मिना! इस समय तो मैं तुम को उपहास करने वाली ही पा रहा हूं।

मिना—और मैं आपके उलहने में केवल 'प्रिय मिना" इन्हीं शब्दों को सुन रही हूँ। अब मैं और उपहास नहीं करूँगी। क्योंकि मुझे ख़्याल आ गया कि आप थोड़े बहुत अङ्गहीन अवश्य हैं। आपकी सीधी बाँह गोली से ज़ख्मी हो चुकी है। तो भी सब बातों पर विचार करने पर मूझे उसमें भी कोई दोष दिखलाई नहीं देता। बल्कि उलटा लाभ यह है कि आप के घूँसों से मुझे कम ही डर रहेगा।

मेजर ट्यलहाइम—देवी जी!

मिना—आप कहेंगे "लेकिन मुझे तो तुम्हारे घूँसों से अब अधिक डर रहेगा।" प्रिय टय्लहाइम! मैं आशा करती हूँ कि आप यहाँ तक नौबत ही न आने देंगे।

मेजर ट्यलहाइम—कुमारी जी! तुम उपहास करती हो। मुझे यही शिकायत है कि मैं तुम्हारे साथ उपहास में सम्मिलित नहीं हो सकता।

मिना—क्यों नहीं? उपहास के विरुद्ध आप क्या कह सकते हैं? क्या मनुष्य उपहास करने के साथ ही साथ गम्भीर भी नहीं हो सकता? प्रिय मेजर! चिड़चिड़ा होने की अपेक्षा हंसी हमारी बुद्धियों को अधिक ठिकाने रखती है। इसका प्रमाण हमारे

सामने है। हँसी करने वाली आपकी मिना आपकी दशा का आपकी अपेक्षा अधिक ठीक अन्दाज़ा कर रही है। नौकरी से पृथक् होने के कारण आप समझते हैं कि आपकी प्रतिष्ठा में बट्टा लग गया है।

क्योंकि आपकी बाँह में गोली लग चुकी है इसलिये आप अपने को अङ्गहीन कहते हैं। क्या यह ठीक है? क्या यह अतिशयोक्ति नहीं है? और इसमें क्या मेरा हाथ है कि अतिशयोक्तियाँ उपहासास्पद होती हैं?

मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि आप का भिखारीपन भी जाँचने पर इसी तरह असत्य सिद्ध होगा। यह हो सकता है कि आपने एक बार दो बार, तीन बार, अपने माल असबाब को खो दिया हो; या आपका किसी न किसी धनी के पास में जमा किया हुआ धन, औरो के धन की तरह, मारा गया हो; या आपको नौकरी की अवस्था में दूसरों को दिये हुए अपने धन के पुनः मिलने की भी आशा न हो। लेकिन यह सब होने पर भी क्या आप भिखारी हो गये हैं? जो कुछ मेरे चाचा अपने साथ आपको देने के लिये ला रहे हैं उसको छोड़कर अगर आपने और सब कुछ खो दिया है—

मेजर ट्यलहाइम—देवी जी! आप के चाचा जी मेरे लिये कुछ नहीं ला सकते।

मिना—उन दो हज़ार अशर्फ़ियों को छोड़ कर, जिनको आपने उदारता-पूर्वक हमारी गवर्नमेन्ट को दिया था, और कुछ नहीं।

मेजर ट्यलहाइम—देवी जी ! क्या ही अच्छा होता अगर आपने मेरी चिट्ठी पढ़ ली होती !

मिना—अजी, मैं उसे पढ़ चुकी हूँ। लेकिन जो कुछ इस विषय में मैंने उसमें पढ़ा है वह तो मेरे लिये एक रहस्य है। यह असम्भव है कि एक सराहनीय काम को कोई अपराध ठहरावे। इसे ज़रा मुझे समझाइये, प्रिय मेजर !

मेजर ट्यलहाइम—देवी जी ! तुमको याद होगा कि मुझे यह आज्ञा हुई थी कि मैं आप के आसपास के ज़िलों से युद्ध के लिये चन्दा सख़्ती के साथ इकट्ठा करूँ। मैं उस सख़्ती से बचना चाहता था—और इसीलिये जो कुछ चन्दे में कमी थी उसे मैंने अपने पास से पूरा कर दिया था।

मिना—हाँ मुझे ख़ूब याद है। आप को देखने के पहले ही इसी काम के कारण मैं आपसे प्रेम करने लगी थी।

मेजर ट्यलहाइम—सैक्सनी की गवर्नमेन्ट ने इसके लिये अपना रुक्क़ा मुझको दिया। मुझे आशा थी कि शाति के स्थापित होने पर यह हिसाब उस ऋण में शामिल कर दिया जावेगा जिसकी सरकार देनदार थी। रुक्क़े की सचाई पर तो विश्वास कर लिया गया। परन्तु इस पर सन्देह ही किया गया कि उसका स्वामित्व मुझमें ही है। लोगो को इस बात का विश्वास नहीं हुआ कि वह धन मैंने ही नक़द अपने पास से दे दिया था। लोगों ने समझा कि वह रुक्क़े का धन सैक्सनी की गवर्नमेन्ट ने बतौर घूँस के मुझे दिया था ; क्योंकि मैं उस समय अत्यन्त

अर्थ-संकट के कारण कम से कम धन लेने को तय्यार हो गया था। इस कारण से वह रुक्का मेरे पास से ले लिया गया। और अगर उसका रुपया अदा भी किया गया तो कम से कम मुझको नहीं दिया जावेगा।—

इस कारण से, देवी जी ! मैं समझता हूँ कि मेरी प्रतिष्ठा में बट्टा लग गया है; न कि नौकरी से पृथक् किये जाने के कारण। इसके लिये तो मैं स्वयं प्रार्थना करने वाला था। तुम गम्भीर क्यो हो गई ? देवी जी ! हँसती क्यों नहीं ? हा ! हा ! हा ! मैं तो हँस रहा हूँ।

मिना—ट्यलहाइम ! कृपया इस हसी को बन्द करिये। इस भयानक हँसी में मानव-समाज के प्रति घृणा भरी हुई है। नहीं, आप ऐसे मनुष्य नहीं हो जिनको अपने किये हुए एक अच्छे काम पर इसलिए पछतावा आवे कि उसके कारण आप पर कुछ बुराई आई है। और ये दुष्परिणाम भी कुछ अधिक समय तक नहीं रह सकते। सच्चाई अवश्य प्रकट होकर रहेगी। मेरे चाचा जी की गवाही—और हमारी गवर्नमेन्ट की—

मेजर ट्यलहाइम—आपके चाचा जी की ! आपकी गवर्नमेन्ट की ! हा ! हा ! हा !

मिना—ट्यलहाइम ! आपकी यह हँसी मुझे मार डालेगी। अगर आपको सदाचार और ईश्वर पर विश्वास है तो ऐसी हँसी मत हँसो ! इस हँसी से अधिक भयानक शाप मैंने कभी नहीं सुना। और अधिक से अधिक अगर यहाँ लोग आप

की सत्यता पर सदेह करने पर तुले ही हुए हैं तो भी हम लोगों के विषय में तो ऐसा नहीं है। नहीं, हम लोग आप पर सन्देह नहीं करेंगे, नहीं कर सकते हैं। और अगर हमारी गवर्नमेंट में आत्म-सम्मान की थोड़ी सी भी मात्रा है, तो मैं समझती हूं कि उसका क्या कर्त्तव्य होना चाहिये। परंतु मैं क्या कह रही हूँ। यह कौन सी बड़ी बात है? ट्यलहाइम! आप यही समझ लें कि आपने दो हज़ार अशर्फ़ियाँ एक सायंकाल को किसी तमाशे में उड़ा दीं। अगर आपके लिये बादशाह का पत्र प्रतिकूल निकला तो 'शाहज़ादी' (अपनी ओर इशारा करते हुए) तो उतना ही अनुकूल होगी। मेरा विश्वास करो कि ईश्वर एक प्रतिष्ठित मनुष्य की हानि का सदैव बदला चुका देते हैं—और बहुत करके पहले से ही रक्षा करते हैं। जिस काम के कारण आपको दो हज़ार अशर्फ़ियों की हानि उठानी पड़ी उसी के कारण आपको मैं मिल गई। उसके बिना मेरी यह कभी इच्छा न होती कि मैं आपका परिचय प्राप्त करूँ। आपको मालूम है कि मैं उस मण्डली में जहाँ आपके मिलने की आशा थी बिना बुलाये ही चली गई थी। वहां मैं केवल आपके कारण गई थी। मैं आपके साथ प्रेम करने का पक्का निश्चय करके गई थी—वस्तुतः मैं पहले से ही आप से प्रेम करने लगी थी। मैंने ठान लिया था कि मे आप को अपना बनाऊँगी, चाहे आप वेनिस के मूर की तरह कुरूप और काले क्यों न हों। पर आप न तो उसकी तरह काले हैं, न

कुरूप। और न उसकी तरह ईर्ष्यालु ही होवेंगे। लेकिन, ट्यल-हाइम! आप तौ भी बहुत कुछ उसके समान हैं। आः! उस कठिन-हृदय मनुष्य का क्या कहना जिसकी दृष्टि अविचल-रूप से सदा यश की कामना पर ही लगी रहती है—और जिसके हृदय में किन्हीं और भावों का उदय ही नहीं होता! इधर देखिये! टयलहाइम! मेरी तरफ़ देखिये! (टयलहाइम अपनी दृष्टि को एक ही तरह जमाये हुए निश्चल-रूप से अपने विचारो में निमग्न हैं) आप क्या सोच रहे हैं? क्या मेरी बात नहीं सुनते?

मेजर ट्यलहाइम—(शून्य-हृदयता से) ओह, हाँ। यह तो कहो कि वेनिस की नौकरी में मूर किस तरह आये? क्या उन लोगो का अपना कोई देश नहीं था? वे लोग दूसरे देश के लिये अपना बल और ख़ून क्यों बेच देते थे?

मिना—(भय-भीत होकर) टयलहाइम! आप कहाँ हैं? अच्छा अब हमें ये बातें बंद कर देनी चाहियें। आइये! (उनको हाथ से पकड़ते हुए)—फ्रासिस्का! गाड़ी मँगाओ।

मेजर ट्यलहाइम—(अपना हाथ छुड़ाकर और फ्रांसिस्का के पास जाकर) नहीं, फ्रांसिस्का! मैं तुम्हारी स्वामिनी के साथ जाने के सम्मान को नहीं मान सकता। देवी जी! अभी आप मेरी बुद्धि को ठिकाने रहने दीजिये; और मुझे जाने की आज्ञा दीजिये। आप जिस ढंग से बात-चीत कर रहीं हैं उस तरह से मैं वस्तुतः अपनी बुद्धि से हाथ धो बैठूँगा। मैं यथाशक्ति

अपनी बुद्धि को ठिकाने रखने का प्रयत्न कर रहा हूँ। परन्तु जब तक मेरी बुद्धि ठिकाने है आप मेरे इस निश्चय को, जिससे मुझे संसार में कोई नहीं हटा सकता, सुन लीजिये। वह यह है—अगर मेरे भाग्य-चक्र ने अच्छा पलटा नहीं लिया और मेरी वर्त्तमान दशा में पूर्णतया परिवर्तन न हुआ; अगर—

मिना—मेजर महाशय! मुझे आपकी बात को काटना पड़ता है—फ्रांसिस्का! हमें वह बात इनसे पहले ही कह देनी चाहिये थी। तुम मुझे कोई बात याद नहीं दिलाया करतीं।—टय्यल-हाइम! यदि मैं इस वार्तालाप को उस सुसमाचार से शुरू करती जिसे कप्तान मार्लिनेअर आप के लिये अभी लाये थे तो हमारी बातचीत किसी दूसरे ही ढंग की होती।

मेजर टय्यलहाइम—कप्तान मार्लिनेअर! वह कौन हैं?

फ्रांसिस्का—मेजर महाशय! वह एक बड़ा ईमानदार आदमी हो सकता है—सिवाय इसके कि—

मिना—चुप रहो फ्रांसिस्का! वह भी डच सरकार की नौकरी से पृथक् किया हुआ एक अफ़सर है, जो—

मेजर टय्यलहाइम—आः! लेफ्टिनेन्ट रिको?

मिना—उसने हमें विश्वास दिलाया था कि वह आपका एक मित्र है।

मेजर टय्यलहाइम—मैं तुम को विश्वास दिलाता हूँ कि मैं उसका मित्र नहीं हूँ।

मिना—और यह कि उससे महाराज के किसी मंत्री ने बतौर रहस्य के

कहा था कि आपका मामला बहुत करके बिलकुल आपके पक्ष में ही तै होनेवाला है। इस विषय में महाराज का आदेश-पत्र आपके पास आने ही वाला होना चाहिये।

मेजर ट्यलहाइम—मार्लिनेअर और एक राज-मन्त्री का मेल कैसे हुआ?—मेरे मामले के विषय में कुछ न कुछ तै हो ही गया होगा। क्योंकि युद्ध-विभाग के ख़ज़ांची ने अभी मुझसे कहा था कि महाराज ने वह सारी बातें जो मेरे विरुद्ध कही गई थीं रद्द कर दी हैं और मैं अपनी उस लेखबद्ध प्रतिज्ञा को वापिस ले सकता हूँ—जिस के अनुसार मुझे, जब तक मैं सवर्था दोष से मुक्त न हो जाऊँ, कहीं न जाना चाहिये था। बस सब मामला यहीं तक समाप्त हो जायगा। वे मुझे यहाँ से निकल जाने का अवसर देना चाहते हैं। परन्तु वे भूल में हैं। मैं यहाँ से कहीं न जाऊँगा। यह भले ही हो कि अत्यन्त कष्टों के कारण मेरे अपवाद करने वालों की आँखों के सामने मेरा सर्वनाश हो जावे—परंतु मैं

मिना—आप एक बड़े ज़िद्दी आदमी हैं!

मेजर ट्यलहाइम—मैं कोई अनुग्रह नहीं चाहता। मैं न्याय चाहता हूँ। मेरा यश—

मिना—आप जैसे मनुष्य का यश—

मेजर ट्यलहाइम—(जोश के साथ) नहीं, देवी जी! आप प्रत्येक बात के विषय में अपना निर्णय कर सकती हैं; परंतु इसके

विषय में नहीं। आत्म-सम्मान का भाव हमारी सदसद् को बतलाने वाली बुद्धि का धर्म नहीं है। और इसका स्वरूप कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साक्ष्य पर भी निर्भर नहीं है।

मिना—नहीं, नहीं, यह मैं ख़ूब जानती हूँ। आत्म-सम्मान के भाव के विषय में यही कहा जा सकता है कि वह ···· आत्म-सम्मान का भाव है।

मेजर ट्यलहाइम—संक्षेप में, देवी जी! ····आपने मेरी बात पूरी न होने दी।—मैं कहना चाहता था, अगर ये लोग निर्लज्जता से जो धन मेरा है उसे मुझे न लौटा देवेंगे—अगर मेरी प्रतिष्ठा में जो बट्टा लगाया गया है वह पूर्ण रूप से दूर नहीं होगा तो मैं तुम्हारा कभी नहीं हो सकता—क्योंकि संसार की दृष्टि में मैं तुम्हारा होने के योग्य नहीं हूँ। बार्नह्यल्म की कुमारी के योग्य वही पति हो सकता है जो सर्वथा अनिन्दनीय हो। वह प्रेम किस काम का जिसे अपने प्रेम-पात्र को दूसरों की घृणा का विषय बनाने में संकोच प्रतीत नहीं होता। वह मनुष्य किस काम का जिसे स्वयं निर्धन होते हुए एक स्त्री की सम्पत्ति से धनवान् बनने में लज्जा नहीं आती—उस स्त्री की जिसका प्रेमान्ध कोमल हृदय—

मिना—तो क्या मेजर महाशय! आप का वस्तुतः यही भाव है? (यकायक अपना मुँह फेर कर) फ़्रांसिस्का!

मेजर ट्यलहाइम—क्रोध न करो।

मिना—(फ़्रांसिस्का से पृथक्) अब मौक़ा है ! फ़्रांसिस्का ! तुम्हारी क्या सलाह है ?

फ़्रांसिस्का—मैं कुछ सलाह नहीं देती। परंतु इसमें सन्देह नहीं कि यह कुछ अधिक ज़्यादती कर रहे हैं।

मेजर स्यलहाइम—(बात काटने के लिये पास आकर) देवी जी ! तुम क्रुद्ध हो गईं ?

मिना—(सोपालम्भ) मैं ? नहीं, ज़रा भी नहीं।

मेजर स्यलहाइम—अगर ऐसा होता कि मैं तुम्हारे साथ पहले से अब कम प्रेम करता हूँ—

मिना—(उसी लहजे में) ओह ! निःसन्देह वह मेरे लिये बड़ा दुर्भाग्य होता।—और मेजर महाशय ! सुनिये—मैं भी आपके लिये दुःख का कारण नहीं बनना चाहती। मनुष्य का प्रेम ऐसा होना चाहिये कि उसमें स्वार्थ की ज़रा सी भी मात्रा न हो।—यह अच्छा ही हुआ कि मैंने अब तक सब कुछ खोल कर आपसे नहीं कह दिया। उस दशा में शायद आप उस बात को जिसको आप प्रेम-वश नहीं कर सकते दयावश कर बैठते (अपनी अंगुली से धीरे धीरे अँगूठी को उतारते हुए)

मेजर स्यलहाइम—देवी जी ! इससे तुम्हारा क्या अभिप्राय है ?

मिना—नहीं ; हम में से किसी को भी यह न चाहिये कि वह दूसरे को कम या ज़्यादा सुखी बनावे। सच्चे प्रेम का यही अर्थ है। मेजर महाशय ! मैं आपका विश्वास करती हूँ। और आपको

प्रतिष्ठा का इतना अधिक ख़्याल है कि आप प्रेम के विषय में भूल नहीं कर सकते।

मेजर ट्यलहाइम—कुमारी जी ! क्या तुम हँसी कर रही हो ?

मिना – यह अपनी अँगूठी आप वापिस लीजिये, जिसके द्वारा आपने मेरे प्रति अपने सच्चे प्रेम की प्रतिज्ञा की थी। (उसको अँगूठी देती है) ऐसा ही सही। हम समझेंगे कि हम कभी मिले ही नहीं थे।

मेजर ट्यलहाइम—मैं क्या सुन रहा हूँ ?

मिना—क्या इससे आपको आश्चर्य होता है ? इसे लीजिये। महाशय ! आप यह सब कुछ झूँठ मूँठ तो कह ही नहीं रहे थे।

मेजर ट्यलहाइम—(उसके हाथ से अँगूठी लेकर) हे भगवन् ! क्या मिना ऐसा कह सकती है !

मिना—एक दशा में आप मेरे नहीं हो सकते; मैं आप की किसी दशा में नहीं हो सकती। आपका दुर्भाग्य तो अभी संभावना की ही कोटि में है; मेरा तो निश्चित है। अच्छा, ईश्वर आप को अच्छा रक्खे ! (जाना चाहती है)

मेजर ट्यलहाइम—प्रियतमे ! मिना ! तुम कहाँ जाती हो ?—

मिना—महाशय ! अब आप घनिष्ठ परिचय के द्योतक शब्द का प्रयोग करके मेरा अपमान करते हैं।

मेजर ट्यलहाइम—देवी जी ! क्या मामला है ? तुम कहाँ जाती हो ?

मिना—मुझे जाने दीजिये। ऐ धोखेबाज़ ! मैं आप से अपने आँसुओं को छिपाने जाती हूं ! (चली जाती है)

———

दृश्य सातवाँ

मेजर टयलहाइम, फ़्रांसिस्का !

मेजर टयलहाइम—"अपने आँसुओं को ?" और मुझे उनको छोड़कर चला जाना चाहिये ? (उसके पीछे २ जाना चाहता है)

फ्रांसिस्का—(उनको रोककर) मेजर महाशय ! ऐसा नहीं हो सकता ! आप उनके कमरे में पीछे पीछे नहीं जाइये !

मेजर टयलहाइम—"उनका दुर्भाग्य ?" क्या उन्होंने दुर्भाग्य का ज़िक्र नहीं किया था ?

फ्रांसिस्का—हाँ ठीक तो है, आपके खो जाने का दुर्भाग्य जब कि—

मेजर टयलहाइम—'जब कि" ? कब ? इसका पूरा अभिप्राय क्या है ? फ्रांसिस्का ! बोलो।

फ्रांसिस्का—अर्थात् जब कि उन्होंने आपकी ख़ातिर इतना त्याग किया है।

मेजर टयलहाइम—मेरी ख़ातिर त्याग किया है !

फ्रांसिस्का—अच्छा, संक्षेप में सुनिये। मेजर महाशय ! यह आपके लिये बहुत अच्छा है कि आप का सम्बन्ध इस प्रकार उनसे पृथक् हो गया—मैं आपसे यह क्यों न कह दूँ ? बहुत दिनों तक यह बात छिपी नहीं रह सकती।—हम दोनों घर से भाग आई हैं। ब्रुख़साल के काउन्ट महाशय ने मेरी स्वामिनी को अपने उत्तराधिकारित्व के पद से हटा दिया है, क्योंकि वे उनकी रुचि के किसी व्यक्ति के साथ अपना सम्बन्ध करने को

राज़ी नहीं थीं। इस कारण से सब किसी ने उनको छोड़ दिया और उनका अपमान किया। ऐसी दशा में हम क्या कर सकती थीं? हमने उनको ढूँढ़ने का निश्चय किया, जिनको—

मेजर टयलहाइम—बस पर्याप्त है!—आओ, मुझे उनके पैरों पर पड़ना चाहिये।

फ्रांसिस्का—आप क्या सोचते हैं? आपको तो बल्कि चला जाना चाहिये और अपने भाग्य को सराहना चाहिये—

मेजर टयलहाइम—चल कमबख़्त! तुम मुझे क्या समझती हो? नहीं! फ्रांसिस्का! यह उपदेश तुम्हारे हृदय से नहीं निकला है। मेरे क्रोध को क्षमा करो।

फ्रांसिस्का—मुझे ज्यादा देर न रोकिये। मुझे देखना चाहिये कि वे क्या करती हैं। ज़रा में न जाने वे क्या कर बैठें। आप अब जाइये। और फिर अगर चाहें तो आइये।

(मिना के पीछे जाती है)

दृश्य आठवाँ

मेजर टयलहाइम

मेजर टयलहाइम—लेकिन फ्रांसिस्का!—ओह मैं तुम्हारे लौटने तक यहीं प्रतीक्षा करूँगा।—नहीं, इससे तो और भी अधिक कष्ट होगा।—यदि उनका भाव वस्तुतः सच्चा है तो ऐसा नहीं हो सकता कि वे मुझे क्षमा न करें!—भई पाउलवेर्नर! अब मैं तुम्हारी सहायता चाहता हूँ।—नहीं, मिना, मैं धोख़ेबाज़ नहीं हूँ।

[तेज़ी से चला जाता है]

अंक पाँचवाँ

दृश्य पहला

स्थान—बड़ा कमरा।

श्यलहाइम एक ओर से और पाउलवेर्नर दूसरी तरफ़ से आते हुए

श्यलहाइम—ओहो वेर्नर ! मैं तुमको सब जगह ढूंढ़ रहा हूँ। तुम कहाँ थे ?

पाउलवेर्नर—और, मेजर महाशय ! मैं आप को ढूंढ़ रहा हूँ। ऐसा प्रायः हो जाता है। —मैं आप के लिये एक शुभ समाचार लाया हूँ।

श्यलहाइम—मुझे इस समय तुम्हारे समाचार की आवश्यकता नहीं है; मुझे तुम्हारे रुपये की ज़रुरत है। जल्दी करो, वेर्नर! जितना भी रुपया तुम्हारे पास है मुझे ला दो और इसके बाद जितना भी तुमको दूसरी जगह से मिल सके उतना लेलो।

पाउलवेर्नर—मेजर महाशय ! अपनी शपथ, मैंने तो पहले ही कह रक्खा था कि आप मुझसे तब रुपया उधार माँगेंगे जब कि ख़ुद आप के पास रुपया दूसरों को उधार देने के लिये होगा।

श्यलहाइम—तुम कहीं बहाना तो नहीं कर रहे हो ?

पाउल वेर्नर—मुझे कहीं आप को उलहना देने का अवसर न मिले—इसलिए आप एक हाथ से मुझसे रुपया लीजिये और दूसरे हाथ से देदीजिए।

ट्यलहाइम—वेर्नर! देर न लगाओ। मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि तुम्हारा रुपया तुमको अवश्य वापिस दूँगा। परन्तु कब और किस तरह? यह ईश्वर ही जानते हैं।

पाउलवेर्नर—तो क्या आपको अभी तक यह पता नहीं है कि ख़ज़ाने में यह आज्ञा आई है कि आपका रुपया आपको दे दिया जावे? मैंने यह अभी सुना है।

ट्यलहाइम—तुम क्या बक रहे हो? तुम को किसने बहका दिया है? क्या तुम यह नहीं समझते हो कि अगर यह बात सच होती तो सब से पहले इसे मैं ही सुनता? बस वेर्नर! जल्दी रुपया ला दो।

पाउलवेर्नर—बहुत अच्छा, ख़ुशी से। कुछ रुपया तो यह लीजिये। यह सौ अशर्फ़ियाँ हैं और यह सौ डकट हैं। (दोनों उसको देता है)

ट्यलहाइम—वेर्नर! जाओ और यह सौ अशर्फ़ियाँ जुष्ट को दो। उससे कहना कि इनसे उस अगूठी को छुड़ा लावे जिसको आज ही प्रातःकाल गिर्वी रक्खा है।—लेकिन वेर्नर! और रुपया तुम कहाँ से लाओगे? मुझे और भी अधिक रुपये की आवश्यकता है।

पाउलवेर्नर—इसको मुझ पर छोड़ दीजिये। वह आदमी जिसने मेरा

खेत मोल लिया है शहर में रहता है। रुपया अदा करने के समय मैं अभी १५ दिन हैं—लेकिन रुपया तैयार है और सौ पीछे कुछ कम कर देने से—

टय्लहाइम—बहुत अच्छा, मेरे प्यारे वेर्नर ! देखो मैंने तुम्हारा ही सहारा लिया है। मुझे तुम से सब रहस्य भी कह देना चाहिये।—यह नवयुवती जिनको तुमने देखा है इस समय आपत्ति में हैं।

पाउलवेर्नर—यह तो बुरा है !

टय्लहाइम—लेकिन कल को वह मेरी पत्नी हो जावेंगी।

पाउलवेर्नर—यह बड़ा अच्छा है।

टय्लहाइम—और परसों मैं उनके साथ यहां से चला जाऊंगा। मैं जा सकता हूँ। मैं जाऊँगा। और सब कुछ मैं यहीं छोड़ दूँगा। कौन जानता है कि किस जगह मेरा भाग्य जागे ? वेर्नर ! अगर तुम चाहो तो हमारे साथ चलो। हम फिर नौकरी करेंगे।

पाउलवेर्नर—सचमुच ? परन्तु मेजर महाशय ! वहां चलिये जहां कि युद्ध होता हो !

टयलहाइल—ज़रूर वहीं। जाओ वेर्नर ! इसके विषय में हम फिर बातचीत करेंगे।

पाउलवेर्नर—ओह मेरे प्यारे मेजर ! परसों ! कल ही क्यों नहीं ? मैं सब तैयारी कर लूँगा। मेजर महाशय ! फ़ारिस देश में आजकल प्रसिद्ध युद्ध हो रहा है। आपकी क्या राय है ?

ट्यलहाइम—इस पर हम विचार करेंगे; अब तो वेर्नर ! तुम जाओ।

पाउलवेर्नर—अहह ! ईश्वर करे महाराज हिरैक्लिउस चिरकाल तक जीवित रहें।

[बाहर जाता है]

दृश्य दूसरा

मेजर ट्यलहाइम

मेरे मन की कैसी दशा है !........मेरी आत्मा में एक नई स्फूर्ति आ गई है। अपने निजी दुर्भाग्य से तो मैं अत्यन्त दब गया था—उसके कारण मैं चिड़चिड़ा, अदूरदर्शी, शर्मीला और बेपरवाह हो रहा था। पर उनका दुर्भाग्य मुझको ऊपर उठा रहा है; मैं प्रत्येक बात ठीक २ सोच सकता हूँ; और उनकी ख़ातिर किसी भी दुष्कर काम को करने के लिये अपने को योग्य और सशक्त अनुभव करता हूँ।—मैं देर क्यों लगा रहा हूँ ? (मिना के कमरे की ओर जाता है जब कि फ्रांसिस्का उससे बाहर आती है।

——:०:——

दृश्य तीसरा

फ्रांसिस्का, मेजर ट्यलहाइम

फ्रांसिस्का—क्या आप ही हैं ? मुझे ऐसा प्रतीत हुआ था जैसे कि मैंने आप की आवाज़ सुनी हो। मेजर महाशय ! आप क्या चाहते हैं ?

ट्यलहाइम—मैं क्या चाहता ! तुम्हारी स्वामिनी क्या कर रही हैं ! आओ ?

फ्रांसिस्का—वह इस समय सवारी पर सैर करने जा रही हैं।

ट्यलहाइम—क्या इकेले ? मेरे बिना कहाँ को ?

फ्रांसिस्का—मेजर महाशय ! क्या आप भूल रहे हैं ?

ट्यलहाइम—फ्रांसिस्का ! क्या तुम पागल तो नहीं हो ? मेरे चिड़ा देने से वह क्रुद्ध हो गई हैं। मैं उनसे क्षमा माँग लूगा—और वह मुझे क्षमा कर देगी।

फ्रांसिस्का—कैसे ? मेजर महाशय ! अंगूठी वापिस ले लेने के बाद ?

ट्यलहाइम—आः, यह तो मैंने अपनी घबराहट के कारण कर लिया था। अंगूठी के विषय में तो मैं भूल ही गया था। मैंने उसे कहाँ रख दिया ? (उसको ढूंढ़ता है) यह है।

फ्रांसिस्का—क्या यह वही है ?

(पृथक्, जब कि वह उसे पुनः अपनी जेब में रख लेते हैं)
यह ज़रा उसे ग़ौर से तो देखे !

ट्यलहाइम—उन्होंने इसे मुझे कुछ कठोरता के साथ लौटाया था। लेकिन मैंने उस कठोरता को कभी का भुला दिया है। भावपूर्ण हृदय शब्दों को नहीं तोल सकता। इसे दुबारा लेने के लिये वे ज़रा भी इनकार नहीं करेंगी। और क्या मेरे पास उनकी अंगूठी नहीं है ?

फ्रांसिस्का—वह अब उसकी वापिसी की प्रतीक्षा कर रही हैं। मेजर महाशय ! वह कहाँ है ? कृपया उसे मुझे दिखलाइये !

ट्यलहाइम—(संकोच के साथ) मैं·········उसे पहिरना भूल गया हूँ। जुष्ट—जुष्ट उसे अभी ले आवेगा।

फ्रांसिस्का—मैं समझती हूँ ये दोनों एक दूसरे से मिलती जुलती हैं। मैं ज़रा इसे देखूँ। मुझे ऐसी चीज़ों का बड़ा शौक़ है।

ट्यलहाइम—फिर कभी, फ्रांसिस्का ! अब आओ—

फ्रांसिस्का—(पृथक्) यह अपनी भूल को कभी प्रकट न होने देंगे।

ट्यलहाइम—क्या कहा ? भूल ?

फ्रांसिस्का—मैं कहती हूँ कि यह एक भूल है कि आप अब भी मेरी स्वामिनी को सर्वथा अपने योग्य समझते हैं। उनकी अपनी निजी सम्पत्ति बहुत कम है। वह भी घर वालों के द्वारा हिसाब में ज़रा सी गड़बड़ किये जाने पर बिलकुल कौड़ियों के बराबर रह जायगी। उनको अपने चाचा से सब कुछ आशा थी; लेकिन उन क्रूर चाचा ने—

टयलहाइम—उनको रहने दो। क्या मैं पुरुष नहीं हूँ कि उनकी इस सारी हानि को फिर पूरा कर सकूँ ?

फ्रांसिस्का—सुनिये ! वे मेरे बुलाने को घंटी बजा रही हैं। मुझे फिर अन्दर जाना चाहिये।

टयलहाइम—मैं भी तुम्हारे साथ चलूगा।

फ्रांसिस्का—ईश्वर के वास्ते, नहीं। उन्होने स्पष्टतया मुझे आप से बातचीत करने को मना कर दिया है। कम से कम मेरे जाने के कुछ देर बाद अन्दर आइये।

(अन्दर जाती है)

दृश्य चौथा

मेजर ट्यलहाइम

मेजर ट्यलहाइम—(फ्रांसिस्का को बुलाते हुए) उनको मेरी सूचना दे दो, फ्रांसिस्का ! मेरे लिये उनसे कहना, फ्रांसिस्का ! मैं तुम्हारे पीछे अभी आता हूँ।—मैं उनसे क्या कहूँगा ? तो भी जहाँ हृदय कह सकता है वहां किसी तैयारी की आवश्यकता नहीं है। केवल एक बात के संबंध में कुछ सावधानी की आवश्यकता हो सकती है।—अपने दुर्भाग्य के कारण उन्हें अपने को मेरे लिये समर्पण करने में जो संकोच और दुविधा है; उनका जो प्रयत्न यह दिखाने के लिये है कि उनकी प्रसन्नता जो वस्तुतः मेरे कारण नष्ट हो चुकी है अब भी पूर्ववत्

ही है।… उनको मेरे आत्मसम्मान के विषय में तथा अपनी योग्यता के विषय में जो अविश्वास है उसके लिये अपनी दृष्टि में—क्योंकि मुझे तो पहले से ही इसका कुछ ख़्याल नहीं है—वे अपने को कैसे निर्दोष ठहरा सकती हैं?……आः! वह यहीं आ रही हैं।

दृश्य पाचवाँ

मिना, फ्रांसिस्का, मेजर ट्यलहाइम

मिना—(कमरे से निकलते ही और मेजर ट्यलहाइम की वहाँ उपस्थिति को मानो न जानते हुए) फ़ासिस्का! गाड़ी दरवाज़े पर आगई कि नहीं? मेरा पंखा—

ट्यलहाइम—(उसकी ओर बढ़कर) देवी जी! कहाँ जा रही हो?

मिना—(बनावटी रूखेपन से) बाहर, मेजर महाशय!—मैं अन्दाज़ा कर सकती हूँ कि आपने दुबारा यहाँ आने का क्यों कष्ट किया है: मेरी अंगूठी मुझे वापिस देने के लिये!—बहुत अच्छा, मेजर महाशय! कृपा करके उसे फ़्रांसिस्का को दे दीजिये।—फ़्रांसिस्का! मेजर ट्यलहाइम से अंगूठी ले लेना! मेरे पास अधिक समय नहीं है।

(जाना चाहती है)

मेजर ट्यलहाइम—(उसके सामने खड़े होकर) देवी जी ! मैंने यह क्या सुना ? मैं ऐसे प्रम के योग्य न था।

मिना—सो, फ्रांसिस्का ! तुमने मेजर महाशय से—

फ्रांसिस्का—सब कुछ कह दिया।

ट्यलहाइम—देवी जी ! मुझ पर क्रोध न करो। मैं धोखेबाज़ नहीं हूँ। तुमने मेरे कारण संसार की दृष्टि में सब कुछ खो दिया है—परंतु मेरी दृष्टि में कुछ भी नहीं। इस हानि से मेरी दृष्टि में तुम बहुत ऊँची हो गई हो। यकायक इस अर्थनाश के होने से तुम को डर था कि कहीं मेरे ऊपर इससे कुछ प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। प्रारम्भ में तुमने इसे मुझसे छिपाना चाहा। मुझे इस अविश्वास के कारण कोई शिकायत नहीं है। तुम्हारे ऐसा करने का कारण यही था कि तुम मेरे प्रेम को रखना चाहती थीं। तुम्हारा ऐसा चाहना मेरे लिये गर्व की बात है। तुमने मुझे संकट में पाया और तुमने मुझे एक और संकट में डालना नहीं चाहा ! तुम यह नहीं सोच सकीं कि तुम्हारा संकट मुझे अपने संकट की चिंता से मुक्त कर देगा।

मिना—यह सब ठीक है मेजर महाशय ! परंतु अब तो सब बात समाप्त हो चुकी। मैंने आपको आपके वाग्बन्धन से मुक्त कर दिया। आपने अँगूठी को वापिस लेकर—

ट्यलहाइम—किसी बात में अपनी स्वीकृति नहीं दे दी। बल्कि मै अब अपने को पहले से कहीं अधिक बन्धन में समझता हूँ।—मिना ! तुम मेरी हो ! सदा के लिये मेरी हो। (अंगूठी को

अपनी अंगुली से निकालता है) लो ! इसे दूसरी बार मेरी सचाई का चिह्न समझकर ले लो।

मिना—मैं इस अंगूठी को दुबारा ले लूँ ! इस अंगूठी को ?

मेजर ट्यलहाइम—तुमने अंगूठी को एक बार मेरे हाथ से लिया था जब कि हम दोनो एक सी दशा में थे। उस समय हम दोनो की दशा अच्छी थी। हम दोनों अब अच्छी दशा में नहीं हैं—लेकिन फिर भी हमारी दशा समान है। समानता सदा ही प्रेम की सब से मज़बूत गाँठ होती है।—प्रियतमे मिना ! मुझे आज्ञा दो (अंगूठी पहनाने के लिये उसका हाथ पकड़ता है)

मिना—क्या ! बलपूर्वक, मेजर महाशय ! नहीं, संसार में ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो मुझे इस अंगूठी को दुबारा लेने के लिये विवश कर सकती है। क्या आप समझते हैं कि मेरे पास अंगूठी नहीं है ? ओह ! आप देख सकते हैं (अपनी अंगूठी को दिखाते हुए) कि मेरे पास यह दूसरी अंगूठी है जो किसी प्रकार आप की से कम नहीं है।

फ्रांसिस्का—(पृथक्) अच्छा है अगर यह इसको अभी न देखें।

मेजर ट्यलहाइम—(मिना का हाथ छोड़कर) यह क्या है ? मैं बार्न-ह्यल्म की कुमारी को अपने सामने देख रहा हूँ। पर ये शब्द उनके नहीं हैं।—कुमारी ! तुम बहाना कर रही हो।—पर क्षमा करना कि आपके ही कहे हुए शब्दों को मैं दुहरा रहा हूँ।

मिना—(अपने स्वाभाविक लहजे में) क्या आपको ये शब्द बुरे लगे ? मेजर महाशय !

मेजर ट्यलहाइम—इनसे मुझे अति कष्ट हुआ है।

मिना—(पछतावे के लहजे में) ट्यलहाइम ! उनका प्रयोग इस लिये नहीं किया गया था। मुझे क्षमा कीजिये, ट्यलहाइम !

मेजर ट्यलहाइम—आः ! तुम्हारा यह स्नेहमय लहजा प्रकट करता है कि अब तुम अपने असली रूप में आ गई हो; कि तुम अब मुझसे प्रेम करती हो।

फ्रांसिस्का—(ज़ोर से कह उठती है) यह मज़ाक ज़रा सी देर में बहुत दूर पहुँच जाता।

मिना—(आज्ञा देने के लहजे में) फ्रांसिस्का ! मैं कहती हूँ कि हमारे मामले में तुम्हें दख़ल देने की ज़रूरत नहीं।

फ्रांसिस्का—(पृथक् आश्चर्य के लहजे में) क्या अभी तक काफ़ी नहीं हैं !

मिना—हाँ, महाशय ! मेरा रुखाई और धृष्टता का ढोंग केवल स्त्रियों के गर्व का ही द्योतक होगा। पर वास्तव में ऐसा नहीं है। यह उचित ही है कि आपके साथ मैं भी उसी तरह सत्यता के साथ व्यवहार करूँ जैसे आप कर रहे हैं। ट्यलहाइम ! मैं अब भी आपसे प्रेम करती हूँ। मैं अब भी आपको चाहती हूँ। लेकिन तो भी—

मेजर ट्यलहाइम—प्रियतमे मिना ! बस करो, और कुछ न कहो।

(अंगूठी पहनाने के लिये उसका हाथ फिर पकड़ता है)

मिना—(अपना हाथ खींच कर) तो भी मैंने और भी अधिक ठान लिया है कि वैसा कभी न होगा, कभी नहीं। मेजर महाशय! आप क्या सोच रहे हैं? मैं समझती थी कि आप को अपना संकट ही पर्याप्त है। आप का यहीं रहना ज़रूरी है। आपके लिये यह ज़रूरी है कि आप ढिठाई के साथ—इस समय कोई दूसरा शब्द मुझे नहीं सूझता—ढिठाई के साथ अपनी सफ़ाई को सिद्ध करें।—भले ही उस अत्यन्त सकट के कारण आपके निन्दकों के सामने आपका सर्वनाश हो जावे—

ट्यलहाइम—ऐसा मैं तब सोचता और कहता था जब मुझे इसका विचार नहीं था कि मैं क्या सोच रहा हूँ और क्या कह रहा हूँ। चिड़चिड़ेपन और बुद्धिनाशक क्रोध ने मेरी सारी आत्मा को ढाँप लिया था। प्रेम भी, आगामी आनन्दमय जीवन के पूरे प्रतिबिम्ब के दिखलाई देने पर भी, उस आवरण को दूर नहीं कर सकता था। परन्तु अब उसने अपनी पुत्री अनुकम्पा को—जो निराशामय दुर्भाग्य से अधिक परिचित है—भेज दिया है और उसने सब बादल दूर कर दिये हैं और सुकोमल भावों को ग्रहण करने वाले मेरी आत्मा के सब द्वारों को खोल दिया है। इस समय जब कि मैं देखता हूँ कि मुझे अपने से भी अधिक मूल्यवान् वस्तु की रक्षा करना है, और वह भी अपने परिश्रम से, तो आत्मरक्षा की स्वाभाविक प्रवृत्ति जाग उठी है। तुम इस 'अनुकम्पा' शब्द से बुरा न मानना। हमारे संकटों के निर्दोष कारण से हम इस शब्द को किसी

प्रकार के तिरस्कार के भाव के बिना सुन सकते हैं। मैं ही वह कारण हूं। मिना! मेरे कारण ही तुमने सब कुछ—मित्र, सम्बन्धी, सम्पदा और देश—खो दिया है। मेरे द्वारा, मेरे में, तुमको यह सब कुछ पाना चाहिये। नहीं तो स्त्रीजाति में सर्वसुन्दर रमणी का सर्वनाश मेरी आत्मा पर रहेगा। मुझे ऐसे भविष्य की भावना भी न करने दो जब कि मैं अपने आपको उपरोक्त दृष्टि से देखूंगा।—नहीं, अब कोई बात मुझे यहाँ नहीं रोक सकती। इस समय से अब मैं उस अन्याय के विरुद्ध जो मेरे साथ किया गया है सिवाय घृणा रखने के और कुछ नहीं करूँगा। क्या यह देश ही समस्त संसार है? क्या सूर्य केवल यहीं उदय होता है? मैं कहाँ नहीं जा सकता? मुझे कहाँ नौकरी नहीं मिल सकेगी? मुझे भले ही दूर से दूर देशों में जाना पड़े;—प्रियतमे मिना! केवल तुम विश्वास के साथ मेरे साथ रहो—हमें किसी चीज़ की कमी नहीं होगी। —मेरा एक मित्र है जो प्रसन्नतापूर्वक मेरी सहायता करेगा—

दृश्य छठा

एक अर्दली, मेजर ट्यलहाइम, फ्रांसिस्का

फ्रांसिस्का—(अर्दली को देख कर) हिश! मेजर महाशय—

मेजर ट्यलहाइम—(अर्दली से) तुम किसको ढूँढ़ते हो?

अर्दली—मैं मेजर ट्यलहाइम को ढूढ़ता हूँ। ओह! आप ही मेजर

महाशय हैं। मुझे आप को यह महाराज का पत्र देना है।
(अपने थैले से एक पत्र निकालते हुए)

मेजर ट्यलहाइम—मुझको ?

अर्दली—मुझे यही आज्ञा है—

मिना—फ्रांसिस्का ! तुम सुनती हो ?—आखिरकार कप्तान की बात सच ही निकली !

अर्दली—(ज्यों ही ट्यलहाइम उससे पत्र लेते हैं) मेजर महाशय ! कृपया क्षमा कीजिये। आपको यह कल ही मिल जाना चाहिये था। लेकिन कल आपको न ढूँढ़ सका। आज सवेरे मैंने आपका पता पैरेड के स्थान पर लेफ़्टिनेन्ट रिको से पाया था।

फ्रांसिस्का—मेरी स्वामिनी ! आपने सुना ? यह वही कप्तान के मन्त्री महाशय दीखते हैं।

मेजर ट्यलहाइम—इस कष्ट के लिये मैं तुम्हारा अत्यन्त अनुगृहीत हूँ।

अर्दली—मेजर महाशय ! मेरा तो यह कर्त्तव्य है।

[जाता है]

दृश्य सातवाँ

मेजर ट्यलहाइम, मिना, फ्रांसिस्का

ट्यलहाइम—आः मिना ! यह क्या है ? न जाने इसमें क्या लिखा है !

मिना—मुझे अपनी उत्सुकता को इतनी दूर तक ले जाने का अधिकार नहीं है।

मेजर ट्यलहाइम—क्या ? क्या तुम अब भी मेरे भाग्य को अपने भाग्य से पृथक् रखना चाहती हो ? लेकिन इसको खोलने में मुझे संकोच क्यों हो रहा है ? मैं जितने संकट में इस समय हूँ उससे अधिक संकट में यह मुझे नहीं डाल सकता। नहीं, प्रियतमे मिना ! यह हमको अब से अधिक संकट में नहीं डाल सकता।—लेकिन अधिक सुखी कर सकता है। ज़रा मैं इसे पढ़ लूँ। (जब कि वह पत्र को खोल कर पढ़ता है, मैनेजर चुपके से रंगमञ्च पर आता है।)

दृश्य आठवाँ

मैनेजर, शेष पूर्ववत्

मैनेजर—(फ्रांसिस्का से) हिश ! भली लड़की ! एक बात।

फ्रांसिस्का—(उसके पास जाकर) मैनेजर महाशय ! हम लोग स्वय अब तक नहीं जानते कि पत्र में क्या है।

मैनेजर—पत्र के विषय में मैं थोड़े ही पूछता हूँ। मैं उस अँगूठी के सम्बन्ध में आया हूँ। देवी जी को उसे फ़ौरन मुझे लौटा देना चाहिये। जुष्ट वहाँ है और उसे छुड़ाना चाहता है।

मिना—(जो इस बीच में स्वयं भी मैनेजर के पास आ जाती है) जुष्ट से कह दो कि उसे पहले ही छुड़ा लिया है; और उससे यह भी कह दो कि किसने—अर्थात् मैंने—

मैनेजर—लेकिन—

मिना—यह मेरे ऊपर है। जाओ।

(मैनेजर चला जाता है)

दृश्य नवाँ

मेजर ट्यलहाइम, मिना, फ्रांसिस्का

फ्रांसिस्का—देवी जी! अब तो बेचारे मेजर महाशय से झगड़ा निपटा लो।

मिना—वाह! बीच बिचाउ करने वाली! मानों सब झगड़े स्वयमेव जल्दी ख़त्म नहीं हो जावेंगे।

मेजर ट्यलहाइम—(पत्र पढ़ने के अनन्तर अत्यन्त आवेश के साथ) आहा! यह सब कुछ बिलकुल उनके अनुकूल ही है।—ओह, मिना! कैसा न्याय है! कैसी दया है!—यह तो उससे भी ज़्यादा है जितनी मैं आशा करता था, या जिसके मैं योग्य था। मेरी सम्पत्ति, मेरी प्रतिष्ठा! सब कुछ पुनः पूर्ववत् हो गई। क्या मैं सुपना तो नहीं देख रहा हूँ? (मानो अपने को यक़ीन दिलाने को, पुनः पत्र को देखता है) नहीं, यह कोई मेरी आकांक्षा से पैदा हुआ भ्रम नहीं है।—मिना! इसको ज़रा स्वयं पढ़ो! स्वयं पढ़ो!

मिना—मेजर महाशय! मैं ऐसी हिम्मत नहीं कर सकती।

मेजर ट्यलहाइम—हिम्मत कर सकती? मिना! यह पत्र मेरे लिये—

तुम्हारे ट्यलहाइम के लिये है। इसमें जो है उसे तुम्हारे चाचा तुम से नहीं छीन सकते। तुम्हें इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। इसे ज़रूर पढ़ो।

मिना—अच्छा, मेजर महाशय ! यदि आपकी इसी में प्रसन्नता है।

(पत्र को लेकर पढ़ती है)

"मेरे प्रिय मेजर ट्यलहाइम,

इस पत्र के द्वारा मैं तुमको सूचित करता हूँ कि वह मामला जिससे मुझे, तुम्हारी प्रतिष्ठा के कारण, कुछ चिन्ता थी, तुम्हारे पक्ष में तय हो गया है। मेरे भाई उस मामले को अधिक विस्तार से जानते थे। और उनकी गवाही से ज़रूरत से ज्यादा तुम्हारी निर्दोषता सिद्ध हो गई। सरकारी ख़ज़ाने को आज्ञा दे दी गई है कि फिर तुमको वह रुक्क़ा दे दिया जावे और जो कुछ रुपया तुमने अपने पास से दिया था वह तुमको अदा कर दिया जावे। मैंने यह भी आज्ञा दे दी है कि जो कुछ रुपया तुम्हारी तरफ़ ख़ज़ान्ची की तरफ़ से निकाला जाय वह भी छोड़ दिया जावे। कृपया मुझे सूचित करो कि तुम्हारा स्वास्थ्य इस योग्य है कि तुम फिर नौकरी में आ सकते हो। मैं तुम्हारी जैसी वीरता और उच्च भावों के मनुष्य को प्रसन्नता से नहीं छोड़ सकता।

मैं हूँ तुम्हारा कृपालु

महाराज........"

ट्यलहाइम—मिना ! अब इस पर तुम्हें क्या कहना है ?

मिना—(पत्र को बंद करके लौटाती है) मुझे ? कुछ नहीं।

मेजर ट्यलहाइम—कुछ नहीं ?

मिना—ठहरो—हाँ, तुम्हारे महाराज जो एक बड़े आदमी हैं एक श्रेष्ठ मनुष्य भी हो सकते हैं। परन्तु इससे मुझे क्या, वे मेरे महाराज नहीं हैं।

मेजर ट्यलहाइम—तुम्हें कुछ और नहीं कहना है ? हमारे अपने विषय में कुछ नहीं ?

मिना—आप फिर नौकरी कर लेंगे। मेजर से लेफ़्टिनेन्ट करनल या शायद करनल हो जावेंगे। मैं हृदय से आपको बधाई देती हूँ।

मेजर ट्यलहाइम—क्या मेरे विषय में तुम अधिक नहीं जानतीं ? नहीं; भाग्य ने मुझे दुबारा इतनी काफ़ी सम्पत्ति दिला दी है जितनी एक समझदार मनुष्य की इच्छाओं की पूर्ति के लिये पर्य्याप्त है। यह केवल मेरी मिना पर ही निर्भर होगा कि सिवाय उसके किसी और का भी अधिकार मुझ पर रहेगा या नहीं। मेरा सारा जीवन केवल उसी की सेवा में समर्पण कर दिया जायगा। बड़ों की नौकरी भयजनक होती है और उसमें उस कष्ट, परतन्त्रता और अनादर के लिये जो उसके कारण मनुष्य को उठाने पड़ते हैं बदला नहीं मिलता। मिना उन गर्वीली स्त्रियों में से नहीं हैं जो अपने पतियों से केवल उनकी पदवियों और उच्च पद के कारण ही प्रेम करती हैं। वह मुझ से केवल मेरे कारण ही प्रेम करेगी; और मैं उसके कारण ही

सारे संसार को भुला दूंगा। मैं अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण ही योद्धा बना था--किस राजनैतिक सिद्धांत के कारण? यह मैं स्वयं नहीं जानता—और इस वहम से कि प्रत्येक प्रतिष्ठित मनुष्य के लिये यह अच्छा है कि वह कुछ समय के लिये एक योद्धा का जीवन व्यतीत करके देखे और इस प्रकार भयावह प्रसंगों का अपने को आदी बनाये और साथ ही शांति, गम्भीरता और दृढ़-निश्चयता को सीखे। केवल अत्यंत आवश्यकता ही इस अल्पकालीन जाँच को आजीविका के एक स्थिर तरीक़े में, और इस तात्कालिक शौक़ को एक पेशे में परिवर्तित कर सकती थी। परंतु अब जब कि कोई बात मुझे विवश नहीं कर रही है मेरी पूर्ण अभिलाषा केवल यही है कि मैं शांत और संतुष्ट जीवन व्यतीत करूँ। प्रियतमे मिना! ऐसा तुम्हारे साथ में ही हो सकता है। तुम्हारे संग में मैं सर्वथा शांत और संतुष्ट रह सकूँगा—कल हमें पवित्र गांठ में बध जाना चाहिये। और तब हम अपने चारों तरफ देखेंगे; और इस समस्त मनुष्य के वास योग्य पृथ्वी पर अत्यन्त शांत, रमणीक और प्रसन्नता के निवासस्थान किसी ऐसे सुंदर कोने को ढूढ़ेंगे जिसके स्वर्ग बनने में केवल एक आनन्दित पति-पत्नी-युगल की ही कमी हो। हम वहाँ जाकर बस जावेंगे। वहाँ हमारा प्रत्येक दिवस··मिना! क्या मामला है? (मिना बेचैनी से मुंह फेर कर अपने भावों को छिपाने का प्रयत्न करती हैं)

मिना—(पुनः स्वस्थ होकर) टय्लहाइम ! यह तुम्हारी क्रूरता है कि ऐसे समय मेरे सामने ऐसे आनन्दमय जीवन का चित्र खींच रहे हो जब कि मैं उसको छोड़ने के लिये विवश हूँ । मेरी हानि—

टय्लहाइम—तुम्हारी हानि ?—अपनी हानि का क्यों ज़िक्र करती हो ? तुम्हारी जो कुछ भी हानि हो सकती थी वह तुमसे भिन्न है । तुम अब भी संसार में सब प्राणियों में मधुरतम, प्रियतम, रमणीकतम और श्रेष्ठ हो । तुम में समस्त अच्छाई, उदारता, निर्दोषता और शान्ति वर्त्तमान है । कभी २ कुछ चिड़चिड़ी, किसी समय कुछ ज़िद्दी—यह और भी अच्छा है ! और भी अच्छा है । नहीं तो मिना एक देवता होती—जिसकी मैं कुछ भय के साथ पूजा भले ही करता, परन्तु उससे प्यार नहीं कर सकता था । (चूमने की इच्छा से उसका हाथ पकड़ता है)—

मिना—(अपना हाथ पीछे खींच कर)—महाशय ! ऐसा नहीं !— यह यकायक परिवर्तन कैसा ?—क्या यह चिकनी चुपड़ी बातें करने वाले उद्भ्रान्त प्रेमी वही रूखे टय्लहाइम हैं ?—क्या इस आवेश का कारण भाग्य का फिरना नहीं है ? वे अपने इस प्रेमावेश के समय मुझ में उस शान्त बुद्धि को रहने देंगे जिससे मैं दोनों के लिए विचार का काम ले सकूँ ।—जब वे स्वयं सोच सकते थे तब मैंने उन्हें यह कहते हुए सुना था—'वह प्रेम निकम्मा है जिसे अपने प्रेम-पात्र को घृणास्पद बनाने में संकोच नहीं होता ।"

ठीक ; लेकिन मैं स्वयं भी उन्हीं की तरह शुद्ध और

ऊंचे प्रेम का आदर्श रखती हूँ। क्या मै पसन्द कर सकती हूँ कि अब जब कि उनको प्रतिष्ठा बुला रही है और एक बड़े महाराज उनको अपनी सेवा में ख़ुशी से रखना चाहते हैं मैं उनको अपने साथ प्रेमातुर स्वप्न देखने दूँ ? कि एक प्रसिद्ध योद्धा अपने को मिटाकर एक प्रेमोन्मत्त ग्रामीण की भाँति बन जावे ?—नहीं, मेजर महाशय ! आप अपने ऊँचे भाग्य के मार्ग का अवलम्बन करिये।

मेजर ट्यलहाइम—अच्छा, मिना ! अगर तुमको यह कार्य-व्यग्र संसार ही अधिक पसन्द है तो हम इसमें ही रहेंगे। यह कार्य-व्यग्र संसार कितना नीच, कितना असार है ! अभी तुम इसका केवल भड़कीला स्वरूप जानती हो। लेकिन यह निश्चय है मिना ! कि तुम····· अच्छा, तब तक के लिये ऐसा ही सही ! तुम्हारे आकर्षक गुणों की प्रशंसा करने वालों की कमी नहीं होगी ; और साथ ही मेरे आनन्दमय जीवन को देख कर बहुतेरे ईर्ष्या करेंगे।

मिना—नहीं ट्यलहाइम ! मेरा यह अभिप्राय नहीं है। मैं आपको, आपके साथ स्वयं जाने को न चाहती हुई, इस व्यग्र संसार में प्रतिष्ठा के मार्ग पर वापिस भेजती हूँ। वहाँ ट्यलहाइम के लिये एक सर्वथा दोष-रहित भार्य्या की आवश्यकता होगी।—अपने देश से भागी हुई एक कुमारिका जो उनके ऊपर आ पड़ी हो—

मेजर ट्यलहाइम—(चौक कर और चारो तरफ़ बीभत्सता से देखते

हुए) ऐसा कहने की कौन हिम्मत कर सकता है ?—आः मिना ! मुझे यह सोचते हुए भी अपने से डर लगता है कि तुम्हारे सिवाय कोई और ऐसा कह सकता है। ऐसा कहने वाले के प्रति मेरे क्रोध की कोई सीमा नहीं रहेगी।

मिना—ठीक है ! मुझे भी इसी का डर है। तुम मेरे विषय में निन्दात्मक एक शब्द भी नहीं सहना चाहते और तो भी तुमको प्रतिदिन मेरे विषय में अत्यन्त कटु शब्दों को सुनना पड़ेगा। संक्षेप में—इसलिए टथ्यलहाइम ! जो मैंने पक्का निश्चय कर लिया है और जिससे संसार में कोई भी मुझे नहीं डिगा सकता उसे सुन लीजिये—

मेजर टथ्यलहाइम—तुम्हारे और कहने से पूर्व मिना ! मैं तुम से प्रार्थना करता हूँ कि तुम ज़रा यह समझ लो कि तुम अब मेरे लिये जीवन या मृत्यु का फ़ैसला सुना रही हो।

मिना—अधिक विचार करने के बिना ही—जैसे यह निश्चय है कि मैंने वह अँगूठी, जिसके द्वारा पहले तुमने अपने सच्चे प्रेम का वचन दिया था, आपको वापिस दे दी है ; जैसे यह निश्चय है कि आपने उसी अँगूठी को वापिस ले लिया है, ऐसे ही यह निश्चय है कि दुर्भाग्य-ग्रस्त मिना कभी भी भाग्यशाली टथ्यलहाइम की पत्नी नहीं होगी।

मेजर टथ्यलहाइम—और इसके साथ ही तुम मेरी मृत्यु का निर्णय सुना रही हो ?

मिना—समानता ही प्रेम की पक्की गाँठ है। भाग्ययुक्त मिना,

भाग्यशाली टॅथलहाइम के लिये जीना चाहती थी। दुर्भाग्यग्रस्त भी मिना किसी प्रकार यह देख सकती थी कि उसके द्वारा उसके दुर्भाग्यग्रस्त प्रेमी का दुर्भाग्य बढ़ जावेगा या घट जावेगा। ···· इस पत्र के आने से पूर्व, जिसने दुबारा हमारी समानता को दूर कर दिया है, यह आपने स्वयं देख लिया होगा कि मेरा निषेध केवल दिखावटी था।

मेजर ट्यलहाइम—क्या यह ठीक है ? मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ कि तुमने मेरी मृत्यु का फैसला अभी तक नहीं—सुनाया है।—तुम केवल दुर्भाग्यग्रस्त ट्यलहाइम से विवाह करना चाहती हो ? तुम उसे स्वीकार कर सकती हो।

(शान्ति से ; मैं अब समझता हूँ कि मेरे लिये इस देरी से होने वाले न्याय को स्वीकार करना अनुचित होगा ; और यह ज़्यादा अच्छा होगा कि मैं उसके फिर पाने की चाह न करूँ जिससे मुझे ऐसे निर्लज्ज सन्देह के कारण वंचित किया गया है।—हाँ, मैं यही समझूँगा कि मैंने इस पत्र को पाया ही नहीं। मेरी तरफ़ से उसका केवल यही उत्तर है। (पत्र को फाड़ना चाहता है)

मिना—(उसका हाथ रोक कर) टॅथलहाइम ! तुम क्या करने लगे हो ?

मेजर ट्यलहाइम—तुम्हारा पाणिग्रहण।

मिना—ठहरो !

मेजर ट्यलहाइम—कुमारी जी ! यह अवश्य अभी फड़ता है यदि

तुम शीघ्रता से अपने कथन को वापिस नहीं लेती हो।—तब हम देखेंगे कि तुम्हें मेरे विषय में दूसरा कौन सा आक्षेप है ?

मिना—क्या ? इस लहजे में ?—क्या मैं इस प्रकार अपनी दृष्टि में ही घृणास्पद बनूँगी ? क्या मुझे बनना चाहिये ? नहीं, कभी नहीं ! वह एक निकम्मी स्त्री है जिसको इस बात पर लज्जा नहीं आती कि उसका सारा सुख एक मनुष्य की निर्विवेक भावुकता पर निर्भर है।

मेजर ट्यलहाइम—मिथ्या ! बिलकुल मिथ्या !

मिना—क्या आप ऐसी हिम्मत कर सकते हैं कि अपने ही शब्दों में जब कि वे मेरे मुख से कहे जावें दोष निकालें ?

मेजर ट्यलहाइम—वैतण्डिकता ! क्या उन सब बातों को जो एक मनुष्य को शोभा नहीं देतीं दुहरा कर स्त्रियों को अपना अपमान करना चाहिए ? अथवा क्या मनुष्य उन सब बातों को कर सकता है जो स्त्री के योग्य हैं ? प्रकृति ने दोनों में से किसको दूसरे का सहारा नियत किया है ?

मिना—ट्यलहाइम ! आप चिन्ता न करें !..................आप के सहारे के सम्मान के स्वीकार न करने पर मैं बिलकुल अरक्षित नहीं हो जाऊँगी। जितने सहारे की मुझे अत्यन्त आवश्यकता है उतना सहारा मुझे तब भी मिल जायगा। मैंने यहाँ अपने आने का समाचार स्वदेशीय राजप्रतिनिधि को दे दिया है। मुझे उनसे आज मिलना है। आशा है वे मेरी सहायता

करेंगे। समय बीता जा रहा है। मेजर महाशय ! मुझे आज्ञा दीजिये—

मेजर ट्यलहाइम—कुमारी जी ! मैं आपके साथ चलूँगा।

मिना—नहीं मेजर महाशय ! मुझे इकेला जाने दीजिये।

मेजर ट्यलहाइम—मेरे बिना तुम्हारा जाना ऐसा ही है जैसे मानो तुम्हारी छाया तुमको छोड़ दे। चलो कुमारी जी ! जहाँ चाहो, जिसके पास चाहो, सर्वत्र, परिचित और अपरिचित सब से मैं तुम्हारे सामने दुहराऊँगा—कि कौन सी गाँठ तुमको मुझसे बाँधे हुए है—और किस निर्दय वहम के कारण तुम उसे तोड़ना चाहती हो—

दृश्य दसवाँ

जुष्ट, शेष पूर्ववत्

जुष्ट—(उद्वेग के साथ) मेजर महाशय ! मेजर महाशय !

मेजर ट्यलहाइम—क्या बात है ?

जुष्ट—जल्दी आइये ! जल्दी !

मेजर ट्यलहाइम—क्यों ? यहाँ आओ ! कहो, क्या मामला है ?

जुष्ट—ज़रा सुनिये तो (चुपके से कान में कहता है)

मिना—(पृथक् फ़्रासिस्का से) फ़्रासिस्का ! देखती हो न ?

फ़्रांसिस्का—आः ! क्रूरहृदये ? मेरा यह समय काँटों पर खड़े रहने के समान बीता है।

मेजर ट्यलहाइम—(जुष्ट से) तुम क्या कहते हो ?—यह नहीं हो सकता ।·········तुम ? (मिना की ओर उग्रता से देखते हुए)—ज़ोर से कहो । उनके मुंह पर साफ़ कह दो ।—कुमारिके ! सुनो !

जुष्ट—मैनेजर कहता है कि वह अँगूठी जिसे मैंने उसके पास गिर्वी रक्खा था बार्नह्यल्म की कुमारी जी ने लेली है । उसे देखकर वह कहती हैं कि वह उन्हीं की अँगूठी है और उसे वापिस देना नहीं चाहतीं ।

मेजर ट्यलहाइम—कुमारी जी ! क्या यह ठीक है ? नहीं, यह ठीक नहीं हो सकता ।

मिना—(मुस्कराते हुए) और क्यों नहीं ? यह क्यो नहीं ठीक हो सकता ?

मेजर ट्यलहाइम—(आवेश के साथ) तो यह ठीक है ! सहसा यह क्या नई बात खुल रही है ।··········मैंने अब तुमको जान पाया है—मिथ्याभाषिणी !—विश्वासघातिनी !

मिना—(डर कर) कौन ? कौन विश्वासघातिनी ?

मेजर ट्यलहाइम—तुम, जिनका अब मैं नाम नहीं लेना चाहता !

मिना—ट्यलहाइम !

मेजर ट्यलहाइम—तुम मेरे नाम को भूल जाओ···········तुम यहाँ मेरे साथ सम्बन्ध तोड़ने की नीयत से आई थीं ।—यह साफ़ है ।············आः ! एक आकस्मिक घटना एक विश्वासघातिनी की इस प्रकार सहायता करे ।·······इससे

तुम्हारी अँगूठी तुम्हारे अधिकार में पहुँच गई। और तुम्हारी चालाकी ने मेरी अँगूठी मुझे वापिस कर दी!

मिना—ट्यलहाइम! क्या वहम कर रहे हो! शान्त होकर मेरी बात सुनो।

फ्रांसिस्का—(पृथक्) यह ठीक है!

———

दृश्य ग्यारहवाँ

पाउल वेर्नर (एक अशर्फ़ियों से भरी हुई थैली के साथ), मेजर ट्यलहाइम, मिना, फ़्रांसिस्का, जुष्ट

पाउलवेर्नर—मेजर महाशय! लीजिये मैं यहां आ पहुँचा।

मेजर ट्यलहाइम—(उसकी तरफ़ बिना देखे ही) तुम्हारी किसको ज़रूरत है?

पाउलवेर्नर—लीजिये यह एक हज़ार अशर्फ़ियाँ हैं!

मेजर ट्यलहाइम—मुझे इनकी ज़रूरत नहीं है!

पाउलवेर्नर—कल प्रातःकाल इतनी ही और आपकी सेवा में उपस्थित कर दी जावेंगी।

मेजर ट्यलहाइम—अपनी अशर्फ़ियों को रहने दो!

पाउलवेर्नर—मेजर महाशय! यह आपकी ही अशर्फ़ियाँ हैं।......... मैं समझता हूँ आपने अभी यह भी नहीं देखा है कि आप किससे बोल रहे हैं!

मेजर ट्यलहइम—मैं कहता हूँ, इनको ले जाओ !

पाउलवेर्नर—क्या मामला है ? मैं पाउलवेर्नर हूँ !

मेजर ट्यलहाइम—सब नेकी मक्कारी है; सारी दयालुता धोखा है।

पाउलवेर्नर—क्या यह मेरे प्रति है ?

मेजर ट्यलहाइम—जैसा तुम समझो !

पाउलवेर्नर—मैंने तो केवल आपकी आज्ञा का पालन किया है।

मेजर ट्यलहाइम—उसी तरह अब आज्ञा को मानो और अपना रास्ता लो।

पाउलवेर्नर—मेजर महाशय ! (चिढ़कर) मैं भी एक मनुष्य हूँ—

ट्यलहाइम—तब तो और भी अच्छा है !

पाउल वेर्नर—जिसको क्रोध आ सकता है।

ट्यलहाइम—ठीक ! जितने गुण मनुष्य में हैं उनमें क्रोध सबसे श्रेष्ठ है।

पाउल वेर्नर—मेजर महाशय ! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ—

ट्यलहाइम—मैं तुमसे कितनी बार कहूँ ? मुझे तुम्हारे रुपये की आवश्यकता नहीं है।

पाउल वेर्नर—(क्रोध में आकर) तो इसको जो चाहे सो ले ! (थैली को ज़मीन पर पटक कर एक तरफ़ को हट जाता है)

मिना—(फ्रांसिस्का से) आः ! फ्रांसिस्का ! मुझे तुम्हारा कहना मानना चाहिये था। मैंने उपहास को हद से अधिक बढ़ा दिया।—तो भी, यदि ये मेरी बात सुनें—(उनके पास जाकर)

फ्रांसिस्का—(मिना को उत्तर बिना दिये ही पाउल वेर्नर के पास जाती है) सार्जेन्ट महाशय !

पाउल वेर्न१—(चिढ़े हुए) चली जाओ !

फ्रांसिस्का—आः ! ये सब कैसे लोग हैं ?

मिना—टथलहाइम ! टथलहाइम ! (टथलहाइम क्रोध से अपनी अंगुलियों को काटते हुए, बिना सुने ही अपना मुँह फेर लेते हैं) नहीं, यह तो बहुत ही बुरी बात है......ज़रा सुनो तो !...आपको धोखा हो गया है ! .....उलटा समझ लिया है ।—टथलहाइम ! क्या आप अपनी मिना की बात नहीं सुनेंगे ? क्या आप ऐसा सन्देह कर सकते हैं ?.... मै आप से सम्बन्ध को तोड़ना चाहूँ ? मैं यहाँ इस उद्देश्य से आई थी ? ......टथलहाइम !

दृश्य बारहवाँ

दो भृत्य (दो भिन्न २ तरफ़ से कमरे में दौड़कर आते हुए), शेष पूर्ववत्

पहिला भृत्य—देवी जी ! श्रीमान् काउन्ट !

दूसरा भृत्य—वे आरहे हैं , देवी जी !

फ्रांसिस्का—(खिड़की के पास दौड़कर) वे ही हैं ! वे ही हैं !

मिना—क्या आगये ? टथलहाइम ! अब जल्दी कीजिये !

टथलहाइम—(सहसा शान्त होकर) कौन , कौन आरहे हैं ? देवी जी ! तुम्हारे चाचा जी ? यह क्रूर चाचा !......उनको आने

दो।..... ज़रा उन्हें आने दो! .....डरो मत!... वे दृष्टि-मात्र से भी तुमको हानि नहीं पहुँचा सकते! उनको मुझसे बातचीत करनी होगी......यद्यपि तुम मेरी ओर से इस सब के योग्य नहीं हो—

मिना—टय्लहाइम! मुझको जल्दी अपनी भुजाओं में ले लो—और यह सब भूल जाओ—

टयलहाइम—आः! अगर मुझे सिर्फ़ यह मालूम हो जाता कि तुमको पश्चात्ताप है—

मिना—नहीं, मैं आप के सम्पूर्ण हृदय से परिचय प्राप्त कर लेने के लिए कभी पश्चात्ताप नहीं कर सकती!.....अहो! तुम कैसे उच्च पुरुष हो!—अपनी मिना को, आनन्द में मग्न मिना को अपनी भुजाओं मे लेकर प्यार करो। जिसको तुम्हारे प्राप्त हो जाने से बढ़ कर और क्या आनन्द हो सकता है। (प्रेमालिङ्गन करके) और अब उनसे मिलने के लिए!

मेजर टय्लहाइम—किनसे मिलने के लिए?

मिना—तुम्हारे अपरिचित मित्रों में जो श्रेष्ठ हैं।

मेजर टय्लहाइम—क्या?

मिना—काउंट महाशय, जो मेरे चाचा, मेरे पिता और तुम्हारे पिता.... मेरा घर से भागना, उनकी अप्रसन्नता, मेरी सम्पत्ति का नाश, अयि मिथ्याविश्वासी वीरवर! क्या आप नहीं समझते कि यह सब बनावटी बातें थीं?

मेजर टय्लहाइम—बनावटी? लेकिन अंगूठी? अंगूठी की बात?

मिना—वह अगूठो जिसे मैने आपको वापिस किया था कहाँ है ?

मेजर टथलहाइम—तुम उसे वापिस लोगी ? अहा ! बड़ा आनन्द है ।
•••···यह लो मिना ! (उसे अपनी जेब से निकालते हुए)

मिना—ज़रा पहले इसकी तरफ़ देखिये ! आः ! वे कैसे लोग हैं जो देख सकते हुए भी देखना नहीं चाहते।·····यह कौन सी अंगूठी है ? जो आप ने मुझे दी थी ? या वह जिसे मैंने आप को दिया था ? क्या यह वही नहीं है जिसको मैं मैनेजर के हाथों में छोड़ना नहीं चाहती थी ?

मेजर टथलहाइम—हे भगवन् ! मैं क्या देख रहा हूँ ! मैं क्या सुन रहा हूँ !

मिना—क्या मैं इसको अब फिर लूँगी ? क्या लूँगी ? लाओ इसे मुझे दे दो ! (उसे उससे ले लेती है और तब स्वयं उसकी अँगुली में पहना देती है) लो अब सब बात ठीक है न ?

मेजर टथलहाइम—मैं कहाँ हूँ ? (उसका हाथ चूम कर) ऐ नटखट देवता ! मुझे इस तरह दिक़ करना !

मिना—यह इस बात को दिखाने के लिये—मेरे प्यारे पति यदि तुम मेरे साथ कोई चाल चलोगे तो मैं भी चाल चले बिना नहीं रह सकती ·····क्या तुम समझते हो कि तुमने भी मुझे दिक़ नहीं किया है ?

मेजर टथलहाइम—ऐ नाट्यकर्म में कुशल स्त्रियो !—लेकिन, मुझे तुम्हारे विषय में यह समझ लेना चाहिए था ।

फ्रांसिस्का—सचमुच मेरे विषय में ऐसा नहीं है । मैं नाट्य ठीक

नहीं कर सकती। मैं उस समय काँप रही थी और मुझे अपना मुख अपने हाथ से बन्द करना पड़ा था।

मिना—मुझे भी कोई सरल काम नहीं करना पड़ा था।—अच्छा अब आओ।—

मेजर ट्यलहाइम—मैं अभी तक स्वस्थ नहीं हुआ हूँ। - प्रसन्न होने के साथ २ अपने को कितना चिन्तित अनुभव कर रहा हूँ। मेरी दशा उस मनुष्य जैसी है जो सहसा एक भयानक स्वप्न देखते २ जग पड़ता है।

मिना—देर हो रही है..........उनका आना सुनाई दे रहा है।

दृश्य तेरहवाँ

काउन्ट ब्रुखसाल (अनेक नौकरों और मैनेजर के साथ), शेष पूर्ववत्

काउन्ट ब्रुखसाल—(प्रवेश करते ही) मैं आशा करता हूँ कि वह यहाँ सकुशल आ गई थी ?

मिना—(उनसे मिलने के लिये दौड़ती हुई) आः ! मेरे पिता जो !

काउन्ट ब्रुखसाल—प्यारी मिना ! लो मैं आ गया (उसको आलिङ्गन करके) लेकिन यह क्या ! (ट्यलहाइम को देखकर)। इन चौबीस घन्टो में ही मित्र लोग और साथी भी !

मिना —बताइये तो यह कौन हैं ?

काउन्ट ब्रुखसाल—तुम्हारे स्थलहाइम तो नहीं ?

मिना—उनके सिवा और कौन ? स्थलहाइम आइये ! (उनका परिचय कराते हुए) ।

काउन्ट ब्रुखसाल—महाशय ! हम दोनो अब तक कभी नहीं मिले हैं, लेकिन दृष्टि पड़ते ही मुझे प्रतीत हुआ कि मैं आपको जानता हूँ। मैंने सोचा कि यह मेजर स्थलहाइम होंगे।—महाशय ! लाइये अपना हाथ। मैं आपको अत्यन्त सम्मान की दृष्टि से देखता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे मित्र बनें।—मेरी भतीजी, मेरी पुत्री आप से प्रेम करती है।

मिना—यह आप जानते हैं, पिता जी !—और क्या मेरा प्रेम विवेक-रहित था ?

काउन्ट ब्रुखसाल—नहीं, मिना ! तुम्हारा प्रेम विवेक-रहित नहीं था; लेकिन तुम्हारे प्रेमी तो कुछ बोलते ही नहीं।

मेजर स्थलहाइम—(काउन्ट महाशय से आलिङ्गन करते हुए) मेरे पिता जी ! मुझे स्वस्थ हो जाने दीजिये।—

काउन्ट ब्रुखसाल—यह ठीक है, मेरे पुत्र ! मैं देखता हूँ कि यद्यपि तुम्हारे होंठ नहीं चल रहे हैं तुम्हारा हृदय बोल रहा है। प्रायशः मैं उन लोगों को कम पसन्द करता हूँ जो इस (स्थलहाइम की वर्दी को दिखाते हुए) वर्दी में होते हैं। लेकिन स्थलहाइम ! तुम एक प्रतिष्ठित मनुष्य हो; और मनुष्य को चाहिये कि एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से प्रेम करे चाहे वह किसी पोशाक में हो।

मिना—आः ! अगर आप केवल सब बातें जानते !

काउन्ट ब्रुखसाल—सब बातें मुझे सुनाने में क्या रुकावट है ?—मैनेजर महाशय ! मेरे कमरे कौन से हैं ?

मैनेजर—क्या आप इस तरफ़ चलने का कष्ट करेंगे ?

काउन्ट ब्रुख़साल—आओ, मिना ! मेजर महाशय ! आइये । (मैनेजर और नौकरों के साथ चला जाता है)

मिना—ट्यलहाइम ! आओ ।

ट्यलहाइम—मिना ! मैं तुम्हारे पीछे एक क्षण भर में आता हूँ । ज़रा इस आदमी से एक बात (पाउल वेर्नर की तरफ़ फिर कर)—

मिना—और मैं समझती हूँ यह एक अच्छी बात होनी चाहिये । फ़्रांसिस्का ! कहो, क्या ऐसा नहीं है ?

[काउन्ट के पीछे जाती है]

दृश्य चौदहवाँ

मेजर ट्यलहाइम, पाउलवेर्नर, जुष्ट, फ़्रांसिस्का ।

मेजर ट्यलहाइम—(पाउल वेर्नर के द्वारा फेंकी हुई थैली को दिखाते हुए) लो जुष्ट ! इस थैली को उठा लो और इसे घर ले जाओ । जाओ ! (जुष्ट उसे उठाकर चला जाता है)

पाउलवेर्नर—(जो अब तक एक कोने में उदास और शून्य-हृदय सा होकर खड़ा था ट्यलहाइम के पिछले शब्दों को सुनता है) अच्छा, अब ?

मेजर ट्यलहाइम—(उसके पास जाकर स्नेह के लहजे में) वेर्नर! दूसरी दो हज़ार अशर्फ़ियाँ मुझे कब मिलेंगी?

पाउलवेर्नर—(तत्काल अपनी अच्छी जुङ्ग में) कल, मेजर महाशय! कल।

मेजर ट्यलहाइम—मुझे तुम्हारे ऋणी होने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन मैं तुम्हारा ख़ज़ान्ची हो जाऊँगा। तुम जैसे उदार-हृदय लोगों का कोई न कोई संरक्षक होना अवश्य चाहिये। तुम एक प्रकार से फ़ज़ूल-ख़र्च हो।—वेर्नर! मैंने भी तुम्हें चिढ़ा दिया था।

पाउलवेर्नर—अपनी जान की सौगन्ध, ऐसा ही है। परन्तु मुझे ऐसा उजड्ड नहीं बनना चाहिये था। अब मुझे इसका ख़्याल आ रहा है। मैं सैकड़ों कोड़ों के खाने योग्य हूँ। अगर आप चाहें तो अभी मेरे मारें। लेकिन, प्यारे मेजर महाशय! सिर्फ़ मुझसे नाराज़ न हूजिये।

मेजर ट्यलहाइम—नाराज़! (उसका हाथ पकड़ कर ख़ूब हिलाकर) जो कुछ मैं तुमसे नहीं कह सकता उसे मेरी आँखों को देखकर समझ लो।--अहा! ऐसा मनुष्य मुझे दिखाओ जिसकी स्त्री तुम्हारी स्त्री से अधिक अच्छी हो। और जो तुमसे अधिक मेरा विश्वसनीय मित्र हो। कहो फ़्रांसिस्का! क्या यह ठीक नहीं है?

[बाहर जाता है]

दृश्य पन्द्रहवाँ

पाउलवेर्नर, फ़ांसिस्का ।

फ़्रांसिस्का—(पृथक्)—हाँ ठीक तो है। वह बहुत अच्छा मनुष्य है।—ऐसा मनुष्य फिर कभी मेरे हाथ नहीं लगेगा।—ऐसा ज़रूर होना चाहिये (लज्जा के साथ पाउल वेर्नर के पास जाकर) सार्जन्ट महाशय !

पाउलवेर्नर—(अपनी आँखें पोंछकर) अच्छा !

फ़्रांसिस्का—सार्जन्ट महाशय !—

पाउलवेर्नर—रमणी ! क्या चाहती हो ?

फ़्रांसिस्का—सार्जन्ट महाशय ! ज़रा मेरी तरफ़ तो देखिये।

पाउलवेर्नर—अभी मैं नहीं देख सकता। न जाने मेरी आँख में क्या गिर पड़ा है।

फ़्रांसिस्का—अच्छा अब मेरी तरफ़ देखो।

पाउलवेर्नर—रमणी ! समझता हूँ कि मैं पहले ही तुम्हारी तरफ़ काफ़ी देख चुका हूँ।—लो अब मैं तुम्हें देख सकता हूँ। क्या बात है ?

फ़्रांसिस्का—सार्जन्ट महाशय !…………क्या आपको एक श्रीमती सार्जन्ट की आवश्यकता नहीं है ?

पाउलवेर्नर—कुमारिके ! क्या तुम्हारी सचमुच यही इच्छा है ?

फ़्रांसिस्का—हाँ सचमुच।

पाउलवेनर—और क्या तुम मेरे साथ फ़ारिस तक जाने को तय्यार होओगी ?

फ़्रांसिस्का—जहां भी तुम चाहोगे ।

पाउलवेनर—सचमुच ! अहह, मेजर महाशय ! मैं डींग नहीं मारता । वास्तव में मैंने भी ऐसी ही अच्छी स्त्री और एक विश्वसनीय मित्र पा लिया है जैसा आपने । रमणी ! लाओ अपना हाथ मुझे दो ! पक्का !—दस बरस के अन्दर या तो तुम एक जनरल की पत्नी कहलाओगी या एक विधवा !